सन्निवेश–पांच

[राजस्थान के सृजन-शील शिक्षकों का विविध रचना संग्रह]

सम्पादक

गुर इकबालसिंह : प्रेम सक्सेना

शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए

कल्पना प्रकाशन

आमुख

राष्ट्र-निर्माण कार्य में शिक्षक की भूमिका सर्वोच्च है। समाज शिक्षक के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने की दृष्टि से प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस का आयोजन करता है।

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान की ओर से इस पुण्य दिवस पर शिक्षक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जाता है जिसमे पुरस्कृत शिक्षकों को राज्य सरकार की ओर से पुरस्कार वितरित किये जाते हैं, इसके अलावा विभाग राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की साहित्यिक कृतियों के संकलन भी प्रकाशित करता है। शिक्षक दिवस पर १९६७ से १९७१ तक हिन्दी, उर्दू व राजस्थानी की कुल मिलाकर १८ पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। प्रसन्नता की बात है कि भारत भर मे अनूठी इस योजना का सर्वत्र स्वागत हुआ है तथा साहित्यिक अभिरुचि के शिक्षकों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली है।

राजस्थानी भाषा साहित्य नित्य प्रति प्रगति पर है। प्रान्त का साहित्यकार व सृजनशील शिक्षक भी राजस्थानी भाषा मे लेखन की ओर प्रवृत्त हुआ है। राजस्थानी भाषा मे साहित्य सृजन के क्षेत्र में शिक्षकों के योगदान से परिचित कराने की दृष्टि से विभाग ने उचित समझा कि राजस्थानी का इस बार एक अलग संकलन प्रकाशित किया जाये।

आशा है कि शिक्षक दिवस पर प्रकाशित इन पुस्तकों-प्रस्तुति-४ (कविता संग्रह), प्रस्थिति-४ (कहानी संग्रह), सन्निवेश-५ (विविध रचना संग्रह) तथा माला (राजस्थानी भाषा में विविध रचना संग्रह) का सर्वत्र स्वागत होगा।

राजस्थान के प्रकाशकों ने इस योजना में प्रारम्भ से ही पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया है और इन प्रकाशनों को सुन्दर बनाने मे परिश्रम किया है। इसी प्रकार शिक्षक लेखकों ने भी अपनी रचाएं भेज कर विभाग को सहयोग प्रदान किया है। इसके लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद के अधिकारी हैं।

एल० एन० गुप्ता
निदेशक
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

शिक्षक दिवस, १९७२

प्राक्कथन

अनुभव ही वह अनिवार्य सामग्री है जो सर्जक को उसकी रचना के लिये आधार उपलब्ध करती है। और कोई भी रचनाकार शायद ऐसा चयन-संकट नहीं अनुभव करता है कि अमुक अनुभव को वह किस विधा-माध्यम के सहारे अभिव्यक्त करे। वस्तु स्वयं ढूंढ लेती है कि वह कौन सा सांचा ले। सांचे की फेर-बदल विषय को कमजोर करती है और ऐसी स्थिति में रचना पिटती ही है।

सन्निवेश बहुरंगी है। यानी इसमें जहां निबन्ध हैं, वहां व्यंग्य भी है, एकांकी भी और अन्य भावात्मक गद्य अभिव्यक्तियां भी। इसलिये रचनाओं का परिदृश्य विस्तृत है। सब अपनी-अपनी तरह हैं, अपनी-अपनी जगह अपना-अपना उद्देश्य लिये हुए। इनका भारीपन, या हल्का-फुलकापन, किस सभ्यता को लिये हुए है यह पाठक समझें, पहिचानें। अगर जीवन की कोई सीमा नहीं है तो फिर उसके विषय को बांधने वाले हम आप कौन? हम तो रचनाओं के आस्वादनकर्ता ही तो हो सकते हैं?
ज्यादा से ज्यादा आलोचक, समालोचक?

गुरु हरबालसिंह · प्रेम सक्सेना

अनुक्रमणिका

●●●●●

विविध

निबन्ध

आधुनिक समाज एवं जनतंत्र

◆

चौथमल लोढ़ा

द्रुत गति से हो रही ज्ञान-वृद्धि और टैकनोलोजी तथा विज्ञान के व्यापक प्रसारण से समाज में परिवर्तन की गति निरन्तर बढ़ रही है। स्थिति यहां तक है कि दो दशकों के लोगों के विचारों में और शहरों तथा गावों के दैनिक कार्यक्रमों में भी बड़ा अन्तर पाया जाने लगा है। परिवर्तन के विभिन्न कारकों से प्रभावित आधुनिक समाज में मुख्यतः तीन प्रकार की मान्यताएं काम कर रही हैं:—

१. प्रगतिवाद
२. बुद्धिवाद

प्रगतिवाद—प्रगति करने की विचारधारा आज के समाज की आधुनिक विशेषता है। व्यक्ति इस विचारधारा से प्रेरित होकर स्वयं और समाज के विकास में प्रयत्नशील है। प्रगति के प्रयत्नों में एक दूसरे के सहयोग को अब स्वीकार किया जाने लगा है। प्रगति की चाह ही से व्यक्ति और समाज की आकांक्षाएं बढ़ रही हैं। पहले जो व्यक्ति परिवर्तन से भय खाता था, आज वह प्रगति के लिये हर परिवर्तन के लिये निर्भीक होकर तत्पर है। एक दूसरे से सहयोग और परिवर्तन की राह में व्यक्ति स्वयं और समाज की कुशलता तथा अकुशलता का भेद भी जानने लगा है। अकुशलता से रोष करता हुआ कुशलता की ओर आज प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि बड़े ही वेग से आगे बढ़े।

क्योंकि प्रगति, प्रगति नहीं है जब तक कि वह मापी नहीं जा सके और माप भी समय की सीमा में। याने थोड़े समय में वांछित प्राप्ति को ही प्रगति का प्रतीक माना जाने लगा है। आधुनिक समाज में व्यक्ति समय के प्रति बड़ा फिक्रमंद है। Indeed the wrist watch is the greatest symbol of modern society. शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी तक भी समय में बताई जाने लगी है, उदाहरणतः वी. टी. स्टेशन से चर्चगेट की दूरी पूछने पर १० मिनट की दूरी का ही उत्तर मिलेगा।

प्रगतिवाद ने ही समाचारों व रेडियो के प्रति दिलचस्पी पैदा की है। आज का व्यक्ति दुनिया के हर कोने के बारे में ज्ञान रखने को सजग है, उसकी चेष्टा रहती है कि वह भी उन्हीं के मुकाबले आगे बढ़ता रहे, जीवन स्तर के ऊंचा उठाने में कोई कसर नहीं रह जाय। मनुष्य का हौसला दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। राज्य-लॉटरियों ने भी भाग्य की परख में लाखों की आकांक्षा पैदा की है और प्रगतिवाद की सीमा को बढ़ाया है।

इस प्रकार हमारे देश में भी प्रगति का घटनाचक्र नित नवीन रूप लेकर गतिमान है, किन्तु भौतिक प्रगति के इस घेरे में मनुष्य आध्यात्म,

संस्कृति और चरित्र को महत्त्व नहीं दे पा रहा। नैतिकता उसके संस्कारों से हटती जा रही है। जो देश प्रगति की चरम सीमा पर है और जहां का वायु मण्डल नैतिकता के अभाव मे झुलस रहा है उसे हम अच्छी तरह देख रहे हैं। भौतिक प्रगति के उन वातावरणों में जहा अविवाहित स्त्रियों की आहें बराबर उफन रही हों या जहां के लोग विलासिता के विष से जीवन मृत हो रहे हों या प्रचुरता के उपभोग याने खपत के अभाव मे जहा जीवन-मरण का प्रश्न आत्म-हत्या तक को ललकार पर चढाये हो, हम स्पष्ट देख रहे हैं कि यह सामाजिक मानसिक शुष्कता ही नैतिक संस्कारो की रिक्तता का स्थान ले रही है।

भौतिक प्रगति के मूल से ही हम भी भूल मे है। पाश्चात्य भौतिक समाज के नवीन कष्टदायक मूल्य हमारे यहाँ भी संवर्न पनपने लगे हैं। हमें भी नैतिकता का अभाव खलने लगा है तो भारतीय समाज के लिये यह अवसर है कि अपने निज के नैतिक बल को सजोकर प्रगति पर प्रगति की नई छलाग लगाये। यह एक बीड़ा है, युग सुधारकों के लिए जीवन की यह एक ललकार है।

बुद्धिवाद—कारणों और तर्क को महत्त्व देने वाले समाज को यद्यपि आध्यात्म और सामाजिक चरित्र का स्पष्ट नक्शा नहीं होता, वे केवल व्यावहारिक कुशलता पर अधिक महत्त्व देते हैं और पुराने शाश्वत सत्यों को झुठलाने का कभी-कभी तो झूठा दम भी भरते हैं।

No truth is absolute के नारे में भौगोलिक-सामाजिक स्थानीय परिस्थितियों की अपनी परम्पराए भी लुप्त हो रही हैं।

यद्यपि अंधविश्वासों (Superstitions) और आधारभूत भयों (Base fears) से बुद्धिवाद छुटकारा दिलाने का जबरदस्त दावा करता है और जो तथ्य तर्क के आधार पर खरे नहीं उतरते वे त्याज्य सिद्ध माने जाते हैं। धर्म निरपेक्षता का विचार उसी मूल से जुड़ा हुआ है। धर्मनिरपेक्षता से मनुष्य मे कट्टरता कम हुई है, दूसरों को सुनने की शक्ति बढ़ी है। इससे अब मनुष्य (Parental status) नहीं, मनुष्य की कृति (status of own) ही समाज मे उसका स्थान निर्धारण करती है।

विचार किया जाय तो, इतना होते हुए भी मनुष्य में शान्ति के विचार, स्वतन्त्रता की भावना, स्वस्थ जीवन यापन की रूप-रेखायें हमारी के लिए सुरक्षित रहते हुए और सब को अपनी परिस्थिति में स्वतन्त्र रूप-से भी शान्ति का विकास, नहीं के बराबर हुआ है। भौतिक प्रगति का प्रभाव तो समाज में यहाँ तक व्याप्त है कि व्यक्ति के इशारे मात्र से मोटरें, नलें, रेलें और मशीनें इस जैसे दूर तक चलाये और नियंत्रित किये जा सकते हैं परन्तु वियतनाम के युद्ध, चीन का रोष और पाकिस्तान की कड़ाई ज्यों कि त्यों है। भारतीय समाज में भी भाषा को लेकर, राज्य विशेष की मान्यता को लेकर या उत्तर दक्षिण आदि की अनेकों समस्याएं हैं जो भारत पाकिस्तान से थोड़ा लेने समय भले ही एकरूपता में गुथ गई हों, गुत्थी में वे मौजूद अवश्य हैं। यह सब बातें बुद्धि को ही परम से अमानवीय होते हुए भी विद्यमान क्यों है ?

ऐसा लगता है कि अंधविश्वास और बुद्धिवाद में सामञ्जस्य नहीं है। अंधविश्वासों और पुरानी मान्यताओं से आगे बढ़ने से मानवीय पक्ष सांस्कृतिक पक्ष से (Cultural Lag) इतना पिछड़ता जा रहा है कि भौतिक प्रगति और मानवीय सम्बन्धों के बीच की खाई बराबर चौड़ी हो रही है। एक प्रकार से भौतिक प्रगति तो चांद तक, मानव को आधार बना चुकी है और बड़ी तेज रफ्तार से गतिमान है, मानव सम्बन्धों की चाल बैलगाड़ी की रफ्तार से आगे नहीं बढ़ रही।

भौतिक विज्ञान के लोग जब बहुत आगे हैं, बहुत तेज (गतिमान) हैं और अपने ध्येय में बहुत स्पष्ट भी हैं, सामाजिक विज्ञान का दायित्व अहम है। भौतिक शक्तियों के विकास और प्रभावी सामाजिक व्यवहारों के बीच की खाई भयंकर रूप से चौड़ी होना सारे देश की संस्कृति पर करारी चोट है और मानवीय पक्ष निरन्तर कमजोर होता जा रहा है। स्पेन्सर के शब्दों में मानव के लिये अमानवता से अधिक लज्जाजनक वस्तु और कुछ नहीं है। यदि मानव के हर काम उसके वातावरण से प्रभावित होते हैं तो यह जरूरी है कि उससे वातावरण को भी मानवीय बनाया जाय।

कल्याणकारी व्यवस्थाएं—प्रगति की ओर अग्रसर मनुष्य ने

ही कल्याणकारी व्यवस्थाओ की चाह पैदा की है। असल मे यह प्रगति की चाह ही है जो बुद्धिवादिता के सहारे कल्याणकारी राज्य व्यवस्थाओं के लिए जनतंत्रीय शासन प्रणाली की विचारधारा को पनपाव दे रही है।

जनतंत्र व्यवस्था से ही लोक कल्याण की अधिक आशा की जा सकती है। पिछले पचास वर्षों में कोई तीस देश स्वतंत्र हुए हैं और जनतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया है यह इसी बात का प्रतीक है कि यह 'जन-युग' है, जिसमे जनता ही है, जिसके लिये सरकार का अस्तित्व है। जनता राज मे केवल कल्याणकारी कार्यक्रम ही नही अपनाए जाते बल्कि जनता को बोलने के अवसर भी दिये जाते हैं, उन्हे सुना भी जाता है और सरकार अपने कार्यक्रमो मे तदनुसार परिवर्त्तन भी करती है। इसका अर्थ है जनतंत्रीय सरकार और लोककल्याणकारी राज्यों मे जनता की राय का महत्त्व ज्यादा है।

प्रजा की राय उसका मत (वोट) है। यही मत उसकी शक्ति है। भारत में भी इसी शक्ति से राज्यों और केन्द्र की सरकारों का निर्माण होता है। प्रजातन्त्रीय सरकारों मे नागरिक समाचार पत्रों द्वारा भी अपनी राय जाहिर करते हैं और ठोस विचारों से सरकार के कार्यक्रमो पर प्रभाव भी डालते हैं।

जनतन्त्र मे स्वतन्त्रता "जो जी मे आवे करो" का लाइसेन्स नही है, यह स्वछन्दता नही है। हमेशा अपने कामों को और अपनी आवाज को दूसरों के हित रक्षा या अहित बचाव की दृष्टि से देखना पड़ता है किन्तु यह साम्यवादी देशो की तरह "सरकार की विचार धारा" जिसको वे अपने जीवन का अंग बन जाना कहते हैं—के विपरीत बोलने या प्रचार करने की रोक भी नही है। स्वतन्त्रता, समानता, न्याय और बन्धुत्व के ऊंचे आदर्शों में भारतीय संविधान जिस प्रकार के लोकतन्त्रात्मक-गणराज्य और समाजवादी शासन की व्यवस्था का ध्येय लिए है, वह अलौकिक है। निर्वाचक मंडल व्यवस्थापन, कार्यकारिणी, प्रशासन और न्याय मे निर्वाचक मण्डल की सत्ता सबसे ऊंची है। राज्य की सम्प्रभुसत्ता इसी मे निहित समझी जानी चाहिए।

संस्कृत समाज विवेकशील समाज, नागरिकों का वह समूह है जो सुसंस्कृत विचार से अपनी मत शक्ति का उपयोग करते हैं, अपनी बुद्धि का चयन कर सकते हैं और अपनी वांछित प्रगति की राह को पूरा करने वाली सरकार का निर्माण करते हैं। ऐसा विवेकशील समाज समस्त ही प्रबुद्ध (enlightened) नागरिकों का समूह होना चाहिये। प्रबुद्धता एक ऐसे विचार की विवेक शक्ति है जो विभिन्न परिस्थितियों में किसी के गुणाव-गुणों को ठीक से देखने की क्षमता पैदा करती है. यह उत्तम विवेक शक्ति दुनिया के प्रजातान्त्रिक देशों में जिनके नागरिक प्राप्त किये हुए हैं और जिनके नागरिक इस ओर ध्यान नहीं प्रतिमान रखते हैं एक विचारणीय बिन्दु है. भारत में तो यह एक समस्या है।

१९७१ की जन गणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत ३० है और १९७२ के चुनावों में भाग लेने वालों की गणना भी इससे अधिक विश्वास नहीं रही। कहना न होगा कि जब प्रगति और नाग-रिकता का सही उपयोग प्रबुद्ध नागरिक ही कर सकते हैं, यह स्थिति बहुत थोड़ी (Unwanted) है। विस्तार और अविवेक-जनित सरकार की नीति, प्रशासन की युक्ता और कानून बदला तथा न्याय, स्वतन्त्रता और सुरक्षा के विभिन्न पंथों पर सही दृष्टि नहीं रख सकती।

दूसरी तरफ प्राचीन राज सत्ताओं के साथ का नेतृत्व भी अब नये प्रकार के नेतृत्व में बदल गया है। जमींदारी, धार्मिक ठिकेदारी तथा जाति नेतृत्व के बजाय अब बड़े नेता राजनीतिज्ञ होते हैं, प्रशासक होते हैं या प्रबंधक होते हैं, या फिर विषयज्ञ (Subject expert) ही नेतृत्व का भार सम्भाले होते हैं। यहां पर भी कहा जाय तो राजनीतिज्ञ और प्रबंधक लोग दक्ष व्यक्तियों की राय पर अधिक निर्भर करते हैं किन्तु दक्ष लोग भी राजनीतिज्ञ लोगों के पराक्रम में उलझ जाते हैं और उनके स्वार्थों में ही अपने स्वाधिकार, आत्म सम्मान और विवेकीय अधिकार को, प्रति-स्थापना करते हैं। यद्यपि इसका प्रभाव जन मानस पर पड़ता है परन्तु इसका ज्ञान भी बहुतों को नहीं हो पाता। साक्षरता या शिक्षा की विवेक-

शक्ति यहाँ हमें समझ और प्रपंच के नये कटघरे में विचार को बाध्य करती है। जो कि भारतीय नवीन प्रजातान्त्रिक समाज की संरचना का केन्द्र है।

एक साक्षात्कार में गाँवों के मतदाताओं का एक बड़ा समूह ऐसा मिला जो अपने परिचित लोगों को खुश करने के लिए मत दे रहा था तो कुछ उनको धार्मिक मत के एवज में मत दे रहे थे। मतदान प्रणाली की दृष्टि से कुछ एक स्थितियां आश्चर्य जनक भी थी। कुछ ने अपनी चौकड़ी अपने उम्मीदवार के सामने के निशान के एक ऊपर निशान पर लगाई। उनका कहना था कि अपने उम्मीदवार के निशान के ऊपर (One above) ही तो चौकड़ी लगाना है। कुछ दूसरे मतदाता मतपत्र के पिछले पृष्ठ पर चौकड़ी इसलिए लगाते थे क्योंकि उन्हें चौकड़ी 'ऊपर' लगाना था भीतर (मतपत्र के मुद्रेफोल्ड होने पर निशान भीतर होते हैं) नहीं। दोहरी चौकड़ी और गलत चौकड़ियां तो गिनती के समय स्पष्ट देखी जाती रही है। निर्वाचन केन्द्रों पर बहुत उम्मीदवारों की दशा में अपने उम्मीदवार का चिन्ह (नाम तो पढ़ नहीं सकते) पहचानने में भी बड़ी कठिनाई होती देखी गई क्योंकि गाव के लोगों को गाय-बछड़ा या दीपक को छोटे चित्रों द्वारा पहचानने की अभी भी कम अनुभूति है। खासकर तब जबकि मतपत्र में बहुत से चित्र होते हैं और हाथ में लेते समय मतपत्र उलटा पकड़ में आ गया होता है या देख-भाल में उलटा हो गया होता है क्योंकि मतपत्रों को उल्टे-सुल्टे का ज्ञान संभव नहीं।

ज्ञान की इस कमी की भारी प्रवंचना में प्रबुद्धता एक बहुत दूर की कल्पना है। किन्तु "वांछित ज्ञान के अभाव में जब जनतंत्र" एक लेखक के शब्दों में "अबोध बालकों को खेलने के लिये रेजर की पत्तियां देना" है तो साक्षरता की सापेक्षता से भरे समझ को महत्त्व देकर के भी इसे उचित नहीं कहा जा सकता। पिछले कई विधान सभा, लोक सभा और पंचायतों के चुनावों से भी राजनैतिक प्रशिक्षण इतना नहीं हो पाया है कि निरपेक्ष होकर मतदाता अपनी शक्ति और अपनी चाह को ठीक से तौल कर उसका सही उपयोग कर सके। निर्वाचक मण्डल की यह स्थिति सरकार को एक

प्रकार से वरदान सिद्ध होती है ऐसी स्थिति में सरकार अपनी नीतियों का अपने ही विचारों की अनुकूलता में विरोध का डर किये बिना ही कार्यान्वित कर सकती है। यही नहीं, इस बुद्धि हीन शक्ति के सहारे सरकारी तंत्र में लगे कई पद धारी भयंकर भ्रष्टाचार से आरोपित होते पाये जाते हैं और नियंत्रण या न्याय के चंगुल में फंस जाने पर ये ही भ्रष्ट पद-धारी लोक नेताओं का सहारा लेते हैं जो या तो बदनाम होकर भी उन्हें बचा लेते हैं या फिर पद-धारियों के समक्ष अपनी साख खो देते हैं। पहली स्थिति (बुद्धिहीन शक्ति के प्रति) दूसरी स्थिति (विवेक और नियंत्रण शक्ति के प्रति) पर सदा विजय पाती रही है और कभी-कभी तो भयंकर से भयकर अपराध भी राजनयिकों के घेरे में सुप्त हो जाते हैं या लुप्त हो जाते हैं।

प्रगति का एक दूसरा चित्र भी है। किसी भी छोटे से छोटे शहर में अब नफीस प्रकार का वाहन उपलब्ध है। "सेल्फ स्टार्ट" से स्त्रियों को भी कार चलाने की सुविधा है। सैर-सपाटे से फलों की टोकरी लादे महिला जब लौटती है तो कई फटे पांव, चिथड़े धारी, निरक्षर और यहां तक कि मध्यम श्रेणी के लोग भी उस कार की ओर ईर्ष्या से डबडबी आंखें लगा देते हैं, क्यों ? क्या यह सब प्रगतिवाद और बुद्धिवाद में सामञ्जस्य की कमी और जनतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था की पूरी प्रतिस्थापना के अभाव के कारण नहीं है ?

◆ ◆

लोक तंत्र और रक्षा व्यवस्था

◆

गोवर्धन लाल पुरोहित

महाभारत के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध में भीष्म पितामह इच्छा मृत्यु के लिए बाणों की वीर शैया पर शोभायमान थे। भगवान कृष्ण की प्रेरणा से पाण्डवो मे जेष्ठ युधिष्ठर प्रतिदिन भीष्म पितामह की सेवा मे राजनीति एवं राष्ट्रधर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए जाने लगे। एक दिन युधिष्टर ने पितामह को पूछा, कृपया बताइए कि कौन-सा राष्ट्र शत्रुओ द्वारा अजेय होता है। इस पर पितामह भीष्म ने युधिष्टर से कहा-तात। जिस राष्ट्र के विभि अवयं सहयोगी धागों की तरह एक रस्सी से एक प्राण हों,

उस राष्ट्र को कोई नहीं जीत सकता। एकता का पराक्रम अजय होता है। भीष्म आगे कहते हैं :

तात् जिस राष्ट्र के किसान खूब अन्न पैदा करते रहें, सभी लोग खूब परिश्रम कर धन अर्जित करते हों, ऐसे पुरुषार्थियों के राष्ट्र को कोई नहीं जीत सकता। क्योंकि स्वावलंबन का पराक्रम अजेय होता है। तात् जिस राष्ट्र की प्रजा राष्ट्र रक्षा के लिए सर्वस्व होम देने के लिए कटिबद्ध रहती हो, उस राष्ट्र को कोई पराजित नहीं कर सकता, क्योंकि बलिदान का पराक्रम अजेय होता है।

हमारी दिसम्बर सन् १९७१ की विजय को इस संदर्भ में देखे तो भीष्म पितामह का कथन पूर्ण रूपेण खरा उतरता है। जब भी हम ऊपर बनाए हुए आदर्शों से हटे, हमें पराधीनता और पराजय के दिन देखने पड़े। पिछले दो, हजार वर्ष के इतिहास का सिंहावलोकन करने पर एक आश्चर्यजनक तथ्य सामने आता है कि रक्षा-व्यवस्था से जनता की उदासीनता हमारी पराजय का कारण बनी। तत्कालीन शासक एवं जनता राष्ट्र रक्षा के लिए उदासीन थे। शासक अर्थात राजा सेना अवश्य रखते थे, परंतु वे इस सेना का उपयोग आपसी लड़ाई-झगड़े एवं निहित स्वार्थों के लिए करते थे। उनके रक्षा संगठन अस्त्र-शस्त्र भी पुराने पड़ चुके थे। बाहरी शत्रु का सामना करने मे परस्पर एकता का अभाव था। भारतीय शासकों ने कभी यह विचार नहीं किया कि शत्रु का सामना कैसे किया जाय। वे अपने ही हाल में मस्त थे। आस-पास के देशों में क्या हो रहा है? इसकी इन्हें तनिक भी सुध न थी।

जब शासक ही इतने उदासीन थे तब जनता का तो कहना ही क्या था? संभवतया जनता इस प्राणघातक रोग से ग्रस्त थी कि—कोउ नृप होउ हमें का हानी। उसका लक्ष्य एक मात्र जीविकोपार्जन और राजा की सही या गलत आज्ञा का आंख मीच कर पालन करना। बात यहीं तक समाप्त न होती, देश पर जब बाहर से आक्रमण होते तब भी हम यह न समझ पाए कि यह लड़ाई किस प्रकार की है। इसमें पराजित होने पर हमारी जीवन पद्धति ही खतरे में पड़ सकती है। अतः हम इस भयावह

स्थिति में भी एक न हो सके। इसका परिणाम यह निकला कि हम पिट गए और बराबर पिटते रहे।

अपनी इस उदासीनता और पराजय पर हमने एक निराले ढंग का मुलम्मा चढ़ाया, वह शान्तिप्रियता था, आश्चर्य तो यह है कि जो देश स्वयं की रक्षा ही न कर सके, वह दूसरे पर क्या आक्रमण करेगा। शान्ति-प्रियता के मिथ्या दंभ के कारण हम अस्त्र-शस्त्र, सेना संगठन और युद्ध शास्त्र में होने वाले निरंतर परिवर्तन से उदासीन रहे। यहाँ तक कि हम बार-बार की पराजय से भी कोई सबक न सीख सके।

इधर जनता का चिन्तन भी निराला ही था। वह सोचती थी कि—युद्ध तो राजाओं का खेल है। पंडित लोग कर्म काण्ड-द्वैत, अद्वैत, स्वर्ग-नरक के सोच विचार में इतने उलझे रहे कि प्रत्यक्ष जगत में क्या हो रहा है और उसमें हमें क्या करना चाहिए इसके बारे में समाज का सही नेतृत्व करने की क्षमता इनमें थी। क्षत्रिय वीर अवश्य था, वह लड़ता भी रहता था, परन्तु उसे यह बोध नहीं था कि वह किससे लड़ रहा है और क्यों लड़ रहा है। परिणाम यह निकला कि इस वर्ग की सारी शक्ति आपसी झगड़ों में ही लगी रही। जब बाहरी आक्रमण हुआ तब सफलता से उसका सामना न हो सका। इस तरह समाज का तीसरा वर्ग वैश्य भी धनोपार्जन में जुटा रहा। ब्राह्मणों को भोजन कराना, मंदिर बनाना, उसकी सामाजिक जागरूकता की पराकाष्ठा थी। सारे इतिहास में हमें केवल भामाशाह का ही उदाहरण मिलता है, जिन्होंने संकट के समय अपनी सारी संपत्ति राष्ट्र के अर्पित कर दी।

चौथे वर्ग शूद्रों का तो कहना ही क्या? उसको केवल यही अधि-कार था कि बस तीनों वर्णों की सेवा करते रहें। इस सेवा के उपलक्ष में उसे मिलती थी उपेक्षा और घृणा। अज्ञान, दारिद्र और अपमान के गर्त में वह इतना डूबा हुआ था कि समाज और राष्ट्र के बारे में कुछ सोचना उसके लिए असम्भव था। फिर ऐसी समाज व्यवस्था से उसे क्या आत्मी-यता हो सकती है जिसमें उन्हें केवल अपमान ही मिलता हो?

हमारी पराजय का मूलकरण था, शासक तथा जनता की रक्षा

रक्षा के प्रति घोर उदासीनता। सिकंदर और पोरस की लड़ाई के समय से ही स्पष्ट हो गया था कि घोड़ों पर सवार सैनिकों का मुकाबला हाथियों द्वारा नहीं हो सकता था। सेना में रथियों का स्थान हाथी ही भारतीय लोगों के मतानुसार व्यूह का केन्द्र बना रहा। भारतीय सेना और ही थी, लेकिन घुड़सवार सेना का इन्हें विचार गया और सेना में प्रवेश न हुई यह वर्णन हमें कितनी बार इतिहास में मिलता है। राजपूत में उत्तर हमले घोड़ों के उपयोग का महत्व समझा, फिर भी घोड़ों की नस्ल सुधार को घोर नस्ल भी ध्यान न दिया गया। इसी तरह तोप बारूद के आविष्कार के कारण युद्ध विद्या में अनेक परिवर्तन हुए। परन्तु इसे हमने स्वीकार न किया। बाबर के भारत विजय के बाद भी राजपूत लोगों का मुकाबला तलवारों से करते रहे और मरते रहे। राजपूतों का कोई सरदार जानता था, परन्तु तोपों का महत्व उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सत्रहवीं तथा अठारहवीं सदी में तोपों का प्रयोग अवश्य होने लगा। परन्तु बन्दूक, तोप या गोला-बारूद इनके सम्बन्ध में कोई सुधार या अनुसंधान हमारे देश में कभी नहीं हुआ। तोपें और बन्दूकें विदेशों से ही आती रहीं।

हथियारों के संबंध में हमारी लापरवाही जितनी असम्य है, उससे कहीं अधिक असाम्य रक्षात्मक के बारे में सोचने और ठोस कदम उठाने की हमारी अक्षमता थी। महमूद गजनवी ने भारत पर सत्रह आक्रमण किए और हर बार वह अपार संपत्ति लूट कर ले गया। कितने आश्चर्य की बात है कि भारतीय नरेशों ने गजनी के पहले तथा दूसरे आक्रमण के बाद भी यह नहीं सोचा कि जिस रास्ते से आक्रमण होता है, उस पर रक्षा पंक्ति का निर्माण किया जाय। उत्तर-पश्चिम सीमा के दर्रों की रक्षा के लिए कोई ठोस कदम उठाया हो, यह इतिहास सिद्ध नहीं होता। इसी तरह केवल सौ घुड़सवारों के साथ सारा उत्तरी भारत पार कर अला-उद्दीन खिलजी ने देवगिरि के यादव राजाओं को परास्त किया। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि दक्षिण के नरेश बिल्कुल बेखबर थे। उनका गुप्तचर विभाग निकम्मा था और रक्षा व्यवस्था कमजोर थी। यदि ऐसा न होता तो अलाउद्दीन उनके राज्यों में इतना भीतर कैसे घुस

सकता था ?

हमारी पराजय के प्रधान कारणों में एक यह था, शासन और जनता के बीच एक गहरी खाई थी। जनता यह समझती थी कि लड़ाई राजाओं का खेल है। किसी पक्ष के साथ उसका अपना हित भी बंधा हुआ है यह उसने कभी नहीं समझा। सोमनाथ के मंदिर के भंजक महमूद गजनवी की सेना में भारी संख्या में हिन्दू थे। उन्होंने अपने मंदिर के ध्वंस, अपने देश की लूट और अपने भाई-बहिनों के कत्लेआम एवं गुलामी में योगदान किया, लूट के हिस्से में हाथ बटाया।

अंग्रेजी सेना के लिए भारतीय सिपाहियों की सहायता के बिना भारत विजय असंभव थी। अमीचन्द तथा मीरजाफर के विश्वासघात के कारण हम इतिहास बदलने वाला प्लासी का युद्ध हार गए। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं, जिनसे स्पष्ट है कि हमारी पराजय के बीज हमने बोए। जान बूझ कर इतने लोगों ने देश द्रोह किया हो, ऐसा भी नहीं माना जा सकता। भारतीयों ने विदेशी आक्रमण कारी का साथ इसलिए दिया कि अपने और पराए में भेद करने की उनकी क्षमता नष्ट हो चुकी थी। आपसी कलह और ईर्ष्या के कारण जयचन्द ने जो गलती की, वही आगे चलकर अनेक भारतीयों से होती रही। जनता विदेशी सेना में भरती होती थी, वेतन की आशा तथा लूट की लालसा से। भारतीय सैनिक अवश्य ही बहादुरी से लड़ता था, लेकिन यह नहीं सोचता था कि वह किस के लिए और क्यों लड़ रहा है ?

जन जागृति तथा शासन और शासित के अलगाव से शक्तिशाली भारतीय नरेश भी हारते गए। सारे इतिहास में केवल एक दो उदाहरण ही ऐसे मिलते हैं, जब युद्ध के पहले जनमानस में अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार की भावना भरी गई। छत्रपति शिवाजी ने स्वराज्य की स्थापना का प्रयास किया पहली बार इसके समर्थ गुरु रामदास एवं संत तुकाराम ने महाराष्ट्र में यह भावना उत्पन्न की कि कट्टर धर्मांध मुसलमान शासकों के विरुद्ध युद्ध धर्म रक्षा के लिए संघर्ष है, केवल शिवाजी के राज्य स्थापना के लिए नहीं। इसी बौद्धिक जागृति के आधार पर शिवाजी स्वराज्य की

स्थापना कर सके। इसके पहले मराठा सरदार बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुन्डा के मुसलमान शासकों के यहा नौकरी करने में ही अपने आपको धन्य मानते थे। मराठों की इस हीन भावना का उन्मूलन करने मे संतों द्वारा की गई बौद्धिक चेतना का महत्वपूर्ण स्थान रहा। इतिहास में यह प्रथम उदाहरण है जब जनता ने पहली बार यह समझा कि वे किसी राजा का राज बनाए रखने के लिए नही, अपनी स्वतंत्रता, जीवन पद्धति एवं राष्ट्र रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। छत्रपति शिवाजी के स्वर्गवास के बाद भी मराठे पच्चीस वर्ष तक मुगलो से आमरण संघर्ष करते रहे। अंत में उन्हीं की विजय हुई। मुगलों को स्वराज्य प्रदेश से भागना पड़ा। इन सबके पीछे मराठों की जनजागृति ही थी।

इसी तरह का दूसरा प्रयास सिक्ख गुरुओं द्वारा किया गया। गुरू गोविन्दसिंह ने सिक्खो में जागृति पैदा की और खालसा पंथ को नया रूप दिया। इसी का प्रतिफल था सिक्ख आत्म विश्वास के साथ मुगलों से सामना कर सके। महाराष्ट्र तथा पंजाब मे स्वतन्त्रता संग्राम की सफलता का प्रधान कारण यह था कि जनता यह समझती थी कि वह किसी दूसरे के लिए नही वरन अपने लिए लड रही है।

मराठा साम्राज्य विस्तार के बाद परिस्थितिएं बदल गईं। मराठा जाति मे स्वत्व तथा अपनेपन की भावना धीरे-धीरे लुप्त होने लगी। मराठा सरदारों के आपसी कलह ने उग्र रूप धारण कर लिया, उन्होंने उत्तरी भारत के जो नवीन प्रदेश जीते, वहा की जनता से मराठा शासको का कोई प्रेम नही था। यही कारण था कि मराठे जब भारत में अहमदशाह अब्दाली के विरूद्ध लड़ने के लिए आए, तो वहां के किसी राजा ने उनका साथ नही दिया उसका यही कारण था कि मराठा राज्य की स्थापना की बुनियाद जो बौद्धिक क्रांति थी, वह महाराष्ट्र तक ही सीमित रह गई थी। अन्य देशों के लोग मराठा राज्य को अपना राज्य नहीं मानते थे। उनके भारत रक्षा के प्रयासों का उत्तरी भारत की जनता से कोई तादात्म्य संबंध नही था। इसी कारण वे पानीपत का तीसरा युद्ध हार गया। शासन और जनता के बीच अपनेपन की भावना जब तक जीवित थी तभी तक मराठा

ग्रौर सिक्ख राज्य कायम रह सके। उनके समाप्त होते ही वे वैसे कुम्हला गए, जैसे जमीन से बाहर निकला हुआ छोटा पौधा।

इतिहास की यह सीख आज की दुनियां, विशेषकर हमारे लिए बडा महत्व रखती है। आज की लड़ाइयां दो फौजो के बीच की लड़ाइयां नहीं होती। राष्ट्र रक्षा का कार्य केवल सशस्त्र सेनाग्रो का ही नही वरन् हर नागरिक का है। राष्ट्र पर आक्रमण के समय प्रत्यक्ष रूप से सशस्त्र सेनाए शत्रु से मिलती हैं। परन्तु इन सशस्त्र सेनाग्रों के पीछे सारे राष्ट्र की औद्योगिक, ग्रार्थिक एवं नागरिक शक्ति का होना आवश्यक है। तानाशाही या साम्यवादी देशो मे राजकीय आज्ञा से यह कार्य पूरा हो जाता है, क्योकि वहा पर राज्याज्ञा की अवज्ञा का दण्ड प्राणदण्ड होता है। परन्तु किसी लोकतन्त्र मे यह संभव नही है। वहा पर जनता प्राण-प्रण से तभी सहयोग करेगी, जब उसे यह ग्राभास हो कि लड़ाई क्यो हो रही है ग्रौर किस के लिए हो रही है ? अत. सफल रक्षा प्रयास के लिए लोगो का मनोबल ऊचा होना बहुत ग्रावश्यक है। मनोबल ग्रौर उत्साह मे अन्तर है। जब सेना जीतती है, तो जनता में उत्साह ऊंचा रहता है परन्तु कभी परिस्थितिवश देश की सेना को पीछे हटना पड़े तो जनता घबराए नही ग्रौर पूरे ग्रात्म-विश्वास के साथ सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहे। इसे मनोबल कहते हैं। इसके लिए ग्रावश्यक है कि जनतान्त्रिक सरकार जनता को सभी जानकारी देती रहे तथा पूरी तरह से उसे विश्वास मे बनाए रखे।

इतना ही नही सरकार क्या कर रही है, उसका ऐसा करने का क्या उद्देश्य है ? रक्षा के लिए नवीन उपकरणो के लिए जनता तथा सरकार को क्या क्या कदम उठाने हैं ? इस प्रकार की बौद्धिक जाग्रति, विजय के लिए ग्रावश्यक है। हम १८५७ ई० का प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम इसीलिए तो हार गए थे कि जनता स्पष्ट नही थी कि यह सग्राम किस के लिए ग्रौर क्यों लड़ा जा रहा है। ग्रतः राष्ट्र रक्षा के लिए जन-जन का सहयोग ग्रावश्यक है। विगत द्वितीय महायुद्ध में इंग्लैण्ड तथा रूस की विजय यह

कारण यह था कि हमारे पास आधुनिकतम शस्त्र नहीं थे।

इसके बाद तो हम जल्दी से चेते और राष्ट्र रक्षा के कार्य में तत्परता से जुट गए। इसी का परिणाम था कि १९६५ ई० में पाक आक्रमण को हमने विफल कर दिया और शानदार विजय प्राप्त की। इतना होने पर भी हमने पाकिस्तान को अनेक सुविधाएं दीं। उसको मानवीय ढंग से रहने के लिए विवश न कर सके। फिर भी यह मानना पड़ेगा सरकार तथा जनता बराबर जागरूक होती गई। मिथ्या आदर्शवाद से पिंड छुड़ाकर वास्तविकता को समझने लगे। इसी का प्रतिफल था कि हमने दिसम्बर १९७१ के भारत पाक युद्ध मे विश्व शक्तियो को आश्चर्य मे डालने वाली गौरवमय विजय प्राप्त की।

इस विजय के पीछे हमारी रक्षा सेनाओं का अद्‌भुत शौर्य तथा सर्वांगीण उन्नति थी। इसके साथ ही हमारी राष्ट्रीय एकता की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है। जनता और सरकार का तादात्मक सम्बन्ध सजीव हो उठा। हम सब एक रस हो गए। जनता ने अनुभव किया कि यह युद्ध किसी व्यक्ति विशेष या दल विशेष के लिए नहीं वरन अपने जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए है। यही कारण था कि अमीर से लेकर रक तक ने अपना अद्‌भुत सहयोग दिया। परिणाम सामने हैं, हमने न केवल अपनी रक्षा की वरन् स्वतन्त्र धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्र बगला देश का निर्माण कर हमने मानवीय मूल्यो की छाप विश्व इतिहास के पृष्ठो पर छोड़ी।

भावी सावधानी—केवल विजय पा लेने से ही यह नहीं समझ लेना चाहिये कि हमारा काम पूरा हो गया है। अभी चीन और पाकिस्तान हमारे मानवीय मूल्यों को मिट्टी मे मिलाने के लिए तुले हुए हैं। अतः सरकार तथा जनता को सतत् जागरूक रहना है। एक बात का विशेष रूप से ध्यान रखना है कि सरकार का बराबर यह कार्य होना चाहिए कि किसी भी युद्ध मे विजय किसी दल विशेष या व्यक्ति विशेष के लिए नहीं वरन् सम्पूर्ण देश की एकता तथा जीवन पद्धति को बनाए रखने के लिए है।

अधुनातन हिन्दी-काव्य के अग्नि स्तोत

◆

श्रीनन्दन चतुर्वेदी

•

हिन्दी के कवि ने अपने कर्म का हर युग मे निर्वाह किया है। सिद्ध, सरहपा और चन्द वरदाई से आज तक उसकी लेखनी जागरूक रही। आज का हिन्दी कवि परिवेश के प्रति कितना सचेत है इसका प्रमाण विगत भारत-पाक-युद्ध से पूर्व बंगला देश की धरती पर हुए तत्कालीन अत्याचार के प्रति प्रकट की गई भवानीप्रसाद मिश्र की प्रतिक्रिया मे देखा जा सकता है।

यहां 'इन्दिरा गांधी है', गांधी नहीं
इसलिए पूछता हूं कि
कि क्या दिक्कत है भाइयों
भाग में बनाये हुए इस नाम को
जो बंगाल में चल रहा है।[1] — भवानीप्रसाद मिश्र

युद्ध पूर्व से युद्ध की समाप्ति और शेख मुजीबुर्रहमान की मुक्ति तक के बीच के समय ने हिन्दी कविता को अविस्मरणीय उपहार दिया है। जो आज हिन्दी कविता ने शोक और उल्लास का माध्यम लेकर इस समय कही उसकी समता विश्व-साहित्य में मिलना दुर्लभ है।

इस साहित्य को तीन भागों में बांटा जा सकता है—

१. पाकिस्तान द्वारा बंगाल की जनता पर किये गए अमानुषिक अत्याचार के प्रति आक्रोश।

२. युद्धकाल में वीरों का आह्वान, संस्कृति का स्मरण व सैनिक के पराक्रम एवं बलिदान का गुणगान।

३. युद्धोपरांत की कविताएं, विजयघोष, हर्षोल्लास, मृत सैनिकों के प्रति श्रद्धांजलियां आदि।

संदेह नहीं कि प्रचलनाम और छपास के मोह में कवियों ने 'धासू लेखन' इस समय बहुत किया लेकिन स्थाई मूल्य का प्रभावशाली साहित्य भी कम नहीं लिखा गया।

काका की पंक्तियां—

बंग देश क्या भग देश की बात करो तुम भौजी
हम से छक्के छुड़ा सकेंगे फौजी-वौजी ? —धर्मयुग

युद्ध धासूत्व के अंतर्गत ही गिनी जाएगी जिसमें न काका का स्वाभाविक हास्य है और न ही कोई स्थाई प्रभाव। यही स्थिति जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद की है ('बंगला देश के निर्माण पर'/रविवासरीय साहित्य २ जनवरी १९७२/पृष्ठ-२) पूरी कविता उपदेश मात्र से भरी पड़ी है। और भी अनेक

नामधारियों की हालत यह रही है। कुछ लिखा जाना चाहिए या इसलिए लिख दिया। बाज़ार जमा हुआ था इसलिए छपकर चल गया। लेकिन यह सत्य है कि इस समय के इतिहास और मानचित्र के मोड़ ने हिन्दी कविता को कुल मिला कर सच्चा साहित्य प्रचुर मात्रा मे प्रदान किया है।

बंगाल की जनता पर अत्याचार देखकर कवि की लेखनी आवेश मे फूट पड़ती है—

इस्लाम का अर्थ है अमन
जल रहा पद्मा किनारे का चमन
हरा भरा चमन
टुकुर टुकुर ताकते हैं यगो जमन[2]

—प्रभाकर माचवे

× × ×

एक बस्ती जल रही है
और सारी दुनिया
कुएं की जगत पर पाव पसारे बैठी है।'[3]

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

कवि बाणी का आक्रोश यहाँ दर्शनीय है—

जिस मिट्टी से बने हो तुम
वह मिट्टी भी देखकर तुम को लजा गई
गड़ गई शर्म से,
लेकिन तुम शर्म को भी पी गए।[4]
....
निहत्थे सौम्य बुद्धिजीवियों की हत्या कर
निरीह शिक्षकों—कवियों को मार कर
सोचते हो, बड़ा पराक्रम किया है
इनकी परम्परा को काट दिया है –
लेकिन

इनकी परम्परा सुदीर्घ—खून से खून तक प्रवाहित है
अक्षुण्ण है युग युगान्तर तक।[5]

कवि बड़े आश्वस्त स्वर में आगे कहता है—

तुम कितने अनभिज्ञ मूढ़,
जानते नहीं, कितनी उर्वर है यह मिट्टी—
फिर से अंकुर फूटेंगे यहाँ,
लहलहाएंगी कविताएं
फैलेंगी - महकेगी चतुर्दिक्—
कवि - रवि के सोनार देश में।[6]

— डॉ. अरविन्द जोशी

भारत-पाकिस्तान के बीच का यह युद्धकाल इतना अल्प रहा कि इस समय की अधिकांश कविताएं युद्ध पूरा हो जाने के बाद छप पाईं अतः पत्र-पत्रिकाओं में ये कविताएं बहुत बाद तक दिखती रहीं। इसी संदर्भ की कुछ कविताओं के अंश इस प्रकार हैं—

हमारा कसूर इतना ही है—
तुम चरागाहों में इन्सानों को कैद कर
चाहते थे काटना कसाई की तरह
और हमने मना कर दिया तमाश बीन बनना
... .

और इस बार
जब मेरे देश का कण-कण अग्नि पिण्ड बन गया है
घर-घर ज्वाला मुखी है,
साक्षात मां दुर्गा-महिषासुर मर्दिनी
असुर संहार को मचल गई है।
और तो और—
ये दरख्त—ये नदियां—ये पर्वत—

ये खामोश हम सफर भी
जब तुमको मिटाने की कसम खाते हैं
तो बताम्रो, क्या तुम—
दोजख में भी शरण पाम्रोगे ?[7]

—नरेन्द्र चतुर्वेदी

× × ×

हमारे बल के आगे फीके हैं विज्ञान
जब इन्सानियत दम तोड़ती है
तब मेरी (भारत की) आत्मा
लगती है अपने आप बोलने—
और लगा देती है—
दधीचि की हड्डियों से निर्मित
फौलादी काया को—न्याय के दाव पर।[8]

—प्रेमचन्द कुलीन

× × ×

जब तक सीमा पर हलचल है
तब तक चैन नहीं लेंगे।[9]

—जमुना प्रसाद ठाड़ा 'राही'

× × ×

अब मनुहारों का समय नहीं है भाई
वंशीवट पर रुकने की नहीं घड़ी है
कहदो, नूपुर को मौन राधिका करले,
खाली खप्पर ले चंडी कूद पड़ी है।[10]

—श्रीनन्दन चतुर्वेदी

× × ×

नदी आग की बह रही
कथा खून की कर

—तारादत्त निर्विरोध

× × ×

सत्य-सत्य मैं कह रहा नहीं तनिक भी झूठ
रक्त पान कर याह्या मशा रहा है लूट।[12]

— महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

× × ×

कुरान के पृष्ठों पर थूको नहीं मेरे दोस्त !
उसके एहसास को जीवित रहने दो
इस गौतम और गांधी की धरती पर।[13]

— ब्रजेश चंचल

× × ×

आग उगलते टैंकों और मशीनगनों के गहन धुएं से —
कभी सूर्य धुंधला न हुआ है।[14]

— प्रेम मधुकर

क सैनिक की पत्नी अपने युद्धरत पति के प्रति क्या भाव प्रकट करती है
ौर किस तरह उसे याद करती है इसका एक चित्र प्रस्तुत है—

चांदी धुली रात में या घनी बरसात मे, सिसकियां पीती रहूंगी
पांव पीछे ना पड़ें ओ बांकुरे, यश कथा सुनती रहूंगी।
....
आज मेरो चाह में, युद्ध की उस राह मे हो न प्रिय दुर्बल हिये,
मैं जगूंगी औ रटूंगी, सौ बरस तक बांकुरा मेरा जिये।[15]

— ब्रजमोहन शर्मा पद्म

री रक्त पात को देखकर भी संयुक्त राष्ट्र संघ जिस निष्ठुरता से चुप्पी
धकर बैठा रहा उस पर कवि ने जो प्रतिक्रिया दी वह कितनी मार्मिक
र आक्रोशयुक्त है—

नारी का सम्मान लुट रहा, पशुता की फौजी कारा मे
बलिदानी अभिमान घुट रहा दानवीय रक्तिम धारा मे
क्यों इतिहास कहेगा तुमको, विश्व शांति का सफल समर्थक ?[16]

—नगेन्द्रकुमार सक्सेना

युद्ध पाकिस्तान ने थोपा और फिर जब हारने लगा तब हिन्दी कवि ने उसके प्रति जो अभिव्यक्ति की वह दर्शनीय है—

अब क्यों भागते हो ?
ओ खूनी दरिन्दो,
बुझाते क्यों नहीं अपनी खूनी प्यास ?[17]

—गौरीशंकर शर्मा 'कमलेश'

रोशनआरा का बलिदान बंग-मुक्ति के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा ! हिन्दी कवि ने उसे बड़ी भावभीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है—

यह एक किरण सुकुमारी पी गई अंधेरा सारा,
नूतन संसृति के नभ पर बन गई शुभ ध्रुवतारा।
इस मर्त्यलोक को पावन करती अमृत से भरती
वह अपनी यश काया से पद्मा के तीर विचरती।
मधुमय रहस्य जीवन का, पूछो उस त्यागमयी से,
बलिपथ पर बढ़ने का सुख जानो उस आत्मजयी से।[18]

—डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली

युद्धोपरांत की कविताओं में कवि अपने हर्षोन्माद को रोक नहीं पाता। वह झूम कर गा उठता है—

कुहरा मिटा, निकल आया है, सूरज फिर सोनार में
फलीभूत हो गई साधना, संघर्षों की धार में।[19]

—रामनारायण राठौड़ 'चन्द्र'

× × ×

शत-शत वदन है आज, स्वातंत्र्य समर सिरताज
हे मुक्तिवाहिनी देश, हे बंग धरा परिवेश।[20]

—रामनाथ व्यास 'परिकर'

× × ×

तमसा मलिन मौत सी नीरव रात
हुई विगत की बात—

ओ धरती पुत्रों ! इधर आओ
और तवारीख के इस काले धब्बे पर थूको
यहां मुर्दा पड़ा है—
बीसवीं सदी का एक नाबालिग जयबाज
जुल्फिकार अली भुट्टो।"[23]

—डॉ० शांति भारद्वाज 'राकेश'

× × ×

भुट्टो मियां सच है, क्या दिमाग पाया है तुमने
सदा दूसरों की मौत पर जश्न मनाया है तुमने
... .
लेकिन भुट्टो साहब ! इन्सानियत को कुचलने वाले—
एक दिन – कुचल दिये जाते हैं,
वक्त की तासीर है, दुनिया से मिटा दिये जाते हैं।'[24]

—नन्दकिशोर शर्मा 'स्नेही'

युद्ध-विजय के पश्चात् हिन्दी कवियों ने अपने सैनिकों के शौर्य का मुक्तकंठ से गान किया। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

इतिहास बदलते रहे लोग, तुमने भूगोल बदल डाला,
चौबीस वर्ष का लगा दाग, चौदह दिन में ही धो डाला।[25]

– विश्वेश्वर शर्मा

× × ×

मेरा उज्ज्वल इतिहास उठा कर कोई
देखे—मैंने ही मानचित्र बदले हैं
तुम जियो इसलिए विष घट पीकर मैंने,
दुश्मन के गर्हित मंसूबे कुचले हैं।[26]

— श्रीनन्दन चतुर्वेदी

हिन्दी कवि ने जहां विजयोल्लास को व्यक्त किया वहीं कृतज्ञता के मानवीय भूषण को भी सहेजा है। राष्ट्र रक्षा के लिए बलिदान हुए सैनिकों के प्रति

उसकी श्रद्धांजलियां कितनी मार्मिक बन पड़ी हैं—

> विजय तुम्हारी ही है दोस्त, पराजित तो हम हुए हैं
> कि जब तुम बम छोड़ रहे थे—
> हम बागों में गुलाब तोड़ रहे थे
> ... .
> जब तुम हवा में संघर्षरत थे,
> हम यहां सिनेमा देख रहे थे,
> नवरंग होटल में मिठाइयां खा रहे थे।
> अगर तुम फिल्म के हीरो बने होते
> तो शायद यह शहर तुम्हें अच्छी तरह पहचान लेता
> ....
> कैसी सभ्यता है हमारी ?
> जहां मरणोपरान्त प्रसिद्धि मिलती है
> और धीमे धीमे तुम्हारा त्याग भी याद नहीं रहता।[27]

—कुमार शिव

एक और ऐसी ही भावभीनी श्रद्धांजलि देखिये—

> तुम्हारी राख माथ का चंदन बनेगी वीर
> तुम्हारा अग्नि-पथ है सीधा स्वर्ग को जाता
> और तो सब भार ढोए फिर रहे हैं हम—
> सीमा के सिपाही, तुझी पर नाज हो आता।[28]

—गजेन्द्रसिंह सोलंकी

भारत विजय और बंग मुक्ति के पश्चात् शेख मुजीबुर्रहमान की मुक्ति इस दौर की घटनाओं में सर्वाधिक आह्लादकारी थी। हिन्दी कवि पर इस घटना का भी प्रभाव कम नहीं पड़ा। बसंतागमन की पृष्ठ भूमि में कवि ने इस प्रसंग को कैसा समायोजित किया है—

> शस्य श्यामल बंगला देश में—
> अरुणोदय वाले प्रदेश में,

मानवता के मुक्ति प्रदाता
ओ बसंत तेरा स्वागत है।[29]

— जगदीश विजय 'मयंक'

विजय के उन्माद में देश कहीं बहक न जाए। कवि-कर्म का दायित्व बड़ा होता है। कवि केवल प्रशस्ति उच्चारक चारण मात्र नहीं, मार्ग-दर्शक और सचेतक भी है। हिन्दी का कवि अपने इस दायित्व का भी निर्वाह करता है—

विजय के उन्माद में भूलो मत दोस्त,
युद्ध अभी जारी है।[30]

— दुर्गाशंकर त्रिवेदी

साहित्य तो बहुत लिखा गया जो स्थाई मूल्य का है। माने-जाने विख्यात साहित्यकारों के साथ ही उभरती शानदार कलमें भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अच्छी भूमिका का निर्वाह कर गई। हिन्दी कवि का विजयघोष वस्तुतः अग्नि स्तोत्रों का सृजन है। इस युद्ध के संदर्भ में श्री हरिवल्लभ 'हरि', श्री नारायण वर्मा, ज्ञान भारिल्ल, प्रेम सक्सेना, मंगल सक्सेना, ओंकार पारीक, गजेन्द्र लाल जैन, भगवती लाल व्यास, जगदीश सुदामा, नन्द चतुर्वेदी, इन्द्र बिहारी सक्सेना, मोहन पांडे, यजेन्द्र कौशिक, जगदीश विमल, महेन्द्र नेह, डा० सुरेश, त्रिभुवन चतुर्वेदी, श्रीकांत कुलश्रेष्ठ, अनूपचन्द जैन, प्रेमचन्द विजयवर्गीय, कमलाकर, कैलाश 'शलभ', रमेश वारि, प्रभुलाल वर्मा, प्रेमचन्द जैन, रघुराजसिंह हाड़ा, दुर्गादान, बजरंगलाल विकल, बशीर अहमद मयूख, महेश सेठी, नलिन वल्लभ, रमानाथ अवस्थी, भरत व्यास, शंकर त्रिवेदी, ओमप्रकाश पाण्डेय आदि की कविताएं भी बड़ी ओजस्वी बन पड़ी हैं। हिन्दी साहित्य के लिए यह काव्य निश्चित रूप से एक पुनीत् धरोहर प्रमाणित होगी।

---

१. राष्ट्रवीणा—जून-जुलाई १९७१/पृष्ठ-१८१
२. राष्ट्रवीणा/जून-जुलाई-१९७१/पृष्ठ १८२

३. वही/वही/पृष्ठ-१८२
४-५ मिट्टी सोनार देश की/डा॰ प्रकाश जोशी/राष्ट्र वीणा-जनवरी-७२/
पृष्ठ ४६
६. मिट्टी सोनार देश की/राष्ट्रवीणा-जनवरी-७२/पृष्ठ-४६
७. पड़ोसी बादशाह के मालिक के नाम/रविवासरीय हिन्दुस्तान
२६ दिसम्बर-७१/पृष्ठ-१
८. प्यार के रंग पर/सोशलिस्ट समाचार/२५ जनवरी-७२-पृष्ठ ११
९ डायरी के पृष्ठों से
१०. उठ मधुर गुण यह घड़ी टली जाती है/श्रीनन्दन चतुर्वेदी/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-२६
११. मान की बली/रामदत्त निर्विरोध/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-१६
१२. माया की रानी/महेन्द्र कुलश्रेष्ठ/वही/पृष्ठ२८
१३. मेरे पाकिस्तान के प्रशासक के नाम/वही/पृष्ठ-३४
१४. उसकी दाढ़ें हमें तोड़ देना ही है श्रेयस्कर/वही/पृष्ठ २७
१५. पाव पीछे ना पड़ें/ब्रजमोहन शर्मा 'पद्म'/वही/पृष्ठ ३१
१६. यू. एन. ओ /नगेन्द्र कुमार सक्सेना/वही/पृष्ठ-२१
१७. रक्त की प्यास/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-६
१८. स्वतन्त्रता की ज्योति रोशन आरा/वही/पृष्ठ-३२
१९. जय सोनार बंगला मुमदा/एकात्म साप्ताहिक-गणतन्त्र विशेषांक १९७२ /पृष्ठ-४
२०. जय रंग भूमि जय बंग भूमि/सोशलिस्ट समाचार-२५ जनवरी-७२ पृष्ठ-१६
२१. पूरब में सूरज निकला है/डायरी के पृष्ठों से
२२. पूरब के उगते सूरज को नमस्कार/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/ पृष्ठ-२०
२३. जुल्फिकार अली भुट्टो के नाम/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-५५

२४. हज़ार बरस गड़ने की मुराद/वही/पृष्ठ-६१

२५. मो पहली माम विजय माता/रविवासरीय साहित्य-१६ जनवरी ७२/ पृष्ठ-१

२६ मैं सैनिक हूँ/पाञ्चजन्य-गणतन्त्र दिवस-७२/पृष्ठ-३१

२७ पराजित तो हम हुए है/कुमार शिव/सोशलिस्ट समाचार २१ जनवरी-७२/पृष्ठ-१

२८. वंदना में मो भुका माथा/गजेन्द्रसिंह सोलंकी/एकादश साप्ताहिक-गणतन्त्र अंक-७२/पृष्ठ-१

२६. डायरी के पृष्ठों से

३०. डायरी के पृष्ठों से

◆ ◆

३. वही/वही/पृष्ठ-१८२
४-५. मिट्टी सोनार देश की/डॉ. अरविन्द जोशी/राष्ट्र वीणा-फरवरी-७२/ पृष्ठ ४६
६. मिट्टी सोनार देश की/राष्ट्रवीणा-फरवरी-७२/पृष्ठ-४६
७. पड़ोसी चरागाह के मालिक के नाम/रविवासरीय साहित्य २६ दिसम्बर-१७/पृष्ट-१
८. न्याय के दांव पर/सोशलिस्ट समाचार/२५ जनवरी-७२-पृष्ठ १६
९. डायरी के पृष्ठों से
१०. उठ अमृत पुत्र यह घड़ी टली जाती है/श्रीनन्दन चतुर्वेदी/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-५६
११. आग की नदी/तारादत्त निर्विरोध/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/ पृष्ठ-१६
१२. याह्या की राखी/महेन्द्र कुलश्रेष्ठ/वही/पृष्ठ२८
१३. शेष पाकिस्तान के प्रशासक के नाम/वही/पृष्ठ-३४
१४. उसकी दाढ़ें हमें तोड़ देना ही है श्रेयस्कर/वही/पृष्ठ २७
१५. पाव पीछे ना पड़ें/ब्रजमोहन शर्मा 'पद्म'/वही/पृष्ठ ३१
१६. यू. एन. ओ /नगेन्द्र कुमार सक्सेना/वही/पृष्ठ-२१
१७. रक्त की प्यास/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-६
१८. स्वतन्त्रता की ज्योति रोशन धारा/वही/पृष्ठ-३१
१९. जय सोनार बंगला शुभदा/एकात्म साप्ताहिक-गणतन्त्र विशेषांक-१९७२ /पृष्ठ-४
२०. जय रंग भूमि जय बंग भूमि/सोशलिस्ट समाचार-२५ जनवरी-७२ पृष्ठ-१६
२१. पूरब में सूरज निकला है/डायरी के पृष्ठों से
२२. पूरब के उगते सूरज को नमस्कार/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/ पृष्ठ-२०
२३. जुल्फिकार अली भुट्टो के नाम/हाड़ौती अंचल का विजयघोष/पृष्ठ-५५

२४. हजार बरस लड़ने की मुराद/वही/पृष्ठ-६६

२५. लो पहनो आज विजय माला/रविवासरीय साहित्य-१६ जनवरी ७२/पृष्ठ-१

२६. मैं सैनिक हूं/पाञ्चजन्य-गणतन्त्र दिवस-७२/पृष्ठ-३१

२७. पराजित तो हम हुए हैं/कुमार शिव/सोशलिस्ट समाचार २५ जनवरी-७२/पृष्ठ-१

२८. वंदना में लो भुजा माथा/गजेन्द्रसिंह सोनगरी/एकात्म साप्ताहिक-गणतन्त्र अंक-७२/पृष्ठ-१

२९. डायरी के पृष्ठों से

३०. डायरी के पृष्ठों से

◆ ◆

अनुशासन की समस्या और संस्कृति

◆

देव प्रकाश कौशिक

पिछले कुछ वर्षों से अनुशासन की समस्या ने स्थायी रूप ले लिया है। पहले भी अनुशासन की समस्या थी, पर कभी-कभी ही अनुशासनहीनता की घटनायें देखने-सुनने को मिलती थीं, किन्तु आज तो अनुशासन की समस्या वियतनाम के युद्ध की तरह स्थायी हो गई है। उसका हल भी उतना ही कठिन प्रतीत होता है जितना कि वियतनाम समस्या का।

प्राचीन और आधुनिक काल में अनुशासन का स्वरूप ही बदल गया है। प्राचीन काल में अनुशासन स्वानुशासन था। अब अनुशासन बाह्य अनुशासन है।

प्राचीन तथा आधुनिक काल की शिक्षा में भी भारी अन्तर है। प्राचीन काल की शिक्षा में नैतिकता पर भारी तथा गम्भीर बल दिया जाता था। सादा जीवन, न्यून आवश्यकताओं का प्रयास, सदाचार, सत्याचरण, अहिंसात्मक व्यवहार, ब्रह्मचर्यपालन, वीर्य-रक्षा आदि आदि मौलिक सदाचार शिक्षा के दैनिक जीवन के अंग थे। वे एक मात्र गुरु से श्रवण किये गए उपदेश ही नहीं थे, वरन् जीवन के प्रमुख अंग होते थे, जो उनके प्रत्येक आचरण में दिखाई देते थे। इस प्रकार छात्र का जीवन मापनानुकूल, तपस्वी सदाचरणशील आत्मानुशासित, नैतिक, मानसिक एवं व्यावहारिक गुणों से ओत-प्रोत कठोर जीवन होता था। आत्मनिरीक्षण तथा स्वकीय अनुभूति द्वारा छात्र अपने जीवन में नैतिकता लाते थे। आज की शिक्षा नैतिकता पर केवल सैद्धान्तिक बल ही देती है।

आज संसार का कोई भी देश इस समस्या से मुक्त नहीं है। अमेरिका जो कि संसार का अनेक क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहा है आज अनुशासनहीनता में भी सबसे आगे है। वहां अनुशासनहीनता ने हिंसा तथा भ्रष्टाचार का रूप ले लिया है। अमेरिका में प्रत्येक तीस मिनट में एक हत्या हो जाती है, प्रत्येक ४३ मिनट में एक बलात्कार हो जाता है और प्रत्येक एक घण्टे में एक बैंक में डकैती हो जाती है। इन भयावह आंकड़ों ने अमेरिका को चिन्ताग्रस्त कर दिया है।

इंगलैंड के लंदन 'स्कूल आव इकनामिक्स' की अविवाहित महिला छात्रायें इस बात पर उपद्रव कर देती हैं कि उन्हें गर्भ निरोधक गोलियां निःशुल्क उपलब्ध हों तथा रात भर उन्हें पुरुष छात्रावासों में रहने दिया जाये।

प्राग के छात्र समस्त शिक्षा का शासन अपने हाथ में लेने के लिये उपद्रव कर रहे हैं।

पाकिस्तान में आये दिन शासन को उलटने के लिये उपद्रव हो रहे हैं। भारत में, ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका के पद चिन्हों पर चलने की लालसा है। नक्सलवादियों के लिये हत्या आज एकप्रिय खेल बन चुकी है। भारतीय छात्र आज बसें, डाकघर और

अनुशासन की समस्या

औ... ...ति

पिछले कुछ
स्थायी
सन की समस्या थी
की घटनायें देखने
अनुशासन की
स्थायी हो गई
प्रतीत होना

स्वरूप

वह अपनी उपेक्षा सहन नहीं कर सकता और आज उसकी उपेक्षा हो रही है।

आज का युग खाइयों का युग हो गया। आज सिद्धांत तथा व्यवहार में खाई नई और पुरानी पीढ़ी में खाई है व्यक्ति-व्यक्ति में खाई और यहां तक कि एक व्यक्ति में स्वयं में खाई है। कभी वह एक का पक्ष लेता है और दूसरे क्षण वह दूसरे का पक्ष लेता है। ये खाइयां क्षोभ को जन्म देती हैं और क्षोभ अनुशासनहीनता और तोड़-फोड़ को। हमारी भारतीय संस्कृति में ये खाइयां लगभग नहीं ही थी जिससे अनुशासन की समस्या भी नहीं थी। अध्यापक छात्र का संबंध पिता पुत्र का सा था। दोनों साथ रहते थे। अध्यापक जो शिक्षा छात्र को देता वह उस पर स्वयं अमल करता था। आज अध्यापक छात्रों को सच बोलने की शिक्षा देता है और स्वयं अपनी पत्नी की बीमारी का बहाना बनाकर पिक्चर देखता है चोरी छिपे अपनी आत्मा को गिरवी रख ट्यूशन करता है कुछ पैसे के लोभ में आकर पेपर आउट करता है और अंक बढ़ाता है।

अनुशासन की समस्या के विकराल रूप धारण करने में आज के अदूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने सबसे बड़ा योग दिया है। आज के विद्यालय तथा विश्वविद्यालय शिक्षा व ज्ञान के केन्द्र न होकर राजनीति व दलबन्दी के अखाड़े हो गये हैं। ज्वलंत उदाहरण बनारस हिन्दूविश्वविद्यालय है। ये राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए छात्रों को ईंधन की तरह प्रयोग कर रहे हैं।

आज लगभग प्रत्येक व्यक्ति का झुकाव अनैतिकता की ओर है। इसका आभास मुझे तब हुआ जब बादशाह खान ने कहा, 'मुझे एक भी ईमानदार आदमी नजर नहीं आता है।" हम चुप रह गये क्योंकि वह उनका मत न होकर तथ्य था और है। आज हम अपनी आत्मा की हत्या करके पश्चिम के साथ पागल भौतिकवाद की दौड़ में भाग रहे हैं। सबसे बड़ी विडम्बना है नैतिक शिक्षा जो आज के विद्यालयों को दी जा रही है, केवल उसमें छात्रों को दो सूचियां दे दी जाती हैं। पहली सूची में "यह करना चाहिये" के कार्य तथा दूसरी में "यही नहीं करना चाहिये।" के

कार्यों के नाम रहते हैं। पहली में आता है सदा सच बोलना, अपंगों व गरीबों की सहायता करना, मीठा बोलना आदि। दूसरे में आते हैं झूठ न बोलना, कड़वा न बोलना चाहिए। इन बातों को कुनैन की तरह छात्रों को पिलाया जाता है। इस प्रकार छात्र कुनैन की तरह ही नैतिक शिक्षा से घृणा करने लगता है। क्योंकि उसके सामने केवल उपदेश होते हैं, ठोस उदाहरण नहीं।

प्रश्न उठता है कि इस समस्या का क्या हल है ? प्रश्न का हल सरल है, पर उसको कार्यान्वित करना कठिन है। सबसे पहले तो विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का स्वरूप बदलना होगा। पिता को स्वयं नैतिक बनना होगा। यदि हम चाहते हैं कि छात्र सच बोले तो सबसे पहले हमें स्वयं बोलना होगा। ऐसा करने से छात्र अनजाने ही नैतिकता सीख जायगा। उसके अतिरिक्त खाइयों की दीवार गिरानी होगी, छात्र और अध्यापक का सम्पर्क बढ़ाना होगा। राजनीति का शिक्षा मे हस्तक्षेप बन्द करना होगा। उपद्रवी छात्रों को गोलियां और लाठियो से वश मे न कर सहानुभूति व पूर्ण वैज्ञानिक तरीको से वश में करना होगा। सबसे अधिक हमें प्राचीन संस्कृति को पुनर्जीवित करना होगा। हमे फिर से निर्वाण के पाठ पढ़ने होंगे। पाश्चात्य संस्कृति का अधानुकरण बन्द कर उसका आवश्यक अनुकरण करना होगा। इस प्रकार हम शायद इस समस्या का हल कर पायेंगे।

◆ ◆

कलात्मक सृजन के लावण्य-धाम: अजन्ता - अलोरा

◆

जगदीशचन्द्र शर्मा

अजन्ता-अलोरा के नाम का स्मरण होते ही कलात्मक सृजन के सौन्दर्य की अभूतपूर्व झलक से मन मुग्ध होकर झूम-झूम उठता है। वास्तु-कला और चित्रकला की नयनाभिराम निधियों का ऐसा अनूठा समन्वय जिन कलाकारों ने किया, उनकी सूझबूझ और श्रमनिष्ठा के प्रति हृदय की अटूट श्रद्धा क्यों न उद्वेलित हो ! एक समय बिल्कुल एकान्त मे, जहाँ ऊबड़-खाबड़ चट्टानों के ढेर मात्र थे, वहां आज विभिन्न कलाओं की सजीवता मुखरित हो रही है। इनका रचनाकाल और इनके रचनाकार दोनों ही

इन चट्टानों की खुदाई इस ढंग से की गई कि अनेक देवाल

और उपासना-गृहों का निर्माण हो गया जिन्हें गुफाएँ कहा जाता है

इन्हें गुफाओं के नाम का सम्बोधन देने में हमारा मतभेद है। क्योंि

गुफाओं से तो सुरंगनुमा गहराई का बोध होता है जबकि यहां सुरंग जैस

कुछ नहीं, केवल कक्ष ही कक्ष हैं। अतः हम अजन्ता और अलोरा क

'शिला-गृह' कहना अधिक संगत मानते हैं और इन तथाकथित गुफाओं को

'शिला-कक्ष'। क्योंकि गृह में ही कक्ष होते हैं, उसी तरह यहां भी शिला

गृहों में शिला-कक्ष। अत. शिला-गृह और शिला-कक्ष जैसे शब्दों से ही

वास्तविकता का बोध होता है।

अजन्ता का प्रत्येक शिला-कक्ष चित्रकला से ओत-प्रोत है। अने

ही समय के प्रवाह ने अनेक चित्रों का अस्तित्व समाप्त कर दिया, अनेक

चित्र अब भी अच्छे हैं और अनेक सर्वथा कांतिहीन होते जा रहे हैं। इन

चित्रों में गौतम बुद्ध के जीवन और मत से सम्बन्ध रखने वाली विभिन्न

झाकियों का अंकन हुआ है तथा विभिन्न प्राणियों का भी। अलोरा में चित्रों की उतनी भरमार नहीं, फिर भी अलोरा के चित्र अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यहां रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण और शिवपुराण का सुन्दर रंगीन चित्र हुआ है। उनमें विभिन्न प्राणियों का अंकन दर्शनीय है।

मूर्तिकला की दृष्टि से अजन्ता में गौतमबुद्ध का एक छत्र साम्राज्य है। प्रत्येक कक्ष की प्राचीरें तथागत की मूर्तियों से परिपूर्ण हैं। उधर अलोरा में चित्रकला की न्यूनता अवश्य है, किन्तु मूर्तिकला के क्षेत्र में वह अजन्ता से बहुत ही बड़ा-चढ़ा है। यहां ब्राह्मण मत और बौद्धमत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने पर भी ब्राह्मण की व्यापकता और विविधता सबसे अधिक है, शिव और विष्णु के अनेक स्वरूप खुदे हुए हैं, कितने ही देवी-देवताओं को अंकित किया गया है और भिन्न-भिन्न प्राणियों की आकृतियों का तो कहना ही क्या ? सब कुछ आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

अलोरा के कतिपय शिला-वक्ष दुमंजिले और तिमंजिले भव्य आकार वाले हैं। अजन्ता में इसका प्रायः अभाव मिलेगा।

अजन्ता और अलोरा में अब एक समानता यह भी है कि वहां भंवरलाल जैसी भयंकर मधु मक्खियां कभी-कभी आगन्तुक यात्रियों को अपने प्रभाव से इधर-उधर दौड़ लगवा दिया करती हैं। खैर

अजन्ता की चित्रकला में श्वेतकमल बहुत चित्रित हुआ है। अलोरा की मूर्तियों में हाथी का बहुत सम्मान है।

अजन्ता की पहाड़ी का ऊपरी भाग घास और पेड़-पौधों से भरा हुआ है। जहां एक गांव भी है। अलोरा की पहाड़ी पर और पेड़-पौधे ही मिलेंगे।

प्रश्न उठता है कि अजन्ता और अलोरा दोनों में प्राचीन कौन है ? इस विषय में अनेक मत मिलते हैं। हमारे विचार से अलोरा अधिक प्राचीन है। इसके अधोलिखित कारण हो सकते हैं।

(क) अलोरा की चट्टानें पहाड़ों के मूल में होने से शिल्पकारों के लिए सर्वाधिक सुविधाजनक रहीं।

(ख) ब्राह्मण मत सबसे पुराना मत है, जिसका व्यापक प्रभाव यहां मुखरित हुआ।

(ग) ब्राह्मण मत की स्पर्धा में बौद्ध मतावलम्बियों ने अपने मत को व्यापक बनाने के लिए अजन्ता की रचना की और अलोरा की शेष चट्टानों का उपयोग किया। संभवतः उस समय ब्राह्मण मत का अवसान-काल रहा एवं बौद्धमत के विकास का समय आ पहुंचा।

(घ) अलोरा में भी सोलहवें शिला-कक्ष का निर्माण सर्व प्रथम हुआ। यह ब्राह्मणमत से सम्बन्धित है। इसके भीतर दीवारों में शिव, विष्णु और विभिन्न देवी-देवताओं की लीलाएं उकेरी गई हैं। बीच के चौक में राजलक्ष्मी और कैलास मन्दिर की भव्यता देखते ही बनती है। इतनी उत्कृष्ट कृतियां अन्यत्र नहीं मिलतीं।

(ङ) अजन्ता और अलोरा के सभी शिला-कक्षों में अलोरा का सोलहवां शिला-कक्ष ही सर्वोत्कृष्ट है। यह एक विशिष्ट रचना मानी जाती है। चाहे बाद में इसकी स्पर्धा में अनुकृतियाँ बनाने की चेष्टाएं की गई हों, किन्तु वैसा सृजन हो नहीं पाया।

(च) यदि बौद्ध मत का प्रभाव पहले मान कर इसकी रचना के प्रथम औचित्य को सिद्ध भी किया जाए तो भी यह विचार इसीलिए संगत नहीं बैठता कि अलोरा के सोलहवें शिला-कक्ष का पूर्णरूपेण सुविधाजनक स्थान अन्त तक चट्टान के रूप में उपेक्षित क्यों रहा, इसका कोई कारण नहीं मिलता।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि अलोरा के सोलहवें कक्ष से प्रेरित होकर अलोरा और अजन्ता के आगन लम्बे समय तक कला की साधना के केन्द्र रहे। ये दोनों स्थान अपनी कलात्मकता के कारण प्रति-दिन असंख्य यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इनसे प्रेरणाएं पाकर अनेक हृदयों में कलात्मक उर्वरता का बहुमुखी विकास हो रहा है और होता रहेगा।

व्यंग्य

कुत्ता और आदमी

◘

हुलासचन्द सोनी

मैं अक्सर घूमने जाता हूँ। एक मोड़ पर दो कुत्ते मिलते हैं। एक बड़ा और मोटा, दूसरा छोटा और दुबला-पतला। बड़ा कभी-कभी और छोटा वहां रोज मिलता है।

आज दोनों खेलते मिले।

खेल-खेल में तीस-चालीस कदम की दूरानी दौड़ लगाते और एक-दूसरे से उलझ कर लोट-पोट हो जाते। उलट-पुलट कर एक-दूसरे का पैर व पूँछ पकड़ लेते। बड़ा छोटे को पैरों से खरोंचता व लात-सी मारता। छोटा उन पैरों को मुँह से पकड़ने का प्रयत्न करता। पैर

पकड़ कर ज़ोर से दबाता-बड़ा ज़ोर से गुर्राता। छोटा पैरों को छोड़कर नीचे लेट जाता और बड़ा खड़ा दुम हिलाता रहता।

बड़ा उसके पुट्ठों में अपने दांत गड़ाकर पकड़ लेता। छोटा दर्द से कूं···कूं···कूं करता अपने तीखे दांतों को बड़े की टांगों में इधर-उधर गड़ाने का नाटक-सा रचता।

बड़ा ज्योंही उसके पुट्ठे को छोड़ता—वह भाग कर दौड़ जाता। बड़ा पीछे से उसे दबोच लेता। फिर उथल-पुथल शुरू हो जाती। बड़ा वास्तव में खेल रहा था और छोटा डरा-सा लग रहा था। बड़ा खेलना चाहता था इसलिए छोटा विवश था।

बड़ा थक कर—पलट कर उसकी पूंछ व कान पकड़ता और खींचता रहता। फिर छोड़कर अपने जबड़े में उसका जबड़ा फंसा झटके देने लगा। जबड़ों को फंसाए ही गई हो झगड़ने-से लगते। बड़े ने दूसरे छोटे के जबड़े को ज़ोर से झटका दिया। दर्द से वह गुर्राया। बड़ा जबड़ा छोड़ पीछे हट गया और घूर-घूर कर देखने लगा। छोटा प्यार के अन्दाज़ में पूंछ हिलाता उसके पैरों में लोट गया।

बड़ा कुछ झुका और लपक कर छोटे की टांग पकड़ घसीटते हुए काफ़ी दूर ले गया। छोटा टांग छुड़ाने के लिए हाऊ-हाऊ करने लगा। बड़े ने टांग छोड़ दी और ऐसा अभिनय किया कि अब खेल खत्म करके जा रहा है। थका व तंग छोटा आराम की सांस ले एक कोने में बैठने वाला था कि बड़े ने उस पर छलांग लगा दी। दोनों फिर खेलने लगे।

दूर से किसी बच्चे ने तु···तु···तु की आवाज़ दी। दोनों दौड़ कर बच्चे ने दो रोटियां फेंकीं। छोटे ने एक रोटी मुंह में उठाली। कचर-कचर उसे चबाने वाला ही था कि बड़ा ज़ोर से गुर्राया और तेज़ी से उछल कर उसकी गर्दन पकड़ कर झटकने लगा।

ऊं···ऊं···ऊं की आवाज़ के साथ रोटी मुंह से गिर गयी। छोटा दुम को टांगों में दबा पीछे हट गया।

बड़ा,जबड़ों व दांतों के बीच रोटी,को,झटक-झटक कर खाने लगा। छोटा,दूसरी रोटी,की,ओर मुड़ा। बड़ा फिर ज़ोर से गुर्राया।

छोटा विवश उसके सामने कुछ फासले पर पूंछ सीधी करके बैठ गया। उसके खड़े कान भी झुक कर दोहरे हो गये। अभी उसे कौर-आधकौर रोटी की आशा थी।

बड़ा रोटियां खाकर खड़ा हो मुंह में चारों ओर जीभ फेरने लगा। थोड़ी देर में बड़ा कुत्ता दूसरी गली में ऐसे मुड़ गया जैसे छोटा कुत्ता उसके साथ था ही नहीं।

छोटा जमीन सूंघ-सूंघ कर रोटी के टुकड़े खोजने लगा।

मैं स्वार्थी कुत्ते पर खीजता-सा घर लौट आया।

दूसरी सुबह मैंने उन्हें वहीं पर उसी तरह खेलते पाया। छोटे कुत्ते ने जीवन में समझौते की प्रेरणा शायद मनुष्य से ले ली थी।

गोयबल्स का पत्र याह्या खां के नाम

प्रेम भटनागर

जहन्नुम
दिनांक.........

मेरे अजीज याह्या खान्,

समय की गर्द ने धरे-धीरे मेरे नाम को धुन्धला कर दिया था पर मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं कि तुम्हारे झूठे प्रचार के झौंकों ने इस गर्द को साफ कर पुन. मेरे नाम को चमका दिया। इस युद्ध के दौरान बस यही चर्चा रही कि झूठे प्रचार मे याह्या खान् ने गोयबल्स को भी पीछे रख दिया, और मेरा नाम तुम्हारे नाम के साथ कुछ इस इस तरह जुड गया जिस तरह काल के रूप मे भारतय नैट का नाम पाकिस्तानी जैट के साथ जुड़ गया है।

द्वितीय महायुद्ध मे झूठ बोलने में मैंने बड़ी नामवरी हासिल की थी, विश्व के लोगो ने एक मत से मुझे "झूठों का बादशाह" और "झूठों का सरताज" जैसे खिताबों से सम्मानित भी किया। पर आज मुझे यह कहने में जरा-सा भी सकोच नहीं है कि अगर आज सशरीर तुम्हारी धरती पर होता तो तुम्हारे झूठ के आगे मय्रीनन कान पकड़ कर तोबा करता और तुमसे पनाह मांगता।

तुमने अपने एक बयान मे कहा था कि तुम नादिरशाह की संतान हो। मिथ्यावाद हम झूठो का जन्मसिद्ध अधिकार है। लाखो बगालियो के रक्त मे स्नान करने के बाद भला कौन नहीं मानेगा कि तुम नादिरशाह की सन्तान हो। नि:सन्देह तुम्हारी धमनियो मे नादिरशाह, तैमूर, चंगेज खा और हलाकू के अलावा और किसका रक्त हो सकता है। फिर कत्लेआम का विश्व रिकार्ड जो तुमने कायम किया है वह बिचारे नादिर शाह के नसीब मे कहां था। नादिरशाह ने नौ घन्टे तक के कत्लेआम मे ही सन्तोष कर लिया पर तुम्हारा कत्लेआम पूरे नौ माह तक जारी रहा। नादिरशाह की रक्त-प्यास तो बीस हजार दिल्ली वासियो के रक्त से ही बुझ गई पर तुम्हारा खूनी खप्पर बीस लाख बंगालियों के रक्त से भी नहीं भरा। वास्तव मे तुमने अपने पूर्वज का नाम उज्ज्वल करने का गौरव प्राप्त किया है।

पर हा, तुमने अपने इसी बयान के आगे यह भी कहा था कि तुम नादिरशाह की *नालायक सन्तान* हो क्योकि दिल्ली जीतने का तुम्हारा इरादा नहीं है। मुझे बहुत खुशी है कि इस बड़े झूठ ने तुम्हारे पूर्व के कथन के सच की कालिमा को बहुत कुछ धो दिया है। मेरे जाने जिगर, तुम अच्छी तरह जानते थे कि दिल्ली मे [illegible] रंगीले मोहम्मदशाह का शासन नहीं है और न अब भारत में [illegible] अपने आकाओं की शह के मद में जब तुम इतने [illegible] सबसे बड़े झूठ में सच का आभास [illegible] तो दूर रहो

[illegible] हवाला दे रहा हूं [illegible] सुनकर मैंने [illegible] मे अपना बाप ही

मान लिया है ।

भारत दुनिया के दरवाजे पर दस्तक देता रहा कि ऐसा राजनैनिक हल निकाला जाना चाहिये जिससे शरणार्थी नहीं है बल्कि अपने घर सुरक्षित लौट सके । पर तुमने एक ही झूंठ में समस्या को हल कर दिया कि ये सब शरणार्थी नहीं हैं बल्कि भारत के बागी है जिन्हें भारत पाकिस्तान को बदनाम करने के लिए शरणार्थी बता रहा है ।

इसे कहते है लाजबाब झूंठ । लगभग एक करोड़ शरणार्थियों पर होने वाले व्यय से किसी भी विकसित देश की अर्थ व्यवस्था चरमरा सकती है, भारत की क्या अपनी अर्थ व्यवस्था से दुश्मनी है जो इन शरणार्थियों का जबरदस्ती भार वहन कर अपनी अर्थ व्यवस्था को लगड़ा करेगा ? पर तुम्हारे झूंठ का कोई जवाब हो तब न !

तुम्हारे झूंठ की दाद दिये बिना भी मैं नहीं रह सकता जो तुमने शेख मुजीब की रिहाई के बारे मे बोला था । तुमने कहा था कि शेख मुजीब सुरक्षित है, यदि पाकिस्तान की जनता चाहेगी तो मैं उन्हें रिहा कर दूंगा, पर यह देश के हित में नहीं होगा क्योंकि पूर्वी बंगाल की जनता सारे फसाद की जड़ उन्हें ही मानती है और यहा की क्रोधित जनता उनकी हत्या कर देगी ।

वाह मेरे बांके क्या बात कही ! शेख मुजीब पूर्वी बंगाल के जिगर हैं, जो मुजीब विश्व रिकार्ड तोड़ बहुत मतों से विजयी हुए और जिन्होंने बेमिशाल लोकप्रियता प्राप्त की उसी मुजीब की जनता हत्या कर देगी ! तुम्हारे इस बढ़िया झूंठ पर कौन झूंठा बार-बार नहीं झूमेगा।

अपने मस्तिष्क का सन्तुलन खोकर आखिर तुमने ३ दिसम्बर को भारत पर हमला कर दिया । पर रेडियो पाकिस्तान से ऐलान यह करवाया कि भारत ने पाकिस्तान पर हमला कर दिया ।

प्रथम महायुद्ध में पाकिस्तान के जन्मदाता इंग्लैंड में भी झूंठ बोलने में महारत हासिल की और अपने देश का नाम उज्ज्वल किया था । युद्ध मे 'दे मारा', 'दे मारा' तो जर्मन करते पर ऐलान हमेशा यही होता कि अंग्रेजों की जीत हो रही है । उन दिनों एक किमवदन्ती प्रचलित हो गई कि कदम जर्मन के बढ़ने है, जीत अंग्रेजों की होती है । मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि पाकिस्तान ने न केवल विरासत में मिले इस गुण

को बरकरार ही रक्खा बल्कि इस में चार चान्द भी लगा दिये। भारतीय सेना हर मोर्चे पर आगे बढ़ती पर रेडियो पाकिस्तान यह ऐलान करता कि हर मोर्चे पर हमारी फतह हो रही है।

अब बहादुरी का प्रदर्शन इससे बढ़कर और क्या हो सकता था कि सभी मोर्चों पर वे हथियार, गोला, बारूद, पका पकाया खाना, नमाज की अतिया और जूतियां तक छोड़ कर भागे और अन्त में पाकिस्तान की एक तिहाई सेना ने शत्रु के आगे हथियार डालकर आत्म समर्पण तक कर दिया। धन्य है ऐसी बहादुरी को!

मुझे इस बात का बहुत गर्व है कि अगर भारत अपने बाहुबल से पूर्वी बंगाल को मुक्त करा कर पाकिस्तान के दो टुकड़े करा सकता है तो पाकिस्तान के समाचार पत्रों के सम्पादकों के दिमाग भी इतने खोखले नहीं है कि "भारत न केवल दो टुकड़े बल्कि कई भागो में बट रहा है" जैसी झूठी और मनगढ़त खबरें भी न छाप सके।" साम्प्रदायिकता के रंग में रंगे कराची के 'जंग' की खबरों ने तो मुझे भी दंग कर दिया कि "दिल्ली के सिक्खों ने बगावत का ऐलान कर दिया है। पाकिस्तान ने अमृतसर और पूरब के अन्य नगरों पर इसीलिए अधिकार नहीं किया क्योंकि इस क्षेत्र का प्रशासन बहादुर सिक्खों ने सम्भाल लिया है है और पाकिस्तान नहीं चाहता कि इन नगरों पर अधिकार कर सिक्खों को नुकसान पहुचाया जाय। ·············पूर्वी पंजाब के सिक्ख पाकिस्तान के आभारी हैं कि उसकी सहायता से वे सिक्खिस्तान स्थापित करने मे लगभग सफल हो चुके हैं। यह नया राज्य भारत और पाकिस्तान के बीच 'बफर स्टेट' होगी और कि "हमारे सैनिकों ने असम को शेष भारत से अलग-अलग कर दिया है। असम नागा और मिजो का ही देश है। इसलिए शीघ्र ही पाकिस्तान मिजो रिपब्लिक को मान्यता दे देगा।" इसी तरह "पश्चिमी बगाल वास्तव में नक्सलवादियों का ही देश है, जिस पर भारतीय हिन्दुओं को अपने देश की आजादी के लिए जागरूक हो उठे हैं और चीन इसमे खुली मदद दे रहा है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो है कि वह आक्रामक हिन्दुओं को अपने देश से बाहर निकाल कर दम लेगा।"

इसी अखबार 'जंग' की खबर को मैंने बार-बार चूमा कि राजपूत जो मुगल काल मे बनियो और ब्राह्मणों के विरुद्ध मुगलों से कन्धे से कधा

मिलाकर लड़ते आ रहे हैं एक बार फिर बगावत पर उतर आये हैं। भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने धोखे से उनका प्रिवीपर्स एवं अन्य सुविधायें छीन ली हैं। लेकिन सिन्ध के क्षेत्र से पाकिस्तानी सेनाओं के आक्रमण के कारण यदि खुदा ने चाहा तो जयपुर महल, जोधपुर और बीकानेर के राजाओं की पूरी शान-शौकत फिर लौट आयेगी।

ऐन मौके पर खुदा भी जुदा हो गया और बजाय सिन्ध क्षेत्र से पाकिस्तानी सेना राजस्थान में घुसने के, राजस्थान में घुसने के क्षेत्र से भारतीय सेना सिन्ध में घुस गई। अब इन भोले राजपूतों की अकल पर भला किसे तरस नहीं आएगा जो अपना हित-अहित नहीं जानते। जिस फौज का उन्हें स्वागत करना चाहिये था उसी का उन्होंने भारतीय सेना में भर्ती होकर संहार करना शुरू कर दिया और इस सिरफिरे जयपुर के महाराजा भवानीसिंह को क्या कहा जाय जिसे अपनी पुरानी शानो-शौकत के बदले इन्दिरा गांधी का महावीर चक्र ही ज्यादा पसन्द आया।

भारत की सैनिक सफलता का श्रेय यदि सेना के अंगों (स्थल, जल और वायु) के पारस्परिक सहयोग और सुनियोजित को दिया जाय तो पाकिस्तान की प्रोपेगण्डा मशीनरी (राजनेता, रेडियो और समाचार पत्रों) ने एक दूसरे से बढ़कर जिस पारस्परिक सहयोग का प्रदर्शन किया वह पाकिस्तान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

दिल्ली जीतने का ख्वाब देखते हुए अगर शेख बिल्ली कय्यूमखां मुक्का उठाकर कह देते कि "पानीपत पाकिस्तान के मुजाहिदों को पुकार रहा है" और उसी स्वर में स्वर मिलाकर सिन्ध के पीर एक समारोह में भाषण करते हुए बताते हैं कि "मुझे खुदा से यह आदेश प्राप्त हुआ है कि ३१ दिसम्बर से पूर्व ही मैं दिल्ली की जामा मस्जिद में नमाज अदा कराऊंगा तो 'मशरिक लाहौर, फौरन छापता है कि 'आधी छापता है कि "आधी दिल्ली खाली हो चुकी है और पाकिस्तानी सेनाओं ने पालम हवाई अड्डे को बुरी तरह नष्ट कर दिया है।" इसी प्रकार यदि नरूल अमीन का बुढ़ापा बोलता है कि 'जंग' हुई तो हम आसाम और मौजूदा कश्मीर पर कब्जा कर लेंगे तो" जंग होते ही 'जंग' छाप देता है कि 'आसाम को शेष भारत से अलग-थलग कर पाकिस्तानी सेना ने उस पर कब्जा कर लिया है और अगर चूहिया जैसे चेहरे वाले

वजीर अब्बास अली खा हाथी जैसा हौसला बांधे है कि "यदि भारत ने हमला किया तो नमाजे-ईद कलकत्ता मे अदा करेंगें" तो रेडियो झूठीस्तान फौरन खबर देता है कि "भारत के विदेशी दोस्त बी०बी०सी आदि कुछ निहित स्वार्थों के कारण यह झूठा प्रोपेगण्डा फैला रहे हैं कि इस युद्ध में पाकिस्तान को बडा नुकसान हो रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि भारतीय युद्ध मशीनरी लगभग चकनाचूर हो गई है ....
पूर्वी मोर्चे पर भी हमारे बहादुर जवानों ने ऐसे ताबडतोड हमले शुरु कर दिये हैं कि ढाका पर भारत का अधिकार होने के बजाय अब कलकत्ता पर पाकिस्तान का अधिकार होना निश्चित है।

अन्त मे मैं खुदा (यह भी हमारा बहुत बड़ा झूठ है क्योंकि जुबान पर हमारे चाहे खुदा हो पर एतबार हमारा हमेशा शैतान मे ही होता है) से यही दुआ करता हूं कि वह पाकिस्तान को अत्याचारियो में झूठो में सर्वोपरि और खयाली पुलाव पकाने वालों मे खास बनाये रखे। मुझे विश्वास है कि यदि निकट भविष्य मे झूठो का अन्तराष्ट्रीय महा-संघ बना तो पाकिस्तान को उसका अध्यक्ष बनाकर अवश्य सम्मानित किया जायेगा।

समस्त मंगल कामनाओ सहित
सदैव तुम्हारा
गोयबल्स

......और लालाजी ने नरक माँग लिया

गौरीशंकर आर्य

यत्र तत्र छोटे-छोटे बालकों ने अपने पिछले जन्म के माता-पिता, परिवार के लोगों और अपने जन्म के स्थानों की सही पहचान बताकर हमें अपने कान पकड़ कर यह मानने के लिए मजबूर कर दिया कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त एक सौ एक नये पैसे सच है। और उसके आधार पर हम मूछों के स्थान पर हाथ फेर कर (मूछें नहीं हैं) यह कहने की हिम्मत कर सकते हैं कि कई आदमी एक बार ही नहीं, दो-दो बार भी मर जाते हैं। एक बार गलती से (मिसडिस्पेच्ड) और दूसरी बार नियमानुसार। इसी के साथ यह भी मानना ही

पड़ेगा कि स्वर्ग और नर्क कोरी कल्पना नहीं है। ये दोनों स्थान बाकायदा बसे हुए हैं।

उस दिन ट्रेन में सारे रास्ते भर यही चर्चा रही। एक मालगाड़ी का डिब्बा पटरी से उतर गया था। यात्रियों के मुंह जो एक खुले और जबानें जो एक बार चली तो रुकने का नाम ही नहीं लिया। लम्बी-लम्बी कथाओं के थान और छोटी-छोटी बातों के कटपीस के ढेर। रंग-बिरंगी बातें। लोग कहते जा रहे थे–अरे सा'ब यह तो मालगाड़ी का ही डिब्बा उतरा, और अगर इसी लोकल का यही डिब्बा गिर जाता तो·· ···? एक क्षणिक सन्नाटा। दो चार नजरों का मिलन। और फिर, वो ही काम बिगिन।······हां सा'ब भगवान ने ही बचाया। "······जी हां मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। हमारे यहां भी एक बार ········।" [और एक पूरी कथा] इसी प्रकार भिन्न-भिन्न मुखों से भिन्न-भिन्न बातें चलीं जो तब के पूर्वी पाकिस्तान के समुद्री जल प्लावन में गोते लगाती, कोयना नगर के पिछले भूकम्प के मुर्दे उखाड़ती लालाजी की मौत पर आकर रुकी। रुकी भी क्या, यों कहो कि उस जंक्शन से लाइन ही बदल गई। खिड़की के पास की सीट पर आलथी-पालथी मारे डील-डौल वाले एक लाला जी ने इस बात पर पूरा जोर लगाया। कि उनके ताऊजी लाला गोंदूमल पूरे दो बार मरे। पिछली बार तो कायदे से मरे लेकिन पहली बार तो फालतू ही मरे। यमदूत उन्हें भूल से ले गये थे। उनके नाम की लिखावट और लिखावट की पढ़ावट के कारण यमदूत भी चक्कर में आ गये थे। पता नहीं, यमराज के ऑफिस में वल्दियत और हुलिया लिखने का रिवाज क्यों नहीं है।

खैर सा'ब, तो लालाजी कह रहे थे कि उनके ताऊ लाला गोंदूमल जी खा-पीकर बैठे थे। ताजा अखबार हाथ में था और चुनावों की हार-जीत पर अटकलें लग रही थीं। पक्के कांग्रेसी थे लाला जी। उनके मित्र पण्डित गोपीकिशन उनके पास ही बैठे हुवेजी में तम्बाकू रगड़ते बातों पर हां न करते लालाजी की ओर ध्यान लगाये थे। इतने ही में लालाजी खतम। बोली रुक गई लेकिन आंखें खुली की खुली। पण्डित जी ने सोचा लाला जी कुछ सोच रहे हैं। उन्होंने सुरती मुंह में डाली और पिचकारी के लिए कोई पवित्र स्थान देखने लगे। एक-दो मिनट बाद एक स्थान का

......और लालाजी ने नरक माँग लिया

◻

गौरीशंकर आर्य

यत्र तत्र छोटे-छोटे बालकों ने अपने पिछले जन्म के माता-पिता, परिवार के लोगों और अपने जन्म के स्थानों की सही पहचान बताकर हमें अपने कान पकड़ कर यह मानने के लिए मजबूर कर दिया कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त एक सौ एक नये पैसे सच है। और उसके आधार पर हम मूछों के स्थान पर हाथ फेर कर (मूँछे नहीं हैं) यह कहने की हिम्मत कर सकते हैं कि कई आदमी एक बार ही नहीं, दो-दो बार भी मर जाते हैं। एक बार गलती से (मिसडिस्पेच्ड) और दूसरी बार नियमानुसार। इसी के साथ यह भी मानना ही

पड़ेगा कि स्वर्ग और नर्क कोरी कल्पना नहीं है। ये दोनों स्थान बाकायदा बसे हुए हैं।

उस दिन ट्रेन में सारे रास्ते भर यही चर्चा रही। एक मालगाडी का डिब्बा पटरी से उतर गया था। यात्रियों के मुंह की एक खुले और जबानें जो एक बार चली तो रुकने का नाम ही नहीं लिया। लम्बी-लम्बी कथाओं के थान और छोटी-छोटी बातों के कटपीस के ढेर। रंग-बिरंगी बातें। लोग कहते जा रहे थे—अरे सा'ब यह तो मालगाडी का ही डिब्बा उतरा, और अगर इसी लोकल का यही डिब्बा गिर जाता तो……? एक क्षणिक सन्नाटा। दो चार नजरों का मिलन। और फिर, वो ही काम बिगिन।……हां सा'ब भगवान ने ही बचाया। "……जी हां मारने *वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। हमारे यहां भी एक बार ………।"* [और एक पूरी कथा] इसी प्रकार भिन्न-भिन्न मुखों से भिन्न-भिन्न बातें चलीं जो तब के पूर्वी पाकिस्तान के समुद्री जल प्लावन में गोते लगाती, कोयना नगर के पिछले भूकम्प के मुर्दे उखाड़ती लालाजी की मौत पर आकर रुकीं। रुकी भी क्या, यों कहो कि उस जंक्शन से लाइन ही बदल गई। खिड़की के पास की सीट पर आलथी-पालथी मारे डील-डौल वाले एक लाला जी ने इस बात पर पूरा जोर लगाया। कि उनके ताऊजी लाला गोंदूमल पूरे दो बार मरे। पिछली बार तो कायदे से मरे लेकिन पहली बार तो फालतू ही मरे। यमदूत उन्हें भूल से ले गये थे। उनके नाम की लिखावट और लिखावट की गढ़ावट के कारण यमदूत भी चक्कर में आ गये थे। पता नहीं, यमराज के ऑफिस में बल्दियत और हुलिया लिखने का रिवाज क्यों नहीं है।

खैर सा'ब, तो लालाजी कह रहे थे कि उनके ताऊ लाला गोदू-मल जी खा-पीकर बैठे थे। ताजा अखबार हाथ में था और चुनावों की हार-जीत पर अटकलें लग रही थीं। पक्के कांग्रेसी थे लाला जी। उनके मित्र पण्डित गोपीकिशन उनके पास ही बैठे हथेली में तम्बाकू रगड़ते बातों पर हां न करते लालाजी की ओर ध्यान लगाये थे। इतने ही में लालाजी खतम। बोली रुक गई लेकिन आंखें खुली की खुली। पण्डित जी ने सोचा लाला जी कुछ सोच रहे हैं। उन्होंने सुरती मुंह में डाली और पिचकारी के लिए कोई पवित्र स्थान देखने लगे। एक-दो मिनट बाद एक स्थान पा

अभिषेक करके गोपीकिशनजी ने लालाजी की तरफ देखा तो उन्हें अचंभा हुआ। बोले ऐसे क्या देख रहे हो लाला? परंतु उत्तर न पाकर पंडित जी ने जरा नजदीक से देखा-आँखें हिलती नहीं थी। उन्होंने जाँघ पर हाथ लगाकर लालाजी को झकझोरते हुए कहा, लाला! और बस ताऊजी की काया लुढ़क गई।

घबराये हुए पंडित जी उठे। घर में भीतर खबर दी और पड़ौस के लोगों को यह अजूबा सुना-सुना कर इकट्ठा किया। सारे गांव में हल्ला हो गया। मरीज भाऊराम बोले बस मौत हो तो ऐसी हो। क्या मौत पाई है वाह! लाला जी बड़े धर्मात्मा थे। बाहर बातों और भीतर रोने के प्रवाह के साथ-साथ अर्थी भी बन रही थी। सेठजी का बड़ा लड़का देहात में वसूली के लिए गया था। काफी देर हो गई। आदमी बुलाने भेजे गये परन्तु लड़का न आया तो छोटे लड़के को आगे कर अर्थी श्मशान को चलपड़ी। चिता तैयार हो गई लेकिन दाह संस्कार के लिए बड़ा लड़का ही होना चाहिए इसलिए प्रतीक्षा की जाने लगी। घण्टे दो घण्टे बाद बड़ा लड़का रोता हुआ आया। उसने अन्तिम दर्शन किये और लालाजी के शरीर को चिता पर रखने वाले थे कि लाला तो 'हैं' 'हैं' करते हुए उठ बैठे। और इधर-उधर अपने पास खड़े लोगों को देखने लगे बोले-यह क्या कर रहे हो, मैं कहां हूँ? लोग डरके मारे दूर-दूर जा खड़े हो गये तो लालाजी ने इधर-उधर देखकर समझ लिया कि यह श्मशान है शायद वह मर गये थे। लालाजी ने लोगों को बुलाकर कहा—डरोमत, सचमुच मैं मरगया था। अब तो लोग उन्हें घेर कर चारों ओर बैठ गये। लेकिन लालाजी ने कहा पहले घर चलें, वहां जाने क्या हो रहा होगा बात ठीक थी। लोग भागे। बिजली की तरह बात फैल गई। जो लोग सर्दी में नहाने के डर से बीमारी के बहाने पर शवयात्रा में नहीं आये थे वे भी भागकर आये। घर में रोती हुई स्त्रियों का रोना [नक्ली और असली दोनों] रुकगया। एक क्षण चिहीचुप खामोशी रही और फिर जो स्वर फूटे तो रोने के शोर को भी बातों के शोर ने मात कर दिया। गाजे बाजे के साथ फूलों की मालाओं से लादकर लालाजी को घर पर लाया गया। जाजम बिछी। गुलाल उड़ी। इत्रपान हुआ। फिर ताऊजी ने सारी बात सुनाई। (गाड़ी के डिब्बे के यात्री खिसक-खिसक कर वक्ता के पास आ रहे थे इसलिये इतनी

देर बाद हमको भी बैठने की जगह मिलगई । हम भी बैठकर सुनने लगे)

मैं तो पंडित गोपीकिसन की बात सुन रहा था कि एक दम आँखों के सामने अंधेरा छागया । एक काली डरावनी मूर्ति ने मेरे गले मे रस्सी का फन्दा डाल दिया और कहा, चलो । बस, मुझे ऐसा लगा कि मैं दूर बादलों के ऊपर उड़ता जा रहा हूं । जब मेरे पाँव टिके तो मैंने देखा कि धुँआ उठ रहा है । धीरे-धीरे धुआं मिट गया और साक्षात भगवान के दर्शन हुए । चारभुजा धारी शख चक्रगदा पदम । लक्ष्मी मैया पाँव दबा रही है । धर्मराज एक बड़ी पोथी लेकर बैठे हैं । मैंने जाते ही दण्डवत प्रणाम किया । स्तुति करने लगा । भगवान ने हाथ उठाकर आशी वाँद दिया । मैंने धर्मराज को भी नमस्कार किया । उनकी जय बोली । धर्मराज ने पहले तो मुझे ध्यान से देखा । फिर आंखो पर चश्मा चढ़ाकर गौर से पहचाना । फिर चश्मा उतार कर यमदूत से नाराज होकर बोले– यह किसको ले आये ? मैंने भोंदूमल को लाने को कहा था वह तो कोट पेण्ट पहनता है । सप्लाई विभाग का अधिकारी है । यमदूत ने कहा महाराज क्षमा हो–यह आदमी अपने हस्ताक्षर ऐसे ही करता है कि भोंदूमल ही पढ़ने मे आता है । विदेशी भाषा पढ़कर समझने मे भूल हो ही जाती है महाराज, अपराध क्षमा हो ।

धर्मराज ने कहा—'खैर जो होगया सा होगया अब इसे वापस ले जाओ ।' जब मैंने यह बात सुनी तो मेरे मन मे यह आया कि लोग चन्द्रमा पर जाकर केवल धूल मिट्टी और पत्थर लाने के लिए कितना खर्चा उठा कर जान जोखिम मे डाल रहे हैं और मैं बिना एक पाई खर्च किये स्वर्ग मे आ गया हूं क्यो न इस लोक को अच्छी तरह देख लूं । मैंने हाथ जोड़ कर कहा, हे दीन बन्धू ! मैं आपकी शरण में आकर वापस जा रहा हूं कृपा करके मुझे स्वर्ग और नरक के दर्शन तो करा दीजिये । हमारे गाव के कुछ सिर फिरे लोग स्वर्ग नरक और यहा तक कि आपको भी नहीं मानते । कहते हैं कुछ नही है । मैं चश्मदीद गवाह बन कर जाऊंगा भगवान ! भगवान ने मेरी ओर देखा और फिर यमदूत से कहा, 'इस लाला का लड़का देहात मे वसूली करने गया है उसको श्मशान में मत पहुंचने दो । तब तक इसे जो देखना चाहे दिखादो । भोंदूमल को लाओ ।' यमदूत हाथ जोड़ कर चला गया । इधर एक चपरासी मुझे लेकर चला । हम दोनों एक बगीचे

थे वे होकर चल रहे थे। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल थे। दाहिनी ओर एक नदी बह रही थी। उसके किनारे-किनारे कई लोग नहा रहे थे कोई बैठ कर कोई खड़े खड़े पूजन, पाठ तपस्या आदि कर रहे थे। आगे गये तो भगवान बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण, शिवाजी, लक्ष्मीबाई सभी दिखाई दिये लेकिन सबके शरीर पर एक धोती और एक चादर। बस। मैंने सबको प्रणाम किया। मेरे मन में गांधीजी का बड़ा सम्मान है। मैंने उन्हें देखना चाहा। चपरासी एक पगडंडी पर हो लिया। आगे एक फूस की टपरिया में बापू बैठे चरखा कात रहे थे। कस्तूरबा प्रांगण पर धूप सेंक रही थीं। वहां पहुंचते ही मुझे बड़ी शान्ति मिली। मन हुआ कि थोड़ा देर बैठूं लेकिन चपरासी जल्दी मचा रहा था सो प्रणाम करके आगे बढ़ गया। मैंने कहा कि स्वर्ग में इतना ही है क्या? वह सोने के महल अप्सराएं आदि कहां है? चपरासी ने कहा यह तो इन्द्रपुरी है। वहां जाने की आज्ञा नहीं है। मैंने कहा तो फिर अब नरक लोक भी दिखाओ। चपरासी मुझे उड़ा कर एक ऐसे नगर के फाटक के सामने ले गया जो जेल के फाटक की तरह था। ऊंची दीवारें। बुर्ज। प्रत्येक बुर्ज पर चौकियां बनी थीं। सन्तरी पहरा दे रहे थे। हम खिड़की की राह भीतर घुसे। मैंने अचरज से चपरासी से पूछा भाई, क्या आप मुझे कलकत्ता या बम्बई में तो नहीं ले आये? नर्क में तो भारी से पीटते हैं, गर्म खम्भों से बांध कर चाबुक मारते हैं, सांप बिच्छुओं से कटवाते हैं। यहां तो सारी बातें ही अजीब हैं।

चपरासी ने कहा—हे प्राणी यहां यह सब था जो तुम कह रहे हो। बल्कि इससे भी भयानक था लेकिन जो जल्लाद थे वे सब यहां से चले गये। उनकी अवधि पूरी हो गई वे अब पृथ्वी पर जन्म लेकर जीवन बिता रहे हैं। अब पृथ्वी के लोग यहां आ गये हैं। उनकी नई विचारधारा ने यहां भी आमूलचूल परिवर्तन ला दिया है। पहले तो भगवान नगे पाव उठ उठ कर भक्तों के लिए भाग पड़ते थे। किन्तु अब "सीधी अर्जी नहीं पहुंचती। पहले विश्वकर्मा भगवान के पी. ए. थे। उनको पेन्शन हो गई तो लक्ष्मी जी ने स्वयं ही यह कार्य सभाल लिया। अब लक्ष्मी की सिफारिश के बिना भगवान के पास किसी की पहुंच नही। यो समझो कि लक्ष्मी ही भगवान है।

मैंने पूछा—लेकिन ये बंगले, स्कूल, अस्पताल आदि यहां कैसे बन

गये ? चपरासी ने कहा–तुम्हारे लोक में भी तो जो जेल (कारावास! ये वे अब सुधार गृह बन गये हैं। वहां आदमी से वही काम लिया जाता हैं जो वह जानता है। हमारे यहां जो ये नये बंगले और बम्बइया डिजाइन के दस-दस मंजिले मकान बने हैं वे सब तुम्हारे लोक के इन्जीनियरों और ओवरसियरों ने बनाये हैं। वहा जिन लोगों ने सीमेण्ट में मिट्टी मिलाई और कागजों मे ही सरकारी गोदाम बना कर ढहा दिया था उनको यहां भेजा गया है। यहां उन्होंने कहा–हम तो ई. एफ और एल टाइप ही बंगले बनाना जानते हैं। सो हमें ऐसे ही मकान बनाने पड़े।

यहां नर्क मे पुनर्वास की समस्या ही सबसे गम्भीर है। स्वर्ग की आबादी तो दस वर्ष में दशमलव एक बढ़ती है जबकि यहा एक वर्ष मे दस गुनी हो रही है। मकानो की कमी पड़ रही है। उधर वह अस्पताल है यह औषधालय है। जो डाक्टर वैद्य रोगियों के लिए भेजी गई दवाई को घर पर चुरा ले जाते है या एक रोगी से पूरा इन्जक्शन मंगवाकर उसको एक चौथाई लगा देते हैं शेष दूसरे रोगियों को लगा कर उनके रुपये खाते हैं उनको यहां लाया गया है। उन्हें यहां इलाज का ही काम दिया गया तो वे बोले-'अमुक-अमुक गोलिया, अमुक इन्जेक्शन, एक्स-रे मशीन, आपरेशन के सामान आदि सब लाओ तब इलाज होगा। विवश होकर हमे सब लाना पड़ा है।

इधर देखो आधुनिक ढंग के कपड़े सीने वाले दर्जी हैं। पास ही कपड़े की दूकानें हैं। 'टेरेलीन' के नाम पर डेक्रोन और 'वाश एंड वियर' कपड़ा बेचने वाले तथा कपड़े को नापने समय खींचकर प्रति मीटर की नाप मे दो सेन्टीमीटर बढ़ा देने वाले कपड़े के व्यापारी यहां आ गये हैं। पहले जो दर्जी ढाई मीटर नहीं ढाई गज मे ढीली मोहरी का पेण्ट बनाता था अब वही दर्जी ढाई मीटर में तंग चिपकी मोहरी का पेण्ट बनाता है। शेष कपड़ा दबा लेता है फैशन के नाम पर। इस चुराये कपड़े से वह अपने बच्चों के कपड़े बना लेता है या दूसरे ग्राहक के पेण्ट की जेब के लिए बेच देता है। ऐसे ही दर्जी यहां आ गये हैं। लेकिन यह भी तंग मोरी की पेण्ट, टी-शर्ट, फ्राक, स्कर्ट आदि ही बनाना जानते हैं। कल ही देवराज इन्द्र का बुशर्ट बनकर गया है। लक्ष्मी जी 'बेलबॉटम' पेण्ट पहनकर गरुड पर सैर कर आईं। उधर वह जो चूड़ीदार पाजामा लटक रहा है न, वह इन्द्राणी

जी का है । क्या करें, पुराने जमाने के कपड़े सीने वाला कोई है ही नहीं
आज्ञा नहीं है नहीं तो सामने वाली होटल मे तुम्हें चाय पिलाता। चा
भी पत्ती मे घोरल के डोडों के छिलके मिलाने वाले या एक बाल्टी पानी
मिलाकर रेल्वे स्टालो पर चाय वालों को भी यहां ही बसाया गया है
उन्होने यहा भी यही धन्धा चला लिया है । सभी देवता और देवियां अब
'बैड टी' लेने लग गई है । सरस्वती के हंस और लक्ष्मी के उल्लू जी अभी
होटल पर आते ही होंगे ।

सुनो, यह घुंघरुओं की आवाज आ रही है न वहां ऊपर गुलशन
बाई का नाच हो रहा है । काशी से आई हैं । मन्दिर में नाच करते-
करते कई के घर उजाड़ दिये थे इसने । कहती है–मैं रेडियो के प्लेबैक पर
ही नाचती हूं सो रेडियो भी देना पड़ा । चन्द्रदेव अभी-ही ऊपर गये हैं ।
ये रही रेडियो और घड़ियों की दूकानें । ये लोग मरम्मत के समय नई और
अच्छी वस्तुएँ निकाल कर बेकार चीजें रख देते थे । यहा आकर
भी यह धन्धा चला रहे हैं । सामने यह उच्च विद्यालय है । यहां के हेड
मास्टर जी ने छात्रों की फीस के जमा रुपयों को झूठे बिल बनाकर व्यय
किया था । ये अध्यापक डंडों के बल पर ट्यूशन करते थे । कक्षा मे
ऊंघते थे । रिश्वत के बल पर शून्य के दस और तीन के तैंतीस अंक बना
देते थे । दादा को टिपवा देते थे और दुर्बल को पिटवा देते थे । प्राथ-
मिक शिक्षा से उच्च कक्षा तक के सभी स्कूल हैं यहां ।

सामने देखो, तगड़े मोटे थानेदार जी आ रहे है । प्रतिमाह चार
सौ रुपये अपने अफसर को देते थे । एक हजार खसोटते थे । चोरी करवा
देते थे और फिर अपराधी (निरपराधी) को पकड़कर रुपये खींचते थे ।
नाक बन्द करो आंखें मींच लो । शराब की दूकानें आ गईं अब । ये ठेके-
दार है । इन्होंने सरकारी शराब मे देशी शराब और देशी शराब मे पानी
मिला कर बेचा है । यह शराब का इन्स्पेक्टर शराब पीकर पड़ा है । जल्दी
इधर से । समय पूरा होने वाला है । अभी जाने क्या क्या है आगे । जो
धामें तुम्हारे लोक मे है, समझ लो वे सब यहां हैं ।

भगवान और व्यवस्था समिति ने इनको रोका तो ये सब लोग
अनशन और हड़ताल की धमकी देने लगे । कहने लगे–अब यहां से कहां
भेजोगे । तानाशाही नहीं चलेगी । भगवान क्या होता है ? चाल

क्या चीज है !'

भगवान से भले लोगों ने शिकायत की तो भगवान बोले, मैं 'खुद परेशान हूं। ये लोग महात्मा गांधी की जय से मीटिंग शुरू करते है और भारत माता की जय से अन्त होता है। मैं दोनों के आगे नतमस्तक हूं। ये कहते हैं हम बापू के अनुयायी है। बापू कहते हैं—'पापी से नही पाप से घृणा करो, दण्ड से नहीं प्यार से सुधार करो।' वे इस स्थिति में कुछ नहीं कर सकते तो फिर आप हम क्या चीज हैं।'

एकाएक चपरासी चौंक पड़ा—बोला चलो समय हो गया। और वह मुझे उड़ाकर फिर भगवान के पास ले आया। मैंने पहुचते ही दण्डवत् करके कहा, हे जगदीश्वर ! जब मैं अबकी बार नियमानुसार आऊं तो जितने भी दिन मेरे भाग्य मे स्वर्ग मे निवास करने के हो उन सबको नरक मे रहने के लिए बदल दीजिये। नरक मे रहने में मैं यही समझूंगा कि मैं अपने ही गाव में जिन्दा हूं। बस मैं यही आशीर्वाद चाहता हू।" इसके बाद मुझे एक धक्का-सा लगा और मैं श्मशान में जी उठा।'

सारे यात्री सुनकर बोले—ठीक बात है। एक ने मौका देखकर कड़ी जोड़ी—'हमारे यहा भी एक बार ऐसा ही हुआ'............स्टेशन आ गया था। अपने राम अध्यापक वाले वर्णन से कुछ चिढ़ गये। [क्योंकि हमारी दाढ़ी मे भी तिनका है] अत. उतर अपने रास्ते लगे।

आप हैं इंगलिश टीचर

श्याम सुन्दर शर्मा

संवरा मस्तक, कुछ-कुछ बिखरे हुए बाल, खिचड़ी बालों से उठती सुगन्धित तेल की गन्ध, नई डिजाइन की टेरेलीन की चुस्त पेन्ट, कुछ ऊंची बुश-शर्ट, पैरों में काले नुकीले चमचमाते बूट पहने जब श्रीमान् जी कुछ रौब में आते हुए से तशरीफ लाते हैं, तो हम पुराने जमाने के शहनशाहों की याद ताजा हो जाती है। फरक बस इतना ही है कि शहनशाहों के दरबार में आने से पहले एक ऊंची आवाज में सुनाई देता था "बामुलाहिजा होशियार, खबरदार, शहनशाहे दुनियां आलम तशरीफ ला रहे हैं" की जगह से जनाब

स्वयं ही पैरों को जोरजोर से पटक कर अपने तशरीफ के टोकरे के पहुँचने की खबर कर देते हैं।

कॉलिज में पढ़े तो नहीं, पर यदा कदा उसके चक्कर जरूर लगा आये हैं। वह भी इस वहम में कि "नो नोलेज विदाउट कॉलिज"। वैसे आपने येनकेन उपायेन बी. ए. की डिग्री हासिल करली है। बातचीत करने पर पता लगता है कि इन्हें एक आधा अंग्रेजी नौवल के नाम याद हैं, तथा शैले, कीट्स, मिल्टन तथा वर्डसवर्थ आदि कवियों के नाम उनकी स्पेलिंग सहित याद है। बस, अंग्रेजी के इतने से तजुर्बे के आधार पर ये जनाब अपने आप को बड़ा भारी इंगलिशदा मानने लगे है। रही सही कसर इस बात ने पूरी कर दी कि ये जिस शाला में काम करते हैं, वहां अंग्रेजी का एक पीरियड भी मिल गया। बस फिर क्या था "डायन और अरल चढ़ी" वाली कहावत चरितार्थ हो उठी।

अब इनको भारतीय सस्कृति और वेशभूषा से इतनी घृणा हो गई है कि कभी-कभी अपने साथियों को भारतीय वेशभूषा में देखकर तथा हाथ जोड़कर नमस्कार करते देखकर इस दुनिया को छोड़कर चले जाने को जी करता है वह भी इसलिए कि दूसरों को ऐसा कराने में अपने आप को असमर्थ पाकर!

आपका कहना है कि भारतीय पोशाक से तथा हिन्दी, संस्कृत से इन्सान का स्टेन्डर्ड नहीं बनता। दूसरे लोगों पर रौब नहीं पड़ता। स्टेन्डर्ड और रौब के आप परम भक्त हैं इसलिए न चाहते हुए भी दूसरों के सामने अनामिका और कनिष्ठा के मध्य दबा कर सिगरेट का कश भी खींच लेते हैं। कक्षा में घुसते ही दो चार मतलब बेमतलब के अंग्रेजी वाक्य बोल कर छात्रों पर रौब गांठ लेते हैं क्योंकि बिना रौब के पढ़ाना एक अंग्रेजी अध्यापक के लिये स्टेन्डर्ड की बात नहीं।

यद्यपि इनके माता-पिता और बच्चे रौब वाले कपड़े नहीं पहनते तथापि खर्च लगने के भय से आप इस बात की ओर अनदेखी करने में ही गनीमत समझते हैं क्योंकि रौब और स्टेन्डर्ड तो बाहर निकलने पर ही दिखाना चाहिये।

आप हिन्दी और संस्कृत के तथा भारतीय संस्कृति के पुजारियों की इस बात के लिए भी डट कर आलोचना करते हैं कि ढीली-ढाली

पोशाक पहनना, देशी भाषा में बातचीत करना तथा साधारण वेश में आने वालो के साथ प्रेम से मिलना कोई स्टेन्डर्ड की बात नही है।

कभी कभी आपको इस बात की बड़ी शिकायत रहती है कि मुझे स्टेन्डर्ड के साथी नहीं मिलते। और आप इसी कारण बहुधा खिन्नता का अनुभव करते है। तो जनाब ये हैं हमारे इंगलिश टीचर ! जो भूल से भारत में पैदा हो गए।

एकांकी

घर

□

डॉ. राजानन्द

पात्र :

मिस्टर सरीन	:	अफसर, आयु ५० वर्ष
मिसेज सरीन	:	अधेड़, पत्नी
बेबी	:	अठारह साल की बेटी। कॉलेज की छात्रा
कमल	:	कमल अपने को २० साल कहता है। बेबी से बड़ा। कॉलेज में पढ़ता है।
पुष्पा	:	नौकरानी। ग्यारह साल की बच्ची।
किरण	:	बेबी की सहेली।

[ड्राइंग रूम। समय ६ बजे। सरीन साहब अखबार पढ़ रहे हैं। पढ़ते-पढ़ते किचन की तरफ बार-बार नजर जाती है।]

[अन्दर से मिसेज सरीन की आवाज-पुरवा, कमल बाबू को जगा था, नौ बज गये अभी तक सुबह नहीं हुई लाट साहब की।]

मि॰ सरीन (घड़ी देखते हैं, फिर अखबार का पन्ना पलट कर पढ़ने लगते हैं।)

(स्टेज के अन्दर

मिसेज सरीन : उठ गये! कुल्ला तो करलो, या इसमें भी पुरानापन है।

कमल ओह ममी, तुम तो सुबह से पीछे पड़ जाती हो। कोई तो दो आंखें नहीं खुल रही हैं।)

मि॰ सरीन : (बैठे-बैठे मुस्कराते हैं। मुस्कराहट में व्यंग है।)

(स्टेज के अन्दर

मिसेज सरीन : बेबी तैयार हुई या अभी कसर है।

बेबी : आ रही हू ममी।

मिसेज सरीन तकलीफ हो तो वहीं भेज दू नाश्ता।

बेबी : भेज दो ममी, मैं पढ़ रही हू।

मि॰ सरीन : (अखबार मेज पर रख कर जोर से हंसते हैं।)

(स्टेज के अन्दर

मिसेज सरीन : पुरवा, साहब से पूछ, वह अन्दर आ रहे है, या उनका नाश्ता भी वहीं भेजू।)

मि॰ सरीन : (सम्भल कर बैठते है।)

पुरवा : (प्रवेश करके) साहब माजी·····

मि॰ सरीन : (बीच मे काट कर) मैंने सुन लिया। तू आई है? तेरा बाप?

पुरवा मां को अस्पताल ले गये है।

मि॰ सरीन : क्यों?

पुरवा : (सिर झुका लेती है।)

मि॰ सरीन : क्या तबीयत बहुत खराब है?

पुरवा जी-जी मेरे भाई हो।

मि॰ सरीन (जोर से हंसकर) तेरे भाई होने वाला है। क्यों?

बहिन नहीं। अच्छा अच्छा कुछ होगा। कौन सा भाई होगा? कितने......

पुरवा : सातवां। चार बहिनें, दो भाई तो हम हैं।

मि० सरीन : बहुत बढ़िया, तू तो मिठाई खिलाएगी ना (ज़ोर से हंसते हैं।)

पुरवा : शर्मा घर जाने को होती है। मिसेज सरीन आती है।)

मिसेज सरीन : पूछने आई थी या बात मठारने?

मि० सरीन : सुना इसके सातवां भाई बहिन होने वाला है।

मिसेज सरीन : तो गानेवालियों को बुलवा दो!

मि० सरीन . आज सुबह-सुबह फिर पारा चढ़ा हुआ है (मुस्कराते हुए)

मिसेज सरीन . तुम्हें इससे क्या मतलब? घर तुम्हारा थोड़े ही है, नहाये-धोये बैठ गये अखबार लेकर।

मि० सरीन : बोलो क्या करूं?

मिसेज सरीन : (झुंझलाकर) कुछ मत करो। अखबार पढ़ो, खाना खाओ दफ्तर करो, और घर में रहो तो ऐसे जैसे मेहमान हो।

मि० सरीन : आज पूजा में विघ्न पड़ गया?

मिसेज सरीन : नास्तिकों के घर में कोई चीज चलती है। नौकर तक तो आज़ाद हैं इस घर के। भेज दिया इसको, करवालो काम या पूजा पाठ करलो।

मि० सरीन : इसके नया भाई होने वाला है।

मिसेज सरीन . ढोल बजाओ! मैं तो इस घर का करते-करते उकता गई, न आदमी हाथ में, न बेटा-बेटी हाथ में।

मि० सरीन : (व्यंग करते हुए) सब तो तुम्हारे कौन से डरते हैं, मुझे देखो, सुबह से भीगी बिल्ली बना यहां बैठा हूं।

मिसेज सरीन : तो निकल जाओ किसी बहाने से बाहर। तुम्हारे पास तो [illegible] है फिर चाहे मैं फोड़ती रहूं तुम्हारे घर

मिसेज सरीन : तुम्हारे सिर चढ़ाये हुए तो हैं ही । बस बहुत करवालो। अरे तू खड़ी क्या सुन रही है। (पुरवा चली जाती है) चलो नाश्ता ठण्डा हो रहा है ।

मिस्टर सरीन : उसको क्यों भगा दिया ?

मिसेज सरीन : तो क्या दिखाती कि तुम कैसे मुझ से लड़ते हो ।

मिस्टर सरीन : यह तो इस अखबार में भी छपी खबर है कि मिस्टर सरीन सेल्स टैक्स आफीसर और उनकी पत्नी मिसेज राजश्री सरीन में सुबह सुबह लड़ाई । उन्होंने अपने पति बेटे और बेटी की आज सुबह नौ बजे से तबीयत दुरुस्त की । दिन भर की सूचना शाम के एडीशन में पढ़िये ।

मिसेज सरीन : बनालो, बनालो खूब मजाक । कोई आज की सी औरत मिलती, तब अकल ठिकाने लगती । वह भी कार उठाती और होटल मे नाश्ता करवाती । मैं सीधी मिल गई इस-लिए·········

मिस्टर सरीन : इसलिए तो मिस्टर सरीन आज सेल्स टैक्स आफीसर हैं, वरना क्लर्क न होते, जो वह शुरू में थे, जब शादी हुई थी ।

मिसेज सरीन : रहने दो, रहने दो, अब चापलूसी पर आ गए ।

मिस्टर सरीन : यही तो मुश्किल है, लक्ष्मी कहो तो नाराज, साक्षात रौद्र-रूपा काली मइय्या कहो तो······

मिसेज सरीन : कुछ मत कहो, मेरा दिल जलाओ, फिर खाओ बस ।

मिस्टर सरीन : यह नहीं, चलो नाश्ता खाएं, बेटे-बेटी तो अपने-अपने काम मे लग गये होंगे ।

मिसेज सरीन : उनको तो काम ही काम हैं, एक को सोने और हर साल फेल होने का, दूसरी का किताबों से सिर मारने का । निहाल करेंगे आगे ।

मिस्टर सरीन : (व्यंग से हंसते हुए) निहाल तो अभी से हो रहे हैं, तुम मुंह पर ले आती हो, भिक-भिक कर के अपने दिल की निकाल लेती हो, मैं देखता रहता हूं, तमाशा देखने वालों की तरह ।

ज सरीन : यही तो तुम्हारा डरपोक पन है।
सरीन : तुम लड़का होकर क्या कर था रही हो ? कोई सुन
तुम्हारी ?
चलो···चलो··· (जाते हैं।)
[स्टेज खाली रहता है। थोड़ी देर बाद कमल भाता है।
कुल अंग्रेजी धुन मे। टेलीफोन तक आता है।)
: (चोगा उठाकर) यस ! शिव मी ३०६। हल्लो
साहू क्या कर रहे हो ? आज का क्या प्रोग्राम
हाँ हाँ उस अंग्रेजी पिक्चर का मुझे भी ध्यान
चलना है ना। श्योर-श्योर ! और (अन्दर की
देखकर, पिता तो नहीं आ रहे है।) यार लिजा
साथ······धीरे, जल्दी, डैडी अन्दर नाश्ता कर र
ले यार, उसे भी ले वरना मजा नहीं आएगा···
धीरे रेस्त्रां मे आ रहा हूँ······ओ के······ओ के
(लौटने को होता है, मिस्टर सरीन अन्दर से।
है।)
र सरीन : सुबह सुबह किस को टेलीफोन किया जा रहा है ?
: (घबड़ाकर) जी···जी··· दोस्त को किया था, पी
यड का पूछ रहा था।
र सरीन : या इगलिश पिक्चर जाने का तय हो रहा था ?
: (हड़बड़ाकर) डैडी, आपने सुन······
र सरीन : जी नहो, मैं जानता हूँ आज सन्डे है, पीरियड नहीं
सकते।
: ओह ! सॉरी डैडी, मैं भूल गया कि सण्डे······
सरीन : कौन से में जाने का इरादा है······?
: देट्स द वे।
सरीन : आप दूसरे में चले जाइये

मिस्टर सरीन : एक बात पूछ सकता हूं ? आपके समझ में आ गयी है अंग्रेज़ी ?

कमल : जी हाँ, जी हाँ, डैडी, स्टोरी तो बिल्कुल……

मिस्टर सरीन : फिर लिटरेचर में तुम ए. क्यों नहीं कर पा रहे हो ? यह दूसरा साल है आपका।

कमल : डैडी, वह, वह वैसे···

मिस्टर सरीन : केथी अगर अबकी आपको पीछे छोड़ गई तो शर्म आएगी क्या ?

कमल : वह, वह, मुझसे ज्यादा इण्टेली · ···

मिस्टर सरीन : आप जाइये, 'लव स्टोरी' देखिये। इससे ज्यादा कोई बात वह भी क्या सकता है। (कमल सिर झुकाए हुए अन्दर जाता है। मिस्टर सरीन उसके जाने के बाद मुस्कराते हैं— व्यंग्य की मुस्कराहट। फिर वह सोफे पर आकर बैठ जाता है और अखबार पढ़ने लगते हैं। बाहर की घंटी बजती है।)

मिस्टर सरीन : आइये !
(केथी की सहेली किरण आती है।)

किरण : नमस्ते डैडी।

मिस्टर सरीन : नमस्ते !

किरण : केथी है ?

मिस्टर सरीन : हां, हां। क्यों, पिक्चर जाने का प्रोग्राम है ?

किरण : (शर्माकर) जी···जी ?

मिस्टर सरीन : (हंसते हुए) घबराती क्यों हो। है ना ?

किरण : जी जी······

मिस्टर सरीन : कौन से में जा रही हो ?

किरण : जी, अभी······अभी तय नहीं।

मिस्टर सरीन : 'लव स्टोरी' में जा रही हो या 'देट्स द वे' में ?

किरण : केथी 'देट्स द वे' में कह रही थी।

मिस्टर सरीन : उसमें क्या करोगी जाकर, 'लव स्टोरी' में जाओ ! वह अच्छा पिक्चर है, वर्ल्ड में उसका एप्रीसिएशन रहा है।

किरन : आप कहते हैं डैडी तो उसमें चले जायेंगे। मैं अन्दर जाऊं ?

मि० सरीन : क्या पूछ कर ?

किरन : सॉरी डैडी।

(किरन अन्दर जाती है। कमल बाकायदा तैयार होकर आता है, और बिना सरीन साहब को देखे बाहर निकल जाता है। सरीन साहब उसी व्यंग-पूर्ण हंसी में हंसते हैं थोड़ी देर बाद किरन और केथी आती हैं)।

मि० सरीन : जा रही हो ?

केथी : डैडी, चले जायें ?

मि० सरीन : तय तो पहले से ही था। रुपये ?

केथी (पर्स देख कर) डैडी, कुल पांच है (नोट निकाल कर दिखाती है)।

सरीन साहब उठते हैं, टंगे हुए कोट तक जाते हैं। दस रुपय का नोट निकाल कर उसे पकड़ाते हैं)।

केथी : थैंक्यू डैडी ······(सुन हो जाती है) डैडी, विल यू ······ (अपना गाल डैडी की तरफ करती है। मिस्टर सरीन उसके गाल थपथपाते हैं। वह पर्स नचाती हुई 'टाटा' कहती चली जाती है। सरीन साहब फिर व्यंग्यात्मक मुस्कराहट से हंसते हैं।)

मि० सरीन : (घड़ी देख कर कोट की तरफ बढ़ते हैं। उसे पहिन कर टाई को ठीक करते हैं।) पुरवा, पुरवा। (पुरवा आती है। मांजी को भेजो।

(पुरवा जाती है, मिसेज सरीन आती हैं।)

मिसेज सरीन : कहो, एक फौज तो गई, अब तुम क्या कह रहे हो ?

मि० सरीन : तुमने पूछा नहीं कहां गये हैं सब ?

मिसेज सरीन : पूछ के क्या करूं। मैं उनकी कुछ लगती होऊं तब पूछूं या बताएं ?

मि० सरीन : सब अंग्रेजी फिल्म देखने गये हैं। तुम चलोगी मेरे साथ ? : मैं भी जा रहा हूं ?

मिसेज सरीन : मुझे अंग्रेजी समझ में आती है जो चलूंगी ?

० सरीन : उनकी ही कौन सी समझ में आती है, लेकिन उनमें बाहर संदेश तो मानते हैं, मैं भी वहीं बनने जा रहा हूं। चलता हूं ना।

सेज सरीन : तुम बनो मुझे नहीं बनना। आज पूजा तक नहीं कर सकी। इतवार बड़ा आता है, सब उलट-पुलट हो जाता है।

० सरीन : दूसरे दिनों में ?

सेज सरीन : सब अपनी खाओ, अपनी सुनो। न तुम्हें बेटे से मतलब, न बेटे को बाप से, न बेटी को मां से, न मां को आदमी से। सब अपनी-अपनी मन-मानी करो, अपनी जी की करो।

० सरीन : तो मैं भी जाऊं ?

सेज सरीन : रोकूंगी तो कौन से रुक जाओगे। किसी को भी रोकना नहीं।

० सरीन : (दस के कुछ नोट देते हुए) यह खर्च के लिए रख लो।

सेज सरीन : (हाथ में लेकर) खाना तो यहीं खाओगे ?

० सरीन : घर में नहीं खाऊंगा तो क्या होटल में खाऊंगा।

सेज सरीन : (व्यंग्य से) घर ! यह घर है ! खैर, जाओ देर हो रही है, मुझे भी।

० सरीन : पूजा करनी है ! है ना ? अच्छा···बन्द कर लो···

(मिसेज सरीन उनके निकलने पर दरवाजा बन्द करती है। नोटों को गिनती हैं व्यंग्यात्मक हंसी के साथ। फिर अन्दर चली आती हैं। थोड़ी देर में भजन की ध्वनि सुनाई देती है। बाहर से दूसरा पश्चिमी गाने का रिकार्ड बज आवाज को क्रॉस करती है। स्टेज खाली रहता है।)

●○●

रिहाई

वासुदेव चतुर्वेदी

पात्र :

रशीद : ३० वर्ष का एक नौजवान
रहीम : ३५ वर्ष का अधेड़
सदर : राष्ट्र का नुमाइन्दा
मुजीब : बंग बंधु मुजीबुर्रहमान

पहला दृश्य

समय : दिसम्बर ७१ का अन्तिम सप्ताह

(युद्ध की हार का असर हर चेहरे पर मुर्दनी लाये हुए है। आवाम की अनिश्चियात्मक स्थिति असंतोष की द्योतक है। शाम का अंधेरा छा चुका है। रहीम और रशीद चौराहे पर चर्चा

कर रहे हैं, इतने में रेडियो सुनाई पड़ता है :

······ऑल इंडिया रेडियो ने बताया है कि बराये नाम बंगला देश में हुकूमत संभालने के बाद हालात तेजी से बदलते जा रहे हैं। पर हमारा *नामानिगार कहता है कि जैसोर और मेमनसिंह इलाके में भुखमरी से कई मौतें हुई हैं। ब्लोचिस्तान में हुए उपद्रवों के बाद हालात पर सकून है। बराये नाम बंगला देश से जो भी देश ताल्लुक बनायेंगे उनसे हुकूमत पाकिस्तान अपने दोस्ताना ताल्लुक तोड़ लेगी*······सदर ने फैसला किया है कि मुजीब को रिहा कर दिया जायगा।······लीजिये······)

शीद : सुना तुमने रहीम भाई ! हुकूमत को बराये नाम बगला देश में भुखमरी की खबर मालूम है। ये गफलत की नींद सोते रहे और दुश्मन सरगोधा, मियांवाली, लाहौर, चकलाला और करांची को तहस-नहस कर गया—घर की भुखमरी का तो पता नहीं लेकिन बराये नाम बगला देश की खबरें नश्र की जा रही हैं। अगर चुनिन्दा लोगों को पहले ही सत्ता सौंप दी जाती तो ये खून-खराबा तो नहीं होता।

हीम : बिलकुल रशीद मियां—हमारी हुकूमत ने हमें भी मुगालते में रखा। जो रेडियो आज भीगी बिल्ली बना हुआ है जंग के दिनों में दहाड़ा करता था—हमने दुश्मन के इतने इलाके पर कब्जा कर लिया, हमारी फौजों ने फतह हासिल की, हमारी फौजें हावड़ा ब्रिज को पार कर कलकत्ता में घुस गईं लेकिन आज मालूम पड़ा हमें मुगालते में रखा गया।

शीद : अरे रहीम मियां हमारी एक भी तो चाल नहीं चली। गाजियों ने 'गाजी' को डुबो दिया—हमारे जहाज 'एडमंट मनीला' को काफिरों ने पकड़ लिया। 'मिनीजेडी' और 'मिनिसोफ' को भी नहीं छोड़ा। टाइगर नियाजी और फरमान अली के साथ एक लाख पाकिस्तानी जवान हिन्दुस्तानी फौज की गिरफ्त में आ गये। शुक्र है खुदा का कि टिक्का खां तो सही सलामत लौट आये।

ीम : कुछ बुरा बहुत हमारा टिक्का था कि—जब तक पूर्वी-पाकिस्तानी

में ये रहे किसी की जुर्रत नहीं हुई आंख उठाने की। मैं तो कहता हूं यह सब हमारे सदर की गलत नीतियों का नतीजा है। शुक्र की नमाज अदा करने के बाद ही तो हमने दुश्मन के इलाके पर कहर ढाया था।

रशीद : क्या खाक कहर ढाया था। वो दिन भूल गये जब करांची के पोर्ट पर पेट्रोल की आठ टंकियों में आग लगी थी। खुदा कसम ऐसा नजारा तो मैंने जिन्दगी में कभी नहीं देखा। सच-मुच कयामत आ गई थी! कयामत!!

रहीम : अरे मियां तुम कयामत की बात कर रहे हो! मुझे तो चार रोज पहले पता लगा था कि सदर अनकरीब ही किसी रात यहां से भागने वाले हैं। उन्होंने हैलीकॉप्टर अपने दौलत खाने की आखिरी मंजिल पर रिजर्व रखवा दिया था लेकिन हवा का रुख उनके माफिक नहीं आने से मौका नहीं मिला।

(एक जुलूस निकलता है, मुल्क के टुकड़े करने वालों को··· फांसी पर लटकाओ। आवाम को गफलत में रखने वालों को सूली पर लटकाओ। मुजीब को–छोड़ दो–चीन, अमेरिका–जिन्दाबाद, रूसी भारतीय मुर्दाबाद)

रशीद : देख लिया न जिसने संगीन की नोक पर शासन किया उसका परिणाम, देख लिया न मुल्क को बरबाद करने के इरादों का नतीजा–जिस चीन और अमेरिका को जिन्दाबाद कर रहे हैं उनके पिछलग्गू बनने का नतीजा। भारतीय रूसी–मुर्दाबाद–कब अक्ल आयेगी इनको, वो दिन याद करो जब हिन्दू-मुसल-मान भाई-भाई की तरह रहते थे।

रहीम : अरे मियां यह तो खुशकिस्मती समझो कि जंग बंदी हो गई नहीं तो फाके करने पड़ते। शुक्र है खुदा का वरना सातवें बेड़े के आने पर भी दुश्मन के हौसले बुलन्द थे। क्या गजब की नाके-बन्दी की थी। अरे हां एक बात तो कहना ही भूल गया। गुलहसन की अम्मा को सबसे बड़ा दुःख पान का है–पालक के पत्ते खाते खाते मुंह का जायका ही बिगड़ गया है।

रशीद : अरे मियां हुकूमत ने पाकिस्तान ईरान से पान बरामद करने

उस्ताद हैं ? पक्के हीरो है ! हीरो ! अब देखना हमारे उस्ताद कौनसा दाव खेलते हैं।

रशीद : भूल जाओ मियां उन दिनों को जब खलील खां फाख्ता उड़ाया करते थे। हिन्दुस्तानी जहाज जलाने का नाटक भी इन्होने खेला था, नतीजा देख चुके हो। अब ये सत्यानासी की जड़ बागी लीडर इस मुल्क से जितनी जल्द जाये उतना ही अच्छा है, कुछ राहत तो मिले।

रहीम : किबला अब तो जुम्मे के जुम्मे आठ दिन बाकी रह गये हैं शाहे ईरान के आने मे, देखें हमारे सदर क्या सौदाबाजी करते हैं इस बागी लीडर से।

रशीद : सौदाबाजी क्या करेंगे ! शाहे ईरान से कहेंगे : मेरे आका इस बड़े भाई को समझाओ, हमसे ताल्लुक न तोड़े। वे उस पर दबाव डालेंगे और बागी लीडर को रजामंद कर लेंगे। जब वे मान जायेंगे तो हिन्दुस्तानी फौजों को बिना किसी चूं चपड़ के मगरबी और मशरकी सेक्टर के पीछे हटना ही पड़ेगा।

रहीम : वाह क्या ख्याली पुलाव पकाया है रशीद मियाँ तुमने। बागी लीडर कागज का शेर नहीं है। अगरतला कांड मे उसे फतह हासिल हुई है। वो हमारे इरादे अच्छी तरह जानता है। शाहे ईरान तो क्या खुदा भी इस बिगड़ी खोंपड़ी को रजामंद नहीं कर सकता।

रशीद : चुनांचे इसे ही मुल्क का सदर बना दिया जाय तो मुमकिन है कुछ नतीजा हासिल हो।

रहीम : नामुमकिन ! अगर ऐसा होता तो मगरबी पाकिस्तान में बगावत ही क्यों होती, लाखों मौत के घाट न उतारे जाते, लाखों जहन्नुम की राह न देखते।

रशीद : तुम क्या जानो रहीम मियां ! ये तो हमारे सदर का एक प्लान था मगरबी और मशरकी सेक्टर की आबादी बराबर करने का जिसे हमने अमेरिका में तैयार किया और चीन से पास करवाया।

रहीम : पर ये प्लान तो सदर के बदलते ही बदल गया अब तो हम हम रह गये हैं। दोस्त भी देख लिये और दुश्मन की भी परख हो गई।

रशीद : दोस्त तो उकसाते रहे : चढ़ जा बेटा सूली पर, अल्लाह करम करेंगे। हम चढ़ गये सूली पर और भला हो गया दुश्मन का। सब कुछ तहस-नहस कर एक तरफा जंगबन्दी कर चुप बैठ गया। ये बात हमारी हुकूमत पहले ही मान लेती तो यह खून खराबा तो नहीं होता।

रहीम : तेल देखो तेल की धार देखो। हमारी जुबान तो हुकूमत की छुरी से ही सी दी गई है। शुक्र है खुदा का कि ६५ में तो दुश्मन लाहौर तक आ पहुंचा था अगर इस बार जोर लगाता तो इस्लामाबाद······

रशीद : धीरे बोलो रहीम मियां वरना काफिर कहलाओगे और जेल जाओगे। हुकूमत इतना सुनने को तैयार नहीं है। दीवारों के भी कान होते हैं। अगर किसी ने नाम लिखवा दिया तो बाल बच्चे भूखों मर जायेंगे।

रहीम : अच्छा अब रुखसत दें। खुदा हाफिज।

रशीद : खुदा हाफिज !

(दोनों विदा लेते हैं)

दूसरा दृश्य

स्थान : वह कोठरी जहां मुजीब कैद है।

समय : रात्रि, दो बजे।

(मुजीब अपनी कोठरी में टहल रहे हैं। बेचैनी उनके चेहरे पर साफ दिखाई पड़ रही है। उन्हें सूचना मिली है कि सदरे-पाकिस्तान उनसे गुफ्तगू करने आने वाले हैं।
सदर का प्रवेश। दोनों दुआ सलाम कर बैठ जाते हैं)

सदर : कहिये ! आपकी तबियत कैसी है ?

मुजीब : खुदा के फज़ल से ठीक हूं। क्या मैं जान सकता हूं कि आपने और आपकी हुकूमत ने मेरे बारे में क्या फैसला किया है ?

सदर : हुकूमत ने और आवाम ने आपको बाइज्जत रिहा करने का फैसला किया है।

मुजीब : तो क्या मैं आजाद हूं ? मैं आजाद हूं तो फिर मुझे क्यों नहीं अपनी मन पसंद जगह जाने देने का इन्तजाम किया जाता ?

सदर : (निहायत अदब के साथ) आप अपने ही वतन पाकिस्तान में आजाद हैं। आप चाहे जहां घूम फिर सकते हैं। रेडियो, अखबार, आपको मुहैया हैं। लेकिन हमारी एक दरख्वास्त है आप हम भाई-भाई हैं। आप चाहें तो इस मुल्क के सदर बनें पर हम क्यों दुश्मन के बहकावे में आकर अपने मुल्क के टुकड़े करें। शाहे ईरान हुकूमते पाकिस्तान की दरख्वास्त पर यहां आने वाले हैं। उनसे आपकी बात-चीत का प्रोग्राम भी है। आप चाहेंगे तो तुर्की या ईरान भिजवाने का इंतजाम कर दूंगा।

मुजीब : न तो मैं शाहे ईरान से बात करना चाहूंगा और न ही मैं तुर्की और ईरान जाना चाहूंगा। यदि मैं आजाद हूं तो मुझे ढाका भेजा जाय या हिन्दुस्तान। रही बात ताल्लुक बनाये रखने की वह मैं जब तक सोनार बांगला और वहां के आवाम से, अपने दोस्तों से और अपनी पार्टी लीडरों से मिल न लूं तब तक किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकता।

सदर : हमें खुशी है आप हमारे भाई-चारे के अन्दाज को समझ कर मुल्क को टुकड़े होने से बचा देंगे। मगरबी और मशरकी सेक्टर के साथ ताल्लुक बनाये रखेंगे।

मुजीब : मैं नौ महीने तक इस मुल्क में कैद रहा हूं। जब तक मैं अपने आमार सोनार बांगला की जमीन पर वापिस नहीं पहुंच जाऊं, वहां के हालात की जानकारी न ले लूं, आपको किसी बात का इतमीनान नहीं दे सकता।

सदर : सोचता हूं हम एक करार पर इस बारे में सुलह नामा तैयार

कर लें। हमारे ताल्लुक पहले·········

मुजीब : मैं किसी इकरार के हक में नहीं हूं।

सदर : अच्छा मैं आपको बिना शर्त रिहा करता हूं इस उम्मीद पर कि ढाका पहुंच कर आप हमारी मुश्किलों को आसान करने में हमें मददगार सिद्ध होंगे। कहिये आपको कहां पहुंचाने की व्यवस्था की जाय?

मुजीब : वहां से मुझे लाया गया है। यदि नहीं तो फिर मुझे लंदन पहुंचाने की व्यवस्था की जाय।

सदर : ढाका के हालात ठीक नहीं हैं वहां की आवाम हमारे साथ है लेकिन दुश्मन ने वहां घेरा डाल रखा है। हिन्दुस्तान से साथ हमारे ताल्लुक जंग के पहले ही टूट चुके हैं। लंदन आप जाना चाहें ·····पर बी. बी. सी. ने जंग के दौरान हम पर खूब कीचड़ उछाला है, कई बे-बुनियाद बातें बढ़ा-चढ़ा कर कही हैं फिर भी मैं आपको लंदन भेजने को रजामंद हूं। पर इतना विश्वास तो दिला दीजिये कि ढाका पहुंचने पर आप हमारी आरजू को पूरी करेंगे।

मुजीब : आज आप सदर हैं। मैं कल के सूरज का इन्तजार करूंगा। मैं सोचता हूं इस बारे में कोई-न-कोई मुकम्मिल हल निकल ही जायेगा।

(एक व्यक्ति आकर सदर को एक संदेश दे जाता है।)

सदर : आपको लंदन भेजने का इन्तजाम हो गया है। चलिये आपको रुखसत कर दूं।

मुजीब : शुक्रिया—

(सर्दी की ठिठुरती रात में सदर हवाई अड्डे तक पहुंचाने आता है— अलविदा कह कर मुजीब को हाथ हिलाकर विदा करता है। मुजीब जहाज में बैठते हैं। कुछ ही घंटों में जहाज लंदन उतरता है दो दिन लंदन रुकने के बाद ढाका जाते हुए दिल्ली रुकते हैं।)

तीसरा दृश्य

समय — अपराह्न

स्थान — पूर्वी बंगाल की राजधानी—

(यह खबर मिल चुकी है कि बंगबंधु मुजीब दिल्ली रवाना हो चुके हैं। कुछ ही मिनटों में ढाका में उतरने वाले हैं। इतने में एक विमान आकाश में उड़ता हुआ दिखाई दिया। विमान को देख कर लोग नाचने-कूदने लगे। सारा हवाई अड्डा जय बांगला, मुजीब जिन्दाबाद, आमार सोनार बांगला इन्दिरा गांधी जिन्दाबाद के नारों से गूंज उठा। जहाज उतरता है। कुछ ही क्षणों में बंगबंधु हाथ उठाकर सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए नीचे उतरते हैं। मंत्री-मंडल के लोगों का अभिवादन स्वीकार करते हुए खुली गाड़ी में रेसकोर्स मैदान में पहुंचते हैं।)

मुजीब . मेरे आजाद देश—आमार सोनार बांगला के भाइयों! जिन मुसीबतों को पार कर लाखों बंगला के सपूतों का खून देकर हमने आजादी हासिल की है। मैं आज आजाद बांगला की भूमि पर आप लोगों के बीच अपने आप को पाकर कितना खुश हूं। पर मुझे दुःख है इस बात का कि पाकिस्तान के सैनिकों ने कितने निर्दयी लोगों को मौत के घाट उतारा, कितनों को बे-घरबार किया। अब पाकिस्तान से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। अलबत्ता वहां के शासक बांगला देश की वास्तविकता समझ कर सलूक करें तो दोस्ताना ताल्लुक रखे जा सकते हैं। मैं शुक्र-गुजार हूं भारत की जनता और भारत की प्रधान मंत्री का जिन्होंने हमारे मुक्ति संग्राम में मदद दी। मैं शुक्र गुजार हूं रूसी सरकार और वहां की जनता का तथा अमेरिकी जनता का जिन्होंने हमें नैतिक समर्थन दिया। हम सभी अमन पसन्द लोगों को बांगला देश के पुनर्निर्माण के लिये सहयोग को स्वीकार करें जो बांगला देश को अपना समझेंगे………।

(रेसकोर्स मैदान के भाषण के बाद मुजीब अपने धानमंडी स्थित मकान में पहुंचते हैं। मुजीब जिन्दाबाद के नारों के बीच भीड़ छंटती जाती है और मुजीब से मिलने वालों की भीड़ बढ़ती जाती है।

राष्ट्रीय एकता

▣

भंवरसिंह

पात्र :

गोगोजी · प्रधानाध्यापक, राज. उ.प्राथ विद्यालय, गांव । जिला-अजमेर।
बलराम
धीरज
गुरमुखसिंह
शंकर
राहुल
जोजफ
मुहम्मद

[सभी छात्रावासी मित्र]

(समय–रात्री, स्थान–छात्रावास का एक कक्ष । बीच में लटके बल्ब का प्रकाश सारे कक्ष में फैल रहा है । अपनी–अपनी मेज पर झुके चार छात्र गृहकार्य करने में व्यस्त हैं ।)

नौरोजी : (उबासी लेकर चुटकी बजाते हुए) लो भाई, अपना गृहकार्य पूरा हुआ । धीरज, राहुल, बलराम कितनी देर है ?

बलराम : केवल एक प्रश्न शेष है–१९६२ और '६५ में भारत पर होने वाले आक्रमणों का तुलनात्मक विवेचन । (सिर खुजाते हुए) क्या उत्तर लिखा जाय ?

नौरोजी : इसमें कौनसी बात है । '६२ मे चीन ने और '६५ मे पाक ने भारत पर हमला किया ।

(गुरूमुखसिंह व शंकर का प्रवेश)

धीरज : '६२ में हमारी हार ? और '६५ में हमारी जीत

गुरुमुखसिंह : हमारी हार ? यह बात अपने गले नहीं उतरती । हमारी सेनाएँ अपराजेय हैं । यह कहो कि '६२ में हमने एक सबक सीखा और '६५ में उससे लाभ उठाया ।

शंकर : गुरुमुख स्यूँ निकली इक बात रो मैं समर्थन करूंला ।

राहुल : (बलराम से) हाऊ ! एक बात मैं भी कहूँ ?

बलराम : हाँ हाँ क्यों नहीं, थोड़ा–थोड़ा सब बताओ, मेरा प्रश्न हल कराओ ।

(वाक्यांश 'मेरा प्रश्न' कहते ही मुहम्मद और जोजफ का प्रवेश)

जोजफ : (थोड़ा हास्य के साथ, 'टर' पर विशेष जोर देते हुए) हल की जगह ट्रॅक्टर आ गये हैं, हलधर भैया !

बलराम : अभी वर्षाकाल दूर है दोस्त ! बीच मे टर टर कर डिस्टर्ब मत करो ।

(राहुल की ओर उन्मुख होकर) हाँ राहुल, तुम क्या कह रहे थे ?

राहुल : '६२ में हम उस धरती के लिये लडे जहां घास तक पैदा नहीं होती ।

मुहम्मद : भारत के भावी वकील का दिमाग खूब काम करता है पर

धीरज : (अफसोस की मुद्रा मे सिर पर हाथ लगाकर) वाह भई वाह ! तुम मां का महत्व ही नहीं समझते । देखो गीत की यह पंक्ति—

'हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें माता का प्यार नहीं ।' कितनी सुन्दर है ।

मुहम्मद : उसे कोई लूटना चाहे, उस पर हाथ उठाये तो ?

धीरज : (दृढ़तापूर्वक) तो, तो मैं उसका हाथ तोड़ दूंगा ।

मुहम्मद (धीरज की पीठ पर हाथ फेरते हुए) शाबाश, जो बात मां के लिये लागू होती है वही मातृभूमि के लिये भी लागू होती है । हिन्दुस्तान हमारी मातृभूमि है । उस पर हाथ उठाने वाले का हाथ तोड़ना ही हमारा फर्ज है ।

शंकर : इस बात पे मने भी एक बात याद आई, संस्कृत मे ।

अपि स्वर्णमयी लंका लक्ष्मण न मे रोचते ।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

जोजफ : जिसे सब समझें, वह भाषा बोल ।

शंकर : रावण को मारने के बाद राम लक्ष्मण अपने सहयोगियो के साथ उस सुवरनमयी नगरी में घूम रहे थे । लक्ष्मण लंका की चकाचौंध से प्रभावित होकर उसकी प्रशंसा करने लगे । प्रशंसा अतिशयोक्ति की सीमा लांघ रही थी । इस पर राम ने उपरोक्त पंक्तियाँ कहीं, जिसका आशय है—

'हे लक्ष्मण, मुझे यह सोने की लंका अपनी जन्म भूमि के सामने बिल्कुल फीकी लगती है । माता और मातृभूमि का महत्व स्वर्ग से भी बढ़कर है ।'

धीरज : आज तुमने मेरा अन्धकार दूर कर दिया । वृद्धा होते हुए भी माता आदरणीय है उसी तरह देश का निरर्थक भाग भी हमारी श्रद्धा-भक्ति का अधिकारी है ।

राहुल : मैं अब तक जरा-जरा सी भूमि के लिये धन-जन की हानि व्यर्थ समझता था । किन्तु शांति के नाम पर माता का अपमान सहना सचमुच कायरता की पराकाष्ठा है । मां, मां ही है । उसका दर्शन ईश्वर में ही किया जा सकता है ।

[illegible] की इस पंक्ति में यही बात है
"हे मातृभूमि ! तू सच ही मधुर पूर्ण सजीव है।"

जोसफ : साथियो, अब मिलकर एक बार भारत का जयघोष करें। भारत माता की जय—

सब : जय हो।

जोसफ : चलो, अब खेलने की तैयारी करें।
(सभी बाहर मैदान में आते हैं)

नौरोजी : मेरे सामने अब भी एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु बचा है।

जोसफ : वह क्या ?

नौरोजी : यह ठीक है कि भारत हमारी जन्म-भूमि है लेकिन अगर या कश्मीर पर आक्रमण हो तो हम वहां लड़ने क्यों जायें ? स्थानीय लोगों को ही उस आक्रमण का मुकाबला करना चाहिये।

मोहम्मद : प्रश्न वास्तव में काबिले गौर है।

धीरज : बात यह है कि—
(इसी समय नौरोजी के पाँव में काटा चुभ जाता है। सिस-कारी के साथ नौरोजी वहीं बैठ जाता है और काटा निकालने के लिए हाथ बढ़ाता है)

धीरज : (नौरोजी को रोकते हुए) अररर ! हाथ को क्यों कष्ट देते हो नौरा ? पाँव से कहो न, वही कांटा निकाल ले।

नौरोजी : कहीं पांव भी अपना कांटा स्वयं निकाल सकता है ? हाथों की मदद आवश्यक है।

धीरज : (कांटा निकाल कर नौरोजी की पीठ पर हाथ रखते हुए) नौरा ! जिस तरह पांव का कांटा निकालने के लिए हाथ की सहायता जरूरी है उसी प्रकार देश के किसी भी भाग पर आक्रमण होने की स्थिति में दूसरे राज्यों की मदद आवश्यक है।

राहुल : बिल्कुल ठीक, जैसे हाथ-पांव, आंख-कान आदि अंगों से मिल कर शरीर बनता है उसी तरह ये अलग-अलग राज्य एक ही देश के हिस्से हैं।

जोसफ : जिस तरह पांव में कांटा चुभने से सारा शरीर तिलमिला

उठता है उसी तरह नेफा या कश्मीर पर होने वाले आक्रमण से सारा राष्ट्र बेचैन हो उठता है।

गुरमुखसिंह : सांप को मारने के लिए शरीर की सारी शक्तियां जुट जाती है वैसे ही शत्रु को कुचलने के लिए राष्ट्र की समस्त शक्तियां एक जुट हो जानी चाहियें ।

नौरोजी : मतलब यह हुआ कि शरीर की तरह सारा राष्ट्र भी एक है।

जोजफ : हां शरीर और राष्ट्र की स्थिति समान है।

मोहम्मद : समझ में नहीं आता, फिर अलग-अलग राज्यों की मांग क्यों की जाती है ?

गुरमुखसिंह : मेरा विचार है, यह अलगाव का अलाव जलाकर स्वार्थी लोग अपना पुलाव पकाने के चक्कर में रहते हैं।

शंकर : हलकाई बातां हलकी किया करै। ऐडा भाव आपणा देश ने कमजोर करेला। ऐड़ी बातां मनस्यूं निकाल देणी चइजे।

धीरज : क्षेत्रीय स्वार्थ ऐसा छिद्र है जो प्रगति की नैया को डुबो देगा।

राहुल : अलबत्ता हमारे देश मे धार्मिक कट्टरता की जड़ें अवश्य गहरी हैं।

शंकर : हां, तिलक लगा पंडित कहलाया, दाढ़ी रख कर मुल्ला ।
चर्च चला ईसाई बनकर, पंच करार बाज का छल्ला ॥

नौरोजी : देखा जाय तो सारी खुराफात की जड़ मनुष्य की भेद नीति है।

जोजफ : और क्या ! नर्सिंग होम मे जाकर देखिये-बच्चा जब इस दुनिया में आता है वह न चोटी रखने का आग्रह करता है और न दाढ़ी रखने का। हम ही उस पवित्र आत्मा को धार्मिक कट्टरता के कीचड़ में डाल कर बदसूरत बना देते हैं। धरती पर आते समय बच्चा--

शंकर : न हिन्दू होता है,

मुहम्मद : न मुसलमान ।

राहुल : न बौद्ध होता है,

धीरज : न जैन ।

गुरमुखसिंह : न सिक्ख होता है,

मीनाक्षी : न पारसी
जोसफ : और न ईसाई।
गुरुचरणसिंह : खून ही देखो, सबका लाल है।
मुहम्मद : खुदा ने सबको समान बनाया है। हम सब एक हैं।
श्रीधर : प्रतिज्ञा करो हम सब इसी एकता का प्रचार करेंगे, भावनात्मक एकता बनाये रखेंगे।
सब : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सदा एक रहेंगे और भावनात्मक एकता बनाये रखें।
शंकर : जो भिन्न धरम, जाति या भाषा के नाम पर मतभेद में बढ़ावा देगा हम सभी उसका विरोध करेंगे।
सब : हम सब सहमत हैं।
(नेपथ्य में—'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' की ध्वनि)
परदा गिरता है।

मेरे अपने ही साये

मुरारीलाल कटारिया "मौन"

पात्र :

योगेन्द्र : एक युवक, २५ वर्षीय, कुकर्मों में लथपथ

नर्तकी : उसकी कुकर्मों के प्रति लालसा प्रतीक

मित्र

रमणी (पत्नी)

दृश्य—एक

[सजा हुआ कक्ष । चारों दीवारों पर चार विभिन्न रंग फेंकते शमादान छत के बीचों-बीच रंगारंग शमादान-गुच्छ । फर्श पर कालीन । एक ओर मसनद, सामने प्रवेश द्वार, बगल-बगल द्वार । पच्चीस वर्षीय पतला-दुबला-गौरवर्ण-नवयुवक; इधर-उधर विचरता, फिर दरवाजे की ओर निहारता है]

नर्तकी : (कंपित-हृदय से) रुक जाओ।
योगेन्द्र : (आश्चर्य) क्यों ?
नर्तकी : (हमी लिये व्यंग्य) नागिन के विष का पता नहीं !
योगेन्द्र : (ठठा कर हँसते हुए) वह तो मेरी नस-नस में व्याप्त होकर मुझे ही नाग बना बैठा है !
(वह उसकी ओर बढ़ता है; नर्तकी भी रोकती नहीं।)
[पर्दा गिरता है]

दृश्य—दो

[पूर्व कमरा। एक ही दीवार पर शमादान। कमरा खाली-खाली सा। प्रवेश द्वार बन्द। वह कमरे के मध्य जीर्ण पलंग पर लेटा हुआ। पलंग के बाईं ओर एक मेज व स्टूल। मेज पर धूल जमी हुई है और लोटा एवं गिलास रखा है।]

योगेन्द्र : उफ; सब कुछ लुट गया ! बस, अब तो पीड़ा ही पीड़ा रग-रग में व्याप्त है। शरीर टूट रहा है। कोई भी तो नहीं, जो मेरी पीड़ा बाँट ले। कोई नहीं; कोई नहीं !
(अर्द्ध मूर्छित)
(कुछ क्षण बाद बाईं ओर के दरवाजे से 'मित्र' का प्रवेश।)
मित्र : मित्रवर ! कहो क्या पीड़ा है ?
योगेन्द्र : (आँखें अधखुली, साश्चर्य) क्यों आये हो यहां ?
मित्र : मित्रवर, मित्रता की कड़ी जोड़ने आया हूं !
योगेन्द्र : मित्रता ! कौन मित्र ? असंभव, बिल्कुल असंभव ! तुम आये हो, तो सिर्फ विष बुझे तीरों से शरीर को छलनी करने !
मित्र : शिव-शिव ! उफ; पीड़ा की असह्यता ने, रोगों की दुर्गंध ने तुम्हें वस्तु-स्थिति से दूर ला छोड़ा है ! लेकिन दोष मुझ में है, जो मुझे अपना नहीं समझ रहे !
योगेन्द्र : क्या ? अपने पर दोष लगा रहे हो ?
मित्र : खैर, जो भी हो ! अन्य बातों से पूर्व, जिस कार्य सिद्धि हेतु आया हूं, वह तो कर लेने दो !
योगेन्द्र : क्यों आये हो ?

मित्र : तुम्हारी सेवा हेतु।

योगेन्द्र : सेवा करोगे या फिर दवा के नाम पर जहर पिला दोगे!

मित्र : कुंठित विचार में फंसे मेरे मित्र खाक की सीमाओं को तहस-नहस कर दो। खाक की सीमा के पार की वस्तु-विशेष को पहचानो!

योगेन्द्र : (आश्चर्य) क्या है वह?

मित्र : लहलहता विश्वास रूपी उद्यान! चहचहाता परिश्रम, खिलता साहस, प्राकृतिक सत्य! अन्धेरे की कालिमा को प्रकाशमान करती चमक-दमक के परे भी कुछ है?

योगेन्द्र : ऊं—हूं, क्या है चमक-दमक के परे?

मित्र : आत्मा, कर्मों की वाणी से उद्वेलित! हम कुकर्मों में फंसकर चकाचौंध की ओर भागते हैं, जहां मिलती है खाक ही खाक! हम कुकर्मों के परिणाम को जानकर भी आंख मूंद लेते हैं, घृणित होने पर भी आलिंगन करते हैं, केवल मात्र वासना-पूर्ति, स्वार्थ सिद्धि हेतु!

योगेन्द्र : ओह; मित्र? दम घुटा जाता है। अब तो जीने की बिल्कुल तमन्ना ही नहीं! जहर का एक घूंट पिला दो तृप्त हो जाऊं!

मित्र : शिव-शिव! जहर दे दूं! कर्मों की आग में झुलसते अब इति की चाह! उस समय क्या हुआ था, जब इस अग्नि में प्रवेश किया था?

योगेन्द्र : बस-बस! व्यंग्य के तीर छोड़ कर शरीर छलनी मत करो। (गहरी सांस लेकर) मैं पहले ही कह रहा था कि व्यंग्य के अलावा तुम्हारे पास रखा ही क्या है?

मित्र : मित्रवर! ये व्यंग्यात्मक तीर नहीं, वरन् विकृति को मिटाने वाले तीर हैं, आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति के पथप्रदर्शक!

योगेन्द्र : चलाओ तीर, व्यंग्य, अब सहा नहीं जा रहा है।

मित्र : फिर से भटकने के लिये? (बात बदलकर) अच्छा लो, पी लो दवा। उठने के बाद शान्त मस्तिष्क से मनन करना। (आंखें मूंदे दवा पीकर शैया पर लेट गया)

[पर्दा गिरता है।]

दृश्य–तीन

(पूर्वानुसार कक्ष में सफाई व सादगी का पुट। वह भी रकी वेला की चिड़ियों की चहचहाहट में जाग उठता है! आँखें कुछ खोजती हैं; वह अपने प्यार को सौम्य–सादगी व पवित्रता की प्रतीक रमणी की गोद में पाकर आत्म–विभोर हो उठता है। दाहिना द्वार खुला पड़ा है।)

योगेन्द्र : "मैं कहाँ हूँ ?"

रमणी : अपने ही घर में ! ये क्या हाल बना रखा है ? इस घर में मेरे पदार्पण ने घर भर को अभिशप्त कर डाला है !

योगेन्द्र : (विह्वलता पूर्वक) नहीं–नहीं ! कारण तुम नहीं, मैं स्वयं हूँ ! भटक रहा था मृगतृष्णा की खोज में जलता रहा हूं, जंगली काँटों मे ! नहीं–प्रिये, अब तो जीने की चाह नहीं रही !

रमणी : नहीं–नहीं। ऐसा नहीं कहते ! जीवन ही मनुष्य की पहचान है ! जीओ, कलात्मक जीवन जीओ !

योगेन्द्र कलात्मक जीवन को तो मैंने वासना मे डुबो दिया ! मित्रों को मेरे अविश्वसनीय कर्मों ने दुश्मन बना छोड़ा ! तुम जैसी सौम्य चरित्र का साथ छोड़ बैठा हूं, क्या मुझे कलात्मक जीवन बिताने मे साथ······! उफ, फिर वही अविश्वास की लहर ! क्या करूं मैं ? कुछ भी ·· ··(रमणी ने उसके मुँह पर हाथ रखकर उसे आगे बोलने न दिया)

रमणी सब कुछ जो मेरा है, वह आपका है और जो कुछ भी आपके विचार से आपके सामने है, वह और कुछ भी नहीं आपके ही साये है ! मैं तो आपके पद की धूल बन कर रहने को तैयार हूं।

योगेन्द्र : पूजित, पद-दलित, पंकज की पद धूलि नहीं देवी; सिर की शोभा बन पथ प्रदर्शक बन जाओ ! अब तो मुझे कलात्मक जीवन जीने की कला आ जावेगी !

(रमणी के प्रतीक का धीरे-धीरे विलुप्त होना। आँखें मीञ्चित होते-होते, बायीं ओर का द्वार खुलने से चौंक कर उठ पड़ना)

(मित्र का प्रवेश, वह उठ खड़ा हुआ और गले मिला)

मित्र : वाह, मित्र हो तो तुम जैसा !

योगेन्द्र : बिलकुल गलत बोला। मित्र हो तो तुम जैसा ?

मित्र : चलो छोड़ो ! वो देखो सामने।

योगेन्द्र : (मुड़कर देखना) आगई प्रिये !
योगेन्द्र के चरणों में पत्नी आशीर्वाद हेतु झुकती है, योगेन्द्र उसे बाहों में भर लेता है।)
(छम-छम की आवाज के साथ नर्तकी का प्रवेश !)

योगेन्द्र : (क्रुद्ध होकर) तुम क्यों आई हो, घर जलाकर भी खुश नहीं हुई ? अब……

पत्नी : (बात काटकर) इसे मैं लायी हू ! कला को वासना ने ढक लिया, तो इसमें इसका क्या दोष ? प्रायश्चित की आग इसे सोने की तरह चमका देगी।

योगेन्द्र : खूब, बहुत खूब ! मैं भूल ही गया कि ये तो मेरे अपने ही साये है ! (सब के चेहेरों पर मुस्कान)
पर्दा गिरता है।

महिला का रूमाल

मानन्दराज श्री पुरोहित

पात्र

पति – मायु लगभग ३० वर्ष, उच्च माध्यमिक विद्यालय में विज्ञान का मध्यापक)

पत्नी (सुशीला मायु लगभग २५ वर्ष)

सरिता सुशील की मित्र तथा उसी उच्च माध्यमिक विद्यालय में विज्ञान की मध्यापिका । सुशीला के यहां उसका प्रायः नियमित माना-जाना है। मायु लगभग २७ वर्ष।

पति : जाने दो सुशीला ! मैं कहता हूँ मब जाने भी दो।

पत्नी : (सिसकियाँ भरते हुए) कैसे जाने दूँ। मेरा तो कलेजा चीर के रख दिया है मापने। तन बदन मे माग लगा दी है मेरे...

पति : फिर वही, मैं कहता हूं सुशीला ·····

पत्नी : मेरा नाम लेने की जरूरत नहीं। मैं आपकी कौन होती हूं।

पति : मेरी बीबी होती हो।···सौ गवाहों के बीच······

पत्नी : थी। अब नहीं हूं। सौ गवाहों के बीच नहीं हूं। अब क
आपकी बीबी बनेगी जिस कलमुंही चुड़ैल का ये रूमाल आ
आपकी जेब में रख जाते हैं।

पति : फिर वही रूमाल, मैं कहता हूं सुशीला मुझ पर यकीन करो
मुझे नहीं मालूम यह कमबख्त कहां से आ गया है।

पत्नी : कहां से? मेरी उस मोर ने रखा है और कहां से। देखिए
आप सब बता दीजिए। मैं हाथ जोड़ती हूं। मैं आपसे कुछ
नहीं कहूंगी।

पति : मैं सच कहता हूं सुशीला! तुम कहो उसकी कसम खाकर
कह दूं, मुझे नहीं मालूम।

पत्नी : नहीं मालूम तो बस ठीक है। आज से मेरा रास्ता अलग,
आपका अलग। मैं जैसे भी होगा गुज़र कर लूंगी।

पति : तुम बेकार परेशान हो रही हो, सुशीला। कहीं प्रयोगशाला में
या बस में किसी ऐपरन में लिपटा चला आया होगा।

पत्नी : आपके कोट में था। पेण्ट तो आपकी ज्यों-की-त्यों है। मैं
कहती हूं मुझे ज्यादा बेवकूफ मत बनाइये। सच-सच बता
दीजिये, मैं एक बार फिर कहती हूं। मुझे कोई शिकायत नहीं
होगी।

पति : ओहो, सौ बार कह चुका हूं मुझे कुछ नहीं मालूम। अब अगर
परेशान करोगी तो ·····

पत्नी : तो आप घर-बार छोड़ कर उसके पास चले जायेंगे जिसने
अपनी मुहब्बत की निशानी·········

पति : फिर वही रूमाल।

पत्नी : और नहीं तो क्या—आप मेरी छाती पर मूंग दलें और मैं चुप
रहूं। मैं भी सोचती थी ये घर का घर क्यों नहीं समझते।
जब भी कोई बात कहीं काट दी। कुछ मांगा तो पैसे का
रोना ले बैठे। यह मालूम नहीं था कि लोगों के लिए छोड़के

खरीदने में रुपया उड़ जाता है।

पति : किसके लिए सुशीला, और कैसे तोहफे! तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है।

पत्नी : हां मेरा दिमाग खराब है। सच्च बात कहने वालों का हमेशा दिमाग खराब रहता है। आप धर्म से कहिये, कभी हमारा ख्याल भी आया आपको-कि यों न सही, तीज, त्यौहार के दिन ही कोई दो पैसे की चीज भी लायें। दशहरे पर मुंह फाड़ के एक साड़ी के लिए कहा तो ऐसे गोल कर गये जैसे सुना ही नहीं। सुनते भी तो कैसे, कानों मे तो हर समय उसके बोल गूंजते रहते हैं। हमारी कड़वी-कसैली बातों की गुंजाइश कहा?

पति : भई, तुम्हें मालूम तो है, दशहरा महीने की आखिरी तारीख मे आया था वर्ना ·········

पत्नी : वर्ना क्या? दर्जनों त्यौहार ठीक पहली तारीख को आये थे और निकल भी गये जब देखो खाली हाथ लटकाये चले आ रहे है।

पति : अब बस भी करो बाबा। दीवाली पर जो कहोगी ला दूंगा।

पत्नी : पहले तो नहीं लाके दिया। आज चोरी पकड़ी गई तो ऐसे दब्बू बन गये हैं कि जो कहोगी ला दूंगा। मैं सब समझती हू। आप समझते हैं इन चकमों में आकर मैं रूमाल की बात भूल जाऊंगी। देखिये भगवान के लिए बता दीजिये। मेरा दिल और मन दुखाइये। यह रूमाल कहां से मिला आपको।

पति : फिर वही रूमाल।

पत्नी : मुझे कुछ नही चाहिये, न साड़ी, न ब्लाऊज, न सैण्डल। मैं चीथड़ों में ही जी लूंगी। बस इतना बता दीजिए। यह रूमाल आपके कोट में कैसे आया। सच, सच, बता दीजिए। आदमी से गलती हो ही जाती है।

पति : नहीं सुशीला, मुझसे ऐसी गलती नहीं हो सकती। आखिर तुम मे ऐसी क्या कमी है जो मैं बाहर भटकूंगा। हां, यह मेरा कसूर है कि मैं ... कभी कुछ नहीं लाया। देखो जो हो गया सो हो ... पर ही वर्षों में आज

हूं......बल्कि अभी तुम्हारे लिए मैं सब चीजें लाता हूं जिनका नाम तुम मुझे गिना जाती हो।

पत्नी : रहने दीजिये ! मैं कहती हूं रहने दीजिये मुझे नहीं चाहिये कुछ भी।

पति : मैं अभी आता हूं।

(पति का प्रस्थान। सामने की विज्ञान अध्यापिका सरिता का प्रवेश)

विज्ञान-अध्यापिका : ऐ बहिन जी, सुशीला जी, सुनो, जरा दरवाजा खोलो। क्या बात थी ? किस बात का झगड़ा हो रहा था ?

सुशीला : (हंसते हुए) झगड़ा ! कैसा झगड़ा ?

विज्ञान अध्यापिका : मुझे मत बनाओ। मैं सब सुन रही थी, क्या तो मुझ से कहा करती हैं कि मर्द जात ही ऐसी है इस पर विश्वास करना अपने पैरों को जमीन से हटाना है।

सुशीला : ठीक ही तो कहती थी। आज पता नहीं किसका रूमाल जेब में लगाते चले आये। (हंसते हुए) लेकिन मैं तो सब बात निकालने के लिए झगड़ रही थी—झगड़ थोड़े ही रही थी, गुस्से का नाटक कर रही थी।

सरिता : (प्रसन्नचित्त होकर) तो क्या यह सब तुम्हारा नाटक था ?

सुशीला : और क्या ? पर आखिर यह रूमाल था किसका ?

सरिता : क्यों नहीं कहती कि तुम्हारे विश्वास के नीचे शक का कांटा भी है। है न यह बात ?

सुशीला : (गर्दन हिलाकर स्वीकार करती है फिर जैसे अपने कार्य के औचित्य को साबित करते हुए कहती है) शक सही हो या गलत, पर सावधानी और चौकसी तो जरूरी है।

सरिता : (ताली बजाकर) बस ! देख लिया तुम्हारा विश्वास। वह रूमाल तो मैंने जानकर उनकी जेब में रखा था। वह प्रयोग-शाला में लड़कों को कुछ बता रहे थे, उनका कोट कुर्सी पर अलग टंगा था, मैंने चुपके से रूमाल उनकी जेब में रख दिया। अब बताओ कौन दोषी है ? ये या तुम

सुशीला : (विज्ञान अध्यापिका को बाहों से पकड़ कर) तुम !

(दोनों जोर से खिलखिला कर हंसती हैं।)

०००

खिलजी का नासूर

सुरेन्द्र 'अंचल'

पात्र :

अलाउद्दीन खिलजी : हिन्दुस्तान का बादशाह
नुसरत खाँ : सिपहसालार
गुलशन बानो : खिलजी के हरम की बांदी
कान्हड़ देव : जालोर के राजा
रहमत खाँ : हवलदार

[शाही हरम, दीवारों पर अंकित भव्य प्राकृतिक दृश्य, एक ओर ढाल और कृपाणें टंगी हुई। मध्य में पर्यंक। पार्श्व-पीठिका पर घटका एवं प्रहारक टंगे हैं पर्यंक ठीक सामने एक अन्य पीठिका पर नक्काशीदार रजत सुराही पड़ी है। बादशाह पर्यंक पर मसनद के सहारे अधलेटे हुए………हाथ में मद-पात्र]

हो......बल्कि अभी तुम्हारे लिए वे सब चीजें लाता हूं जिसका लाना तुम मुझे दिया करती हो।

पत्नी : रहने दीजिये ! मैं कहती हूं रहने दीजिये मुझे नहीं चाहिये कुछ भी।

पति : मैं अभी आता हूं।

(पति का प्रस्थान। शाला की विज्ञान अध्यापिका सरिता का आना)

विज्ञान-अध्यापिका : ऐ बहिन जी, सुशीला जी, सुनो, जरा दरवाजा खोलो। क्या बात थी ? किस बात का झगड़ा हो रहा था ?

सुशीला : (हंसते हुए) झगड़ा ! कैसा झगड़ा ?

विज्ञान अध्यापिका : मुझे मत बनाओ। मैं सब सुन रही थी, आप तो मुझ से कहा करती हैं कि मर्द जात ही ऐसी है इस पर विश्वास करना अपने पैरों को जमीन से हटाना है।

सुशीला : ठीक ही तो कहती थी। आज पता नहीं किसका रूमाल जेब में लगाये चले आये। (हंसते हुए) लेकिन मैं तो सब बात निकालने के लिए झगड़ रही थी—झगड़ थोड़े ही रही थी, गुस्से का नाटक कर रही थी।

सरिता : (प्रश्नवाचक होकर) *तो क्या यह सब तुम्हारा नाटक था ?*

सुशीला : और क्या ? पर आखिर यह रूमाल था किसका ?

सरिता : क्यों नहीं कहती कि तुम्हारे विश्वास के नीचे शक का कांटा भी है। है न यह बात ?

सुशीला : (गर्दन हिलाकर स्वीकार करती है फिर जैसे अपने कार्य के औचित्य को साबित करते हुए कहती है) शक सही हो या गलत, पर सावधानी और चौकसी तो जरूरी है।

सरिता : (ताली बजाकर) बस ! देख लिया तुम्हारा विश्वास। *यह रूमाल तो मैंने जानकर उनकी जेब में रखा था। वह प्रयोग-शाला में लड़कों को कुछ बता रहे थे, उनका कोट कुर्सी पर अलग टंगा था, मैंने चुपके से रूमाल उनकी जेब में रख दिया।* अब बताओ कौन दोषी है ? वे या तुम

सुशीला : (विज्ञान अध्यापिका को बाहों से पकड़ कर) तुम !
(दोनों जोर से खिलखिला कर हंसती हैं।) ●●●

उसे तुर्क खिलजी ने हाथी के पावों तले कुचल दिया .... और......और रण थम्भोर की फतह जैसे नामुमकीन काम को भी मुमकीन कर दिखाया ! मुल्तान के सुल्तान ने भी इस तलवार का पानी माना है...... मगर......[दासी का प्रवेश] क्या खबर है ?

बांदी : हुजूर, सिपाहसालार नुसरत-खा ने फतह का पैगाम पहुंचाया है !

खिलजी : इस वक्त खिलजी को जाम चाहिये...... पैगाम नहीं......! जाओ !......ठहरो नुसरत खां आ गये न ?...... बहुत खूब, जलाली अमीरों पर फतह ! बांदी...... नुसरत खां को बाअदब यहां हरम में पेश किया जाय ......अभी......!

बांदी : हुजूर गुस्ताखी माफ हो ! ...... यहां ?

खिलजी : हां, यहां, नुसरत खां जैसे बहादुरों की कद्र करना खिलजी जानता है–हम उससे यहीं मुलाकात चाहेंगे ।
[बांदी का प्रस्थान–बादशाह बेचैनी से घूमते है ।]
सल्तनत, मान और मर्यादा के कच्चे धागे से नहीं कायम रहती, तलवार की नोंक से चलती है ।

[बांदी का प्रवेश]

बांदी : सिपहसालार नुसरत खां खिदमत मे हाजिर होने की इजाजत चाहते हैं ।

खिलजी : बाअदब इजाजत है ।
[बांदी का प्रस्थान–सिपहसालार नुसरत खा का प्रवेश]

सिपहसालार : शहेंशाहे हिन्दुस्तां नाचीज नुसरत आदाब पेश करता है ।

खिलजी : नुसरत खा, तुमने बागी, जलाली अमीरों पर काबू पाकर बहुत बड़ा काम किया है । हमें तुम जैसे वफादार बहादुरों पर फक्र है ।

सिपहसालार : जिल्ले इलाही का इकबाल बुलन्द हो ! सभी जलाली अमीरों के ख्वाब नेस्तनाबूद कर दिये गये हैं । उनकी दौलत जब्त कर शाही खजाने में ले ली गई है ।

खिलजी : शाबाश ! इसी बहादुरी से तो सारे मुल्क का जलाल मेरे

मेरे मन में है ……………[विरिय मुद्रा]…मगर……

मिरहुलमार : मगर क्या हुजूर ?

खिलजी : मगर एक अरसे से जालोर वहाँ के राजा कान्हड़देव ने हम से गुस्ताखी की है। उन्होंने हमें भरे दरबार में ठोकर दी है कि दुनिया में सात जिसने बातें दसीन पमी लिया है !

मिरहुलमार : (तलवार पर हाथ रखकर) जालोर के राजा की यह गुस्ताखी मैं देख लूंगा। जालोर की ईंट से ईंट बजा दूँगा !

खिलजी : शाबाश ! तुम्हारी बातुओं पर मुझे पूरा यकीन है। जाओ, अपनी फौजों पर फतह की खुशी में आज रात जश्न मनाओ !

मिरहुलमार : जो हुक्म परवर दिगार ! (कोर्निश, प्रस्थान)

खिलजी : (स्वगत) हूं, 'कड़ा' में अलाउद्दीन की गर्दन उड़ाकर तख्त पर बैठने वाले खिलजी का हौसला, कान्हड़ की चुनौती से पस्त नहीं हो सकता-मगर राजपूत बला के बहादुर होते हैं। [नीचे पड़े हुए प्याले को उठाकर शराब भरता है] आ अंगूरी, आ तू ही मेरे गम को गलत करने वाली दवा है……

(दासी का प्रवेश)

दासी : हुरे हिन्दुस्तां, गुलशन बानो हुजूर की कदम बोसी की इजाजत चाहती है।

खिलजी : गुलशन को हमारी इजाजत की जरूरत क्यों पड़ी ? उसे बा अदब पेश करें।

(दासी का प्रस्थान-गुलशन का प्रवेश)

गुलशन : (झुक कर सलाम करती हुई) हुजूर का इकबाल बुलन्द हो। दासी हाजिर है।

खिलजी : गुल, तुम दासी नहीं, हमारे लख्ते जिगर के खून का एक कतरा हो-धड़कन हो-पूंसार तुर्क अलाउद्दीन को इस गुल के आगोश में ही राहत मिलती है—आओ गुल ! आओ मेरी साकी !
[गुल हाथ से प्याला लेकर उसे आसव से भरकर पिलाती है]

गुल : हुजूर की इनायत है ! आज सारा मुल्क हुजूर के इकबाल को कोर्निस करता है; फिर हुजूरे आला की इस बेरुखी का सबब

पूछने की गुस्ताखी कर सकती हूं।

खिलजी : गुल ! मत कुरेदो हमारे जख्मे जिगर को ! मत जगाओ मेरे भीतर सोये जानवर को।.........आज उस गुस्ताख राजा कन्हड़ देव ने हमें चुनौती दी है......और हम राजपूतों की चुनौती का मतलब खूब समझते हैं। यह चुनौती नासूर की तरह मेरे दिलो-दिमाग में रिस रही है।

गुलशन : या अल्लाह ! कन्हड़ देव की कयामत कैसे आ गई ?

खिलजी : मैंने रणथम्भौर, चितौड़ और मुल्तान को रौंद डाला। जलाली अमीरों को कुचल डाला। हमने दरबार में बातों ही बातों में कह दिया था कि हिन्दोस्तां का जर्रा-जर्रा मेरी तल-वार का पानी मानता है। ऐसा कोई वीर नहीं बचा जो खिलजी की तलवार से अपनी तलवार टकरा सके ! इस पर जालौर के राजा कन्हड़ देव उठ खड़े हुए और बोले-हुजूर, ऐसा मत कहिये—इस देश की वीरता मर नहीं सकती। राज-पूती आन को चुनौती मत दीजिये ! क्षत्रीय पृथ्वी से खतम नहीं हो गये हैं।

गुलशन : ऐसा ?

खिलजी : हां गुल देख तो उसका हौसला। [दो घूंट पीकर] मैंने उसे कहा—तो जालौर में है इतना हौसला ? कन्हड़ देव ने बड़ी सब्र से मुस्कराकर कहा-शाहशाह हुक्म करें तो कन्हड़ तैयार है ! खुद आजमा कर देख लेवें। किसी भी समय !

गुलशन : ओह ! कन्हड़ देव के इस बुलन्द हौंसले की दाद देनी चाहिये। हुजूर बे-फिक्र रहें। उसे तो यह नाचीज बांदी ही हुजूर के सामने बन्दी बनाकर पेश कर सकती है।

खिलजी : गुल !......शाबाश ! [सोचकर] तो ठीक है...... मेरी दासी गुलशन ......नहीं मल्लिका गुल पचास हजार सिपाही लेकर जालौर जायेगी और गुस्ताख को पकड़ कर ले आयेगी।

गुलशन : उसने मेरे हुस्न का भी मजाक उड़ाया था। एक दिन कहा था कि हमारे मारवाड़ के हुस्न के सामने गुलशन कुछ नहीं है। ......मैं उसकी मूंछ मुड़वाकर बता दूंगी कि गुल भी किसी

राजपूतनी से कम नहीं है।

खिलजी : गुल ! पिला ! खूब पिला ! खिलजी के पास अब सब गुल-शन व अंगूरी है, अब तक और कुछ नहीं चाहिये।
[पास ही मसनदी पीठिका पर प्रमाद से प्रहार करता है ! बांदी का प्रवेश]
......*सिपहसालार को हमारा हुक्म पहुंचा दो कि पचास* हजार चुनिन्दा सिपाहियों को जालौर कूच के लिए तैयार रखा जाय। उनके साथ गुलशन जायेगी। हमारी बांदी ही कन्हड़ देव को गिरफ्तार कर हमारे सामने पेश कर सकती है।......जाओ......[दासी का प्रस्थान]...... गुल...... पिला ! सा पिला मेरी साकी, पिला [दो घूंट पीकर मदहोश पलंग पर लुढ़क जाता है—गुल प्याला भर कर स्वयं पीती है।......परदा गिरता है।]

दूसरा दृश्य

[दिल्ली दरबार। मध्य में खाली तख्ते ताऊस-दायें बायें दो-पीठिकाओं पर सामन्त गण बैठे है।]

नेपथ्य— बा अदब, बामुलाहिजा, खबरदार होशियार, जिल्ले-इलाही शाहंशाहे हिन्दोस्तां तशरीफ ला रहे हैं।
[उपस्थित दरबारीगण गर्दन झुका कर खड़े हो जाते हैं— खिलजी का प्रवेश,—तख्ते ताऊस पर आसीन होना—सभी यथा स्थान बैठ जाते हैं।]

खिलजी : सिपहसालार नसरत खां ! जालौर ने हमारे दिलो दिमाग में तूफान पैदा कर दिया है। ३० दिन पूरे गुजर गये, हमारे ५० हजार बांके सिपाही अब तक कामयाब नहीं हो पाये ?

सिपहसालार : *गुस्ताखी माफ हो हुजूर ! फौज की कामयाबी सिपहसालार* पर रहती है। गुलशन बानो के नेतृत्व का ही नतीजा है कि इतना लम्बा समय हो गया।

खिलजी : नहीं नसरत खां ! जालौर को फतह करने के लिए हमारी *बांदी ही बहुत है ! कामयाबी तो है ही ! हम कन्हड़ देव को* सिर झुकाये हुए दरबार में हाजिर देखने को बेचैन हैं, बस।

[प्रहरी का प्रवेश]

प्रहरी : हुजूर रेहमत खां हवलदार जालौर मोर्चे से आये हैं। हुजूर की सेवा में हाजिर होना चाहते हैं।

खिलजी : हमारी मंशा पूरी हुई, रहमत हवलदार हमारी शानदार कामयाबी की खबर ले आया। सिपाही इजाजत दी जाती है।

[रहमत का प्रवेश, घायल अवस्था]

रहमत खां : हुजूर का इकबाल बुलन्द हो ! खुदा का कहर गिरा है हम पर।

खिलजी : कहां ? कैसा ? कहा ? क्या हमारी फौज कामयाब नहीं रही।

रहमत खां : [नतमस्तक] गुलशन बानों को दिल की बीमारी से खुदा ने उठा लिया।

खिलजी : हैं, क्या हमारी गुल चली गई ! या खुदा !······मगर फतह किसकी रही ?······

रहमत खां : हुजूर गुस्ताखी मुआफ हो।······ जालौर की फौजों ने हम से खुल कर युद्ध नहीं किया, बस अपना बचाव करते रहे और··· हमारी रसद के सभी मार्ग बन्द कर दिये गये। हम घेरा डाले २८ दिनों तक पड़े रहे······

खिलजी : लड़ने का बूता उनमें कहां है, सो अलाउद्दीन खिलजी की फौज से टकराते।········

रहमत खां : हुजूर ! जहांपनाह ! राजपूत औरतों पर हथियार नहीं उठाते हैं इसीलिए उन्होंने लड़ना नहीं चाहा। इसी बीच गुलशन बानों बीमार पड़ीं और पांचवें दिन दिल के दौरे से अल्लाह को प्यारी हुई। गुलशन के बेटे ने फौज सम्भाली और कनहर देव ने अचानक हम पर हमला कर दिया। एक-एक राजपूत हमारे पचास सिपाहियों के लिए भारी पड़ रहा था।

खिलजी : ओह राजपूत आन मर्यादा के लिए मर मिट जाते हैं। बड़ी हौसले मन्द कौम है।······मगर······फतह तो हमारी हुई न·········?

रहमत खां : [ऊंची सांस छोड़कर] हुजूर गुस्ताखी माफ हो–शाही फौज सामना नहीं कर सकी, तितर-बितर हो गई।

खिलजी : क्या कहता है—नामाकूल ?

नसरत खां : गलत ! [तलवार खींचकर] शाही फौज मात नहीं हुई। नामुमकिन ! गलत ! हमारे साथ कोई दगा हुआ है।

रहमत खां : हुजूर का नमक खाता हूं। गलत नहीं कहूंगा, जैसा मैंने देखा, वैसा ही कह रहा हूं। हमारी फौज तीन तरफ से घिरी हुई थी। जब राजपूतों ने पीछा करना चाहा तो कान्हड़ ने उन्हें हुक्म दिया कि जाने दो, भागते हुए लोगों पर हमला करना राजपूती मर्यादा के खिलाफ है......।

खिलजी : मर्यादा ! हूं ! यह बुरी खबरी देने तुम यहां हाजिर हुए हो... नामाकूल......

नसरत खां : [रहमत खां के पेट में तलवार घुसेड़ता है।] बुजदिल ! ले, इस बुरी खबरी का तोहफा......[बादशाह से] हुजूर !... नसरत खां जालौर की ईंट से ईंट बजा देगा। मैं जुम्मे के दिन फतह का डंका बजाकर मस्जिद की नमाज पढूंगा ! [जोश के साथ प्रस्थान]

खिलजी : [चिन्तामग्न] मगर यह नाकामयाबी हमारे जीवन का एक नासूर बन गई है। खिलजी को चुनौती देने वाला कान्हड़ देव वाकई बहादुर है। हौसला उसका गजब का है और गजब की है राजपूतों की नीति।..........मगर .....युद्ध हुआ कहां ? अब होगा युद्ध तो.........

[झटके से उठ कर प्रस्थान]

[पर्दा गिरता है]

पसन्द की सगाई

□

नूर हादिम जोधपुरी

प्रथम दृश्य

(मंच पर तीन कुर्सियां एक मेज के आस-पास रखी हुई हैं। एक तरफ दूसरी मेज रखी है जिस पर अखबार रखा है। एक कुर्सी पर मिसेज लोबो बैठी हुई है। मिसेज लोबो ने बेल-बॉटम सूट पहन रखा है।)

मिसेज लोबो : आया ! आया !

एक आवाज : जी आई मेम सा'ब

(हांफती हुई आया आती है। साधारण छपैल साड़ी पहने हुए है वह)

आया : जी मेम साहब

मिसेज लोबो : कहाँ गया था तुम आया ? चार बजने को है। साहब

ऑफिस से लौटता होगा। अभी तक तुमने चाय टेबुल पर नहीं लगाया।

आया : (घबराते हुए) मेम साब, मैं आपसे माफ़ी माँगती हूं। आज मुझे आने में कुछ देर हो गई। मैं अभी चाय लगा देती हूं।

मिसेज लोबो : तुम अक्सर ऐसे करता है। फिर कोई बहाना बना लेता है…

आया : जी नहीं मेम साब। आज मैं लड़का देखने गई थी। (गंभीरता से) मेम साहब आप तो जानती ही हैं कि मंजु अब बड़ी हो गई है और जमाना बहुत खराब है। बड़ी फ़िकर लगी थी। (खुश होकर) आज मंजु का बात रिश्ता पक्का कर आया है। लड़का मैस में बेयरा है मेम साब!

मिसेज लोबो : (खुशी और आश्चर्य से) अच्छा! मंजु का शादी पक्का कर लिया। बहुत अच्छा किया। खुशी की बात है।

(मोटर के रुकने की आवाज आती है)

आया : साब आ गये हैं। मैं चाय लगाती हूं।

(आया चली जाती है, मिसेज लोबो अखबार पढ़ने लगती है। मिस्टर लोबो आते हैं; चारकोल रंग का कीमती सूट पहने हैं)

मिस्टर लोबो : डार्लिंग आज चाय नहीं लगवाया अभी तक?

मिसेज लोबो : आज आया देर से आया था, डीयर। सुना, उसने मंजु का शादी पक्का कर दिया है। तुम तो बिल्कुल फिकर करता ही नहीं! कुछ तो फिकर करना ही होगा। (रुक कर) अपने ऑफिस में रोजी के लिए किसी के कान में बात डालो। उसके लिए कोई एक दिन में तो मैच मिल नहीं जायेगा और हां पेपर में भी एडवरटाईजमेंट कॉलम में नजर मार लिया करो डार्लिंग!

मिस्टर लोबो : डार्लिंग मेरे सेक्रेटरी ने एक पता बताया तो है। कोई कर्नल हैं। शायद पोलोग्राउण्ड के पास रहते हैं। ये देखो ये है उनका एड्रेस—कर्नल अब्राहम, ऐट स्माल पोलोग्राउण्ड। मैं सोचता हूं कल उनसे मिल आऊं। वैसे मैंने पेपर्स में एडवरटाईजमेंट भी भिजवा दिया है।

मिसेज लोबो : (खुशी से) यह तो बड़ी अच्छी खबर सुनाई तुमने। कल ही

हो आओ। कल तो आफिस का हाफ-डे भी है। एक बात प
जरूर ख्याल रखना, वह है काम्पलेक्शन ! काम्पलेक्श
फेयर नहीं हो तो बात करने से कोई फायदा नहीं। ज
काम्पलेक्शन रोनी का है वैसा ही होना चाहिये।

मिस्टर लोबो : तुम फिक्र मत करो डार्लिंग मैं मैच बिल्कुल ठीक ही देखूंगा
मुझे तुम्हारी पसन्द मालूम है।

(आया चाय की ट्रे लेकर आती है और मेज पर रख क
जाने लगती है)

मिसेज लोबो : आया

(आया रुक कर उनकी ओर मुड़ते हुए)

देखो रोनी के घूमने का वक्त हो गया है। उसके साथ तु
चली जाओ। उसका अकेले जाना ठीक नहीं है।

आया : बहुत अच्छा मेम साब।

(मिस्टर और मिसेज लोबो चाय पीने लगते हैं और परदा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(वही कमरा। मिस्टर और मिसेज लोबो बैठे हैं)

मिसेज लोबो : अच्छा डार्लिंग, आज तुम प्रिंसीपल के पास गया था, उसक
क्या हुआ ?

मिस्टर लोबो : हुआ क्या, ठीक जंचा नहीं। एक तो रंग ठीक नहीं है
ऊपर से प्रिंसीपल साहब की मिसेज के नखरे निराले हैं
कहते हैं कूपर अभी छोटा है (नकल करते हुए) उमर भ
क्या है। मेरा इरादा तो अभी कुछ और रुकने का है। (रु
कर) और फिर जो वो रकम चाहते हैं उसका भी मुझे
इशारा मिल गया है। (नफरत से) अजी मुझे तो बिल्कु
बेकार लगा उसका कूपर भी। हुं !

मिसेज लोबो : (गुस्से से) चूल्हे में जाये उसका कूपर ; बाहर में कोई कमी
नहीं। कुछ भी हो रोनी का मैच बहुत अच्छा होना चाहिये
तुमने मिस्टर दत्ता की डोरी का मैच देखा था न ? आज
देखो उसके कितने ब्युटीफुल बच्चे लॉन में खेलते हैं। हा
भी पैसा खर्च करेंगे लेकिन मैच किसी मतलब का तो हो।

मिस्टर लोबो : अभी मैच की क्या कमी है ! मैं आज ही सवेरे दूसरा मैच भी देखकर आया हूं।

मिसेज लोबो : (खुशी से उछलकर) अच्छा डार्लिंग कहां देखा दूसरा मैच ?

मिस्टर लोबो : प्रिंसीपल से कुछ ही दूर कर्नल खान रहते हैं। उनके रूपीस को देखो तो कहो कि वह रोनी के लिये ही पैदा हुआ है। साथ भी बहुत अच्छा है। बोलता है दो चाहो दो या कुछ भी मत दो। मुझे मंजूर है। जो कुछ हो रूपीस पर खर्च कर देना, हमें कुछ भी नहीं चाहिये। डार्लिंग एक नम्बर का जेण्टिलमेन है। मिसेज कर्नल ने तुमको भी चाय पर बुलाया है। चलो अच्छा होगा तुम भी रूपीस को आंखों से देख लोगी।

मिसेज लोबो : मेरे ख्याल से रोनी को भी साथ ले चलना चाहिये। अच्छा तो मैं अपनी ड्रेस का सेलेक्शन करती हूं। और चलने की तैयारी भी।

(मिसेज लोबो ड्रेसिंग रूम मे चली जाती है)

पर्दा गिरता है

तीसरा दृश्य

(एक फौजी अफसर का ड्राइंग रूम। कमरे में कर्नल और मिसेज खान बैठे है। मिसेज खान आधुनिक वेश-भूषा में है और काफी सुन्दर है)

मिसेज कर्नल : (घड़ी देखते हुए) सात बज चुके हैं। अभी तक लोबो साहब तशरीफ नहीं लाये।

कर्नल : आते ही होंगे बेगम। चाय तो लगा दी है न ?

मिसेज कर्नल : जी हां सब कुछ तैयार है। हां रूपीस कहां है ?

(बाहर कार के रुकने की आवाज और फिर कुत्ते के भौंकने की आवाज आती है)

मिसेज कर्नल : (खड़े होकर जाते हुए) लो वो आ गये है। मैं उनको अन्दर लाती हूं।

(मिस्टर और मिसेज लोबो अन्दर आते हैं, मिसेज लोबो तेजीस

(लोबो लेडीज प्रिन्टेड पेण्ट-सूट पहने हुए है।)

मिस्टर लोबो : गुड इवनिंग कर्नल।

कर्नल : गुड इवनिंग।

(सब बैठ जाते हैं)

मिसेज कर्नल : श्राया, श्राया।

एक श्रावाज : जी श्राई सरकार।

मिसेज कर्नल : चाय यहीं लगा दो श्रौर देखो रपीस को भी यहीं ले श्राश्रो।

श्रावाज : जो हुक्म सरकार।

मिस्टर लोबो : कर्नल साब, यह कोठी तो श्रापका श्रपना ही होगा?

कर्नल : जी हां हमने ही इसे बनवाया है।

मिस्टर लोबो : नाइस, नाइस।

(नौकरानी चाय लेकर श्राती है, चाय लगाकर चली जाती है।)

मिसेज कर्नल : मिसेज लोबो, क्या मैं श्रापका नाम जान सकती हूं?

मिसेज लोबो : जरूर श्रौर मुझे इस नाम से पुकार भी सकती हैं। मुझे वीरोनीका कहते हैं।

मिसेज कर्नल : बहुत श्रच्छा नाम है श्रापका।

मिसेज लोबो : श्रौर श्रापका नाम भी तो बताइये।

मिसेज कर्नल : मेरा नाम तबस्सुम है।

मिसेज लोबो : वेरी नाइस, जैसा नाम वैसी ही खूबसूरत हैं श्राप।

मिसेज कर्नल : शुक्रिया।

मिस्टर लोबो : देखिये कर्नल सा'ब, ये दोनों तो इस तरह बातें कर रही हैं जैसे बरसों पुरानी जान-पहचान हो।

कर्नल : यही तो खासियत है इन श्रौरतों में। मिनटों में घुल-मिल जाती हैं।

मिसेज कर्नल : तो इसमें बुरा क्या है।

मिसेज लोबो : हां याद श्राया, रपीस को तो दिखाश्रो।

मिस्टर लोबो : हां उसके बारे में तो श्राप दोनों में बातचीत हुई ही नहीं।

मिसेज लोबो : वही तो मैं कह रही हूं।

कर्नल : रपीस को हमने बड़े लाड़-प्यार से पाला है, मुश्किल से यह

एक महीने का था तभी तो हमें मिला था।

मिसेज लोबो : (घबरा कर) क्या कहा, मिला था ?

कर्नल : हां रुपीस का फादर गवर्नर-जनरल के यहां रहता था (मिसेज कर्नल से) क्यों ठीक है ना बेगम ?

मिसेज कर्नल : हां, हां इसमें क्या शक है, अब रुपीस के मदर की तारीफ हम करते हैं··· (लोबो दम्पति से) यह समझ लीजिये कि जहां तक खानदान का कुश्चन है रुपीस की मदर हिटलर की आंखों का तारा थी। बाद में इण्डिया से राजपूत लोग गये तो एक राजपूत उससे लव करने लगा और वह रुपीस की मदर को इण्डिया ले आया। फिर उसकी शादी गवर्नर-जनरल के रुपीस के फादर के साथ हो गया। रुपीस के फादर और मदर ने लव-मैरिज किया था।

मिसेज लोबो : अच्छा ?

मिसेज कर्नल : क्या रोनी भी आपके साथ आई है ?

मिसेज लोबो : वो तो कार में ही बैठी है।

मिसेज कर्नल : वाह उसे वहां अकेले में क्यों छोड़ आये ? यहां ले आना था। रुपीस के मैनर्स बहुत अच्छे हैं। कोई डरने की बात नहीं।

मिस्टर लोबो : अच्छा कर्नल साहब रुपीस को आप बुलाओ हम रोनी को लाते हैं (जाता है)।

मिसेज कर्नल : रुपीस, रुपीस कम हीयर।

(दुम हिलाता हुआ एक कुत्ता आता है। मिस्टर लोबो भी एक कुतिया के साथ आते हैं)

मिसेज लोबो : डार्लिंग बहुत अच्छा सैलेक्शन है तुम्हारा। एक्सीलेण्ट। अच्छा मिसेज तबस्सुम हम शादी की तारीख पक्की करते हैं और जल्दी ही शादी की तैयारी शुरू करते हैं।

मिसेज कर्नल : हां मेरी भी यही राय है, नेक काम में देर क्यों।

(परदा गिरता है)

मेवाड़ का भीष्म

◘

रमेश भारद्वाज

(पृष्ठ भूमि में गंभीर वाद्य ध्वनि होती है जो क्रमशः विलीन होती है)

पुरुष नैरेटर : अपने नैतिक गुणों के कारण भारत का संसार में विशेष स्थान है।

स्त्री नैरेटर : और अपनी वीर सन्तान के कारण राजस्थान का नाम भारत और भारत के बाहर भी गौरव से लिया जाता है।

पुरुष : अनेक सिसोदिया वीरों ने अपनी मस्तक-मणियों से राजस्थान के तीर्थराज चित्तौड़ के मुकुट को देदीप्यमान जो कर दिया है।

स्त्री : केवल पुरुषों ने ही नहीं स्त्रियों ने भी अपनी वीरता के अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

चौथा स्वर : अन्नदाता का यश विक्रमादित्य के यश के समान फैल रहा है।

महाराणा : यह सब आपकी गुण ग्राहकता है। अब आप हमें परामर्श दें जिससे कुछ जन-हित का कार्य किया जा सके।

प्रथम स्वर : अन्नदाता, इस समय कुए–बावड़ियों की, तालाबों की और सड़कों की मरम्मत करा लेनी चाहिये।

महाराणा : दीवान जी, उस बावड़ी का काम प्रारम्भ हो गया क्या ?

दीवान : उसका खुदना प्रारम्भ हो गया है, अन्नदाता।

महाराणा : एकलिंग जी और सलूंबर की ओर जाने वाले रास्ते ठीक हो रहे है या नहीं ?

दीवान : ठीक हो रहे हैं, अन्नदाता।

महाराणा : भीलों को मक्का बांटी जा रही है ?

दीवान : बराबर बांटी जा रही है अन्नदाता।

(मजदूरों का कोलाहल और भीलों द्वारा महाराणा जी की जयजयकार के शब्द श्रवण गोचर होते हैं)

महाराणा : रास्तों के किनारे धर्मशालायें बनवाने पर विचार कीजिये।

दीवान : जो हुक्म अन्नदाता।

महाराणा : गढ़ के परकोटे की मरम्मत भी इसी समय करा लीजिये। अभी अवकाश है (क्षणिक विराम) और पहाड़ के पत्थर भी इस तरह तुड़वा दीजिये कि पहाड़ खड़ी दीवार जैसा हो जाय। गढ़ में भी जो कुछ निर्माण कार्य कराना है करा लीजिये। अस्त्र-शस्त्र-संग्रह का भी ध्यान रखिये। शत्रुओं का कोई भरोसा नहीं। न जाने कब आ धमकें।

(नेपथ्य में पदचाप उभर कर विलीन होते हैं)

प्रतिहारी : घणी-घणी खम्मा अन्नदाता, मन्दोर से पुरोहित जी पधारे हैं। आज्ञा हो तो दरबार में हाजिर हों।

महाराणा : पुरोहित जी ? मन्दोर से ? क्या बात हो सकती है ?

(क्षणिक विराम) जाओ, पुरोहित जी को सादर लिवा लाओ)

प्रतिहारी : जो हुक्म।

महाराणा : मन्दोर से क्या समाचार लाये होंगे पुरोहित जी ? रणमलजी

तो शकुनम होगें।

एक स्वर : अन्नदाता अभी पुरोहित जी आ जाते हैं। सब समाचार मालूम हो जायेंगे।

महाराणा : उनके अचानक आने से कुछ शंका पैदा हो रही है।

दूसरा स्वर : अपने लोगों के प्रति कृपालु रहने का स्वभाव ही है अन्नदाता का।

(निकट आते हुए पद-चाप श्रवण गोचर होते हैं।)

पुरोहित : हिन्दुपति महाराणा की जय हो।

महाराणा : (उत्सुकतापूर्वक) कहिये पुरोहित जी, क्या समाचार लाये मण्डोर से ? सब कुशल मंगल तो है ?

पुरोहित : लाखा जी के राज्य में सब कुशल मंगल ही है। किसकी मौत आई है जो आपके कृपा पात्रों पर आंख उठाये ? आप तो भगवान राम के समान राज्य कर रहे हैं। छोटे-बड़े सभी सुखी और सन्तुष्ट हैं।

महाराणा : सब आपकी कृपा है। पुरोहित जी। राज्य तो आपका ही है, मैं तो सेवक हूं। आपके आशीर्वाद से ही मैं कुछ करने में समर्थ हूं।

पुरोहित : महाराज जी आप जितने वीर, कुशल शासक और नीतिज्ञ हैं उतने विनम्र भी। इसी से आपका यश उगते सूर्य के प्रकाश के समान बढ़ता जाता है।

महाराणा : यह सब आपका अनुग्रह है पुरोहित जी। आप थक गये होंगे, आपके विश्राम का प्रबन्ध कराइये दीवान जी।

दीवान : जो हुक्म अन्नदाता।

पुरोहित : महाराणा जी रणमल जी ने अपनी बहिन का सम्बन्ध करने के लिए श्रीफल भेजा है।

(स्मृति दृश्य)

नैरेशन : इस समय महाराणा को अपने विवाह का स्मरण हो आया। (शहनाई के स्वर उभर कर कुछ क्षणोपरान्त विलीन होते हैं फिर ढालों के स्वर उभर कर क्रमशः मन्द होते हैं)

एक स्वर : पधारिये, पधारिये।

तीसरा स्वर : इधर बैठिये श्रीमान् ।

समवेत स्वर : ॐ गणानान्त्वा गणपतिम् हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपतिम् हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रिय पतिम् हवामहे, वसो मम आसित्वम गर्भधम् ॥

ॐ ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकार भानु शशि भौम सुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ।

(शहनाई की ध्वनि के साथ दृश्य परिवर्तन)

महाराणा : (एक दीर्घ निश्वास लेकर) पुरोहित जी श्रीफल किसे भिलाने लाये हो ?

पुरोहित : कुंवर चूंडा जी को महाराणा जी ।

महाराणा : (सहास्य) ठीक, हमारे जैसे सफेद दाढी वालों के लिए श्रीफल कौन भेजता है ?

(कुछ ठहर कर)

आप बैठिये, चूड़ा जी को बुलवाते है । वे कहीं गये हुए हैं । दीवान जी चूंड़ा जी को बुलवाइये ।

दीवान : जो हुक्म अन्नदाता ।

महाराणा : पुरोहित जी आप मण्डोर से पधार रहे हैं । रास्ते में गावों की कैसी दशा मिली आपको ?

पुरोहित : सब आनन्द है, महाराणा जी ।

(दृश्य विभाजक संगीत)

पक्षियों का मधुर कलरव, वायु चलने की तथा वृक्षों की मर-मर ध्वनि ।

चूंड़ा : केसर, आजकल मन ठिकाने नहीं है क्या ?

केसर : क्यों कुंवर जी ?

चूंड़ा : आज कुछ सुनाते नहीं हो ।

केसर : हुक्म करो ।

चूंड़ा : अपनी इच्छा से ही कुछ सुनाओ ।

केसर : अच्छा कुंवर जी, रावत आलू का कवित्त सुनिये—
तीन लक्ख तोखार, सत्त सौ तीन तर्यासो ।

पांच सहस पायदल, करें ओलग सेवामी ॥
आदों नैर धर नरेश, माल मांडव उपावै ।
घर बैठा डर हत, भेंट गुज्जरह पठावै ॥
आठही पोहर आलू भये, नयण नींद कोय न करें ।
गहलोत गजा दच थामता, अवर राय ओमक मरें ।

समवेत स्वर : वाह, वाह केसर, एक बार और सुनाओ।

(केसर पुनः सुनाता है)

चूंडा : वाह केसर, वाह, यह कटार ले कभी काम आयेगी।

केसर : कुंवर जी कभी युद्ध होगा तो मैं भी युद्ध करूंगा।

चूंडा : केसर, युद्ध में खून की नदियां बहती हैं।

केसर : तो क्या हुआ कुंवर जी ?

चूंडा : वहां अच्छे-अच्छे घबड़ा कर भाग खड़े होते हैं।

केसर : आप यह क्या कहते हैं कुंवर जी ? आपका साथ है तो इतना भी साहस नहीं होगा ? युद्ध होने दो फिर देखना, कम से कम दस को नहीं मारूं तो मेरा नाम केसर नहीं।

चूंडा : शाबास केसर, मुझे यही आशा थी। चूंडा के साथी ऐसे ही होने चाहियें।

केसर : पर आजकल कोई महाराणा जी से लड़ता ही नहीं।

चूंडा : हां, अभी तो कोई नहीं लड़ रहा है, परन्तु हर समय तो यह दशा रहती नहीं।

(पद-चाप निकटकर आते श्रवण गोचर होते हैं)

केसर : कौन है ?

एक स्वर : कुंवर जी, आपको महाराणा जी ने याद किया है।

चूंडा : इस समय ? क्यों काका साहब क्या बात है ?

वही स्वर : रणमल जी ने श्रीफल भेजा है।

चूंडा : किसके लिए ?

वही स्वर : आपके लिए कुंवर जी।

केसर : रणमल जी कौन ? मण्डोर के राव ?

वही स्वर : हां।

चूंडा : ऊँह, अभी क्या जल्दी पड़ी है महाराणा जी को ?
केसर : आपको चाहे जल्दी नहीं हो, महाराणा जी को तो है।
चूँडा : क्यों ?
केसर : उनका कर्त्तव्य जो है।
चूँडा : उनका सबसे बड़ा कर्त्तव्य प्रजा की सेवा करना है।
केसर : अपनी सन्तान के लिए कौन चिन्तित नहीं रहता है कुँवरजी ? उन्होंने आपको सभी तरह से योग्य बना दिया है। अब इस कर्त्तव्य से और निवृत्त होना चाहते हैं।
वही स्वर : और जब कोई सम्बन्ध का प्रस्ताव भेजता ही है तो उसे अस्वीकार करने का अर्थ है भेजने वाले का अपमान करना।
केसर : रणमल वीर क्षत्रिय हैं। अच्छा वंश है। ऐसे सम्बन्ध लाभदायक होते हैं।
वही स्वर : केसर ने ठीक कहा है।
चूँडा : बस, रहने दो अपना उपदेश।
व. स्वर : तो पधारिये।
चूँडा : चलिये।
(चलने की ध्वनि)
व. स्वर : महाराणा जी भी खूब मजाक करते हैं।
चूँडा : क्यों क्या बात हुई ?
व. स्वर : मण्डोर के पुरोहित जी को कहने लगे, हमारे जैसे सफेद दाढ़ी वालों के लिए कौन श्रीफल भेजता है ? (हँसता है)
चूंडा : यह बात है।
व. स्वर : हाँ, सभी लोग खूब हँसे। लो, अब तो आ ही गये। महाराणा की जय।
महाराणा : चूँडा जी तुम्हारे सम्बन्ध के लिये श्रीफल आया है।
चूँडा : मुझे क्षमा करें, मैं तो इस श्रीफल को नहीं ले सकता।
(एक क्षण स्तब्धता)
महाराणा : (साश्चर्य) क्यों इसका परिणाम जानते हो ?
चूँडा : परिणाम चाहे जो हो।
महाराणा : परन्तु क्यों ? राठौड़ वीर और सच्चे राजपूत हैं।

चूंडा : क्षमा कीजिए, मुझे शादी के विषय में कुछ नहीं कहना है।

महाराणा : तो फिर इस श्रीफल को लौटा दें। जानते हो इसका अर्थ होगा रणमल जी का अपमान।

चूंडा : मैं श्रीफल लौटाने के लिए कब कह रहा हूं महाराणा जी!

महाराणा : तो फिर कैसे श्रीफल लिवाओगे पुरोहित जी।

चूंडा : श्रीफल नहीं लौटाने का यह अर्थ नहीं है महाराणा जी कि उसे मैं ग्रहण करूं।

महाराणा : (क्रोधपूर्वक) चूंडा, यह क्या तमाशा कर रखा है? श्रीफल लेना भी नहीं है और लौटाना भी नहीं है, तब फिर क्या होगा इसका?

चूंडा : क्षमा करिये, इसे आप ग्रहण कीजिये।

महाराणा : मैं? चूंडा होश में तो हो?

चूंडा : क्यों महाराणा जी?

महाराणा : इस अवस्था में मुझे विवाह करने को कह रहे हो? फिर रणमलजी की इच्छा यह रही होगी कि उनका भानजा चित्तौड़ का स्वामी बने, क्यों पुरोहित जी?

पुरोहित : अवश्य ही महाराणा जी।

चूंडा : आपने स्वयं यह सम्बन्ध चाहा है और मैं ऐसा कपूत नहीं कि आपकी इतनी सी इच्छा पूरी न होने दूं।

महाराणा : बेटा, हंसी की बात हंसी में गई।
(क्षणिक स्तब्धता)
लो बेटा, श्रीफल लो, रणमल जी पुराने सम्बन्धी हैं। ऐसे सम्बन्धों को अस्वीकार करने की बात सोची भी नहीं जा सकती है।

चूंडा : आप पिता और स्वामी हैं, आपकी सभी आज्ञाएं मानना मेरा धर्म है, परन्तु इस बात को मैं कैसे स्वीकार करूं?

महाराणा : बेटा, आज क्या हो रहा है तुम्हें?
(क्षणिक स्तब्धता)
चूंडा, सोच समझ लो, फिर तुम्हें चित्तौड़ की गद्दी नहीं मिलेगी।

पुरोहित : और चित्तौड़ की गद्दी छोड़ना कोई हँसी खेल नहीं है।

एक सरदार: चूँड़ा जी हँसी की बात को इतना तूल न दो। सम्बन्धियों के साथ हँसी—मज़ाक होती ही रहती है।

(नेपथ्य में तीव्र दृश्य विभाजक संगीत)

एक गंभीर स्वर : चूँड़ा ! चूँड़ा !!

चूँड़ा : कौन ?

: मैं, मुझे नहीं जानते ?

चूँड़ा : दिखते तो नहीं, पहचानूँ कैसे ?

: मैं हूं, तुम्हारा मन।

चूँड़ा : मेरे मन।

: हाँ, चित्तोड़ की गद्दी छोड रहे हो ?

चूँड़ा : हाँ, महाराणा जी की इच्छा तो पूरी हो। चित्तौड़ की गद्दी कोई सुख की शय्या तो है नहीं।

: फिर दास बन कर रहना होगा, झुक–झुक कर अभिवादन करना होगा।

चूँड़ा : व्यर्थ बात है, सोचा सो सोचा, राजपूत बात नहीं बदलते हैं।

दूसरा स्वर: शाबाश चूँड़ा, तुम वीर हो।

चूँड़ा : कौन ?

दूसरा स्वर : मैं हूं, तुम्हारा विवेक।

मन : सोच–समझ लो, फिर कुछ नहीं हो सकेगा।

विवेक : चूँड़ा, इस मिट्टी की देह का क्या, युग-युग की कीर्ति और स्वर्ग के सुख को मत छोड़ो। देवता बन जाओगे।

(तीव्र दृश्य विभाजक संगीत)

महाराणा : किस विचार में हो चूँड़ा ?

चूँड़ा : आपको भलीभांति विदित है कि सिसौदिया वचन नहीं फेरते।

पुरोहित : चूँड़ा जी चित्तौड़ की गद्दी कौन छोड़ता है ? फिर झगड़े होंगे। इससे अच्छा है कि अभी उसके बीज न बोये जायें।

चूँड़ा : पुरोहित जी, मैं एकलिंग जी की शपथ लेकर कहता हूं कि आजीवन चित्तौड़ की गद्दी का हक नहीं माँगूँगा।

महाराणा : (कड़क कर) चूँड़ा, जानते हो क्या कह रहे हो ?

चूंड़ा : (दृढ़ स्वर में) जानता हूं महाराणा जी जानता हूं।

पुरोहित : धन्य है चूंडा जी आपको, आपने अपना अधिकार छोड़ दिया है परन्तु आपकी सन्तान तो हक मांगेगी।

चूंड़ा : मैं जागीर लेकर सेवा करूँगा, वे भी सेवा करेंगे। वे कोई हक नहीं मांगेंगे। आप तो श्रीफल दीजिये।

महाराणा : (अवरुद्ध कण्ठ से) बेटा......!

(स्मृति दृश्य)

एक आर्तनाद : अन्याय, अन्याय।

दूसरा स्वर : (जोश से) दुनियां को दिखा दूंगा कि मैं हाथों में चूड़ियां नहीं पहने हूं।

तीसरा स्वर : अन्यायियों को मारो, पापियों को छोड़ो मत।

(कोलाहल और हुंकारें)

महाराणा : तुम कौन?

पहला स्वर : मैं चूंडावत हूं।

दूसरा स्वर : मैं चित्तौड़ की गद्दी का असली स्वामी हूं।

तीसरा स्वर : मैं वह हूं जिसका राज्य अन्यायपूर्वक दूसरे भोग रहे हैं।

कई स्वर : और हम भूखे मर रहे हैं, हमारे बच्चे भूखे नंगे हैं, हमारी बहू-बेटियां निर्वसन हैं। नहीं, नहीं; अब सहन नहीं होगा, हमारे साथ अन्याय हुआ है, अन्याय, अन्याय!

महाराणा : ओह! ओह!!

(मंदिर संगीत, दृश्य परिवर्तन)

महाराणा : चूंडा, चूंडा; मैं यह श्रीफल नहीं ले सकता। तुम्हारे साथ कितना अन्याय होगा!

चूंड़ा : महाराणा जी, मुख से निकले वचन और धनुष से छूटे तीर लौटते नहीं हैं।

महाराणा : (गद्‌गद कण्ठ से) बेटा, तुम सुपुत्र हो। मेरा आशीर्वाद है कि चित्तौड़ के राज्य में तुम्हारी जागीर सदा बनी रहेगी। तुम और तुम्हारे वंशज जिसे गद्दी पर बैठायेंगे वही चित्तौड़ का राणा होगा और तुम्हारे चिह्न बिना किसी को कोई पट्टा-

परवाना नहीं दिया जा सकेगा।

पुरोहित : महाराणा जी, श्रीफल लीजिये।

समवेत स्वर : चूंड़ा जी की जय।

(गंभीर वाद्य ध्वनि के साथ समाप्त)

उचन्ती

◘

प्रेम सक्सेना

पात्र :

रामसहाय
हामिद
बच्चा पप्पू

[समय : प्रातःकाल। दो-कमरा-मकान में रहने वाले मध्यम वर्गीय परिवार का मामूली-सा सजा हुआ ड्राइंग रूम। पर्दा उठते ही रामसहाय और हामिद बातें करते हुये प्रवेश करते है।]

रामसहाय : बैठिये, हामिद भाई। [दोनों आमने-सामने बैठते हैं, हामिद निश्चिन्तता के मूड में मूढ़े पर पीठ टिका कर और रामसहाय तत्परता व उठकर जाने की मुद्रा में आगे झुका हुआ-सा कुर्सी

पर] कहो क्या हाल-चाल है ? कैसी गुजर रही है ? वो आपका तो अखबार चलता था न ? आजकल क्या-कैसा चल रहा है ?

हामिद : बस-बस, यार। मैं तो राम, तुमने मेरी सारी हिस्ट्री ही पूछ ली। [हंसता हुआ] क्या बात है आजकल खुफिया विभाग में बदली हो गई है क्या ? खैर छोड़ो। [आगे को झुक कर] मैं एक खास काम से आया था। करो तो कहूं ?

रामसहाय : करने का होगा तो हाथ थोड़े ही खींचूंगा। पहले कभी मना किया है ? ['पापा–पापा' कहते हुए धड़ से नगा पप्पू प्रवेश करता है और हामिद को बैठा देख सकपका कर वापिस भाग जाता है। रामसहाय मुस्कुराता है, हामिद भी।]

हामिद : कितना प्यारा बच्चा है ! मस्त। कौनसा नम्बर है ?

रामसहाय : दो। [जोर से। भीतर की ओर मुंह करके] पप्पू बेटे क्या बात है ?

हामिद : आप देख आइये न ? कोई काम होगा······

रामसहाय : अभी आया। [उठकर अन्दर जाता है]

[हामिद कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाता है। कहीं नहीं टिकती। उठने को होता है कि रामसहाय लौटता है, कुर्सी पर बैठता है]

हामिद : राम भाई, तो मैं यह कह रहा था। तुम्हारा नया साहब आया न उसके कुछ फैक्ट्स चाहियें।

रामसहाय : फैक्ट्स ?

हामिद : हां, उसने कुछ कबाड़े किये हैं। शिकायत होने पर तबादला हुआ है। तुम्हें कुछ पता होगा ?

रामसहाय : [चिन्तित और सतर्क] अभी क्या कर पाया होगा इसने ? [टालते हुए] मुश्किल से दो ही महीने हुए हैं। अभी तो ··

हामिद : बस तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं करना, इन दो महीनों में जयपुर की जिन फर्मों को ठेके दिये हैं उनकी लिस्ट दे दो। बाकी सब कुछ मैं आप कर लूंगा।

रामसहाय : पर ······

हां, नौकरी तो जानी नहीं; आज नहीं तो कल बहाल हो जाना ही है। हां, याद आया वो दिगम्बर जी आजकल कहां है उनका......

हामिद : [अनसुना करते हुये] कोई चार्जशीट वगैरह तो नहीं दी अभी तक?

रामसहाय : नहीं, अभी कहां। वो......

हामिद : और आपका घर कितना बन गया? अब तो पूरा होने को होगा। [काल बैल बजती है] देखिये कोई बाहर है।

[रामसहाय उठकर बाहर जाता है। हामिद विचार मग्न बैठा रहता है, कोई हरकत नहीं करता। कुछ ही क्षणों में रामसहाय लौटता है, बैठने के बजाय खड़ा रहता है।]

हामिद : एक मिनट बैठिये। बस अब मैं भी चलूं गा। तो सहाय जी, कुछ भी पता नहीं लग सकता? अच्छा छोड़िये, मेरे उस आदमी को अपने दफ्तर में चपरासी रखवा दीजिये, बाकी काम मैं स्वयं कर लूंगा। [रामसहाय कुछ कहने को होता है, पर उसे मौका न देकर] मुझे मालूम है आपका साहब अपनी स्टैनों पर भरोसा करता है, और वह आपके इशारों पर नाचती है .....

रामसहाय : आपका सोचना गलत है। हकीकत यह नहीं है .....

हामिद : [उत्तेजित होकर] हकीकत? हकीकत यह है कि आप मुअत्तिल हैं। और मैं बताऊं आप मुअत्तिल क्यों हैं? ताकि आपका जो मकान बन रहा है उसकी आप देखभाल......

रामसहाय : [समझाते हुए] आपकी मर्जी है, आप ऐसा सोचते हैं। नहीं तो कौन सस्पेण्ड होकर अपना रिकार्ड खराब करवायेगा।

हामिद : खराब होगा? वह तो स्टैनो फाड़ देगी और आपका साहब और आप और वह स्टैनो सब गुलछर्रे उड़ायेंगे आपके नये मकान में [उत्तेजित होकर] और तब आप बहाल हो जायेंगे। हुंह, मकान बनाने के लिए छुट्टी नहीं सस्पैन्शन, [चिढ़ाते हुए] और कहते हैं फैक्ट्स मालूम नहीं। वह हाथ ही नहीं रखने देती। वह बाप तो क्या...... [उठ

खड़ा होता है] फैक्ट्स ! फैक्ट्स मैं बताता हूं। मुझ से [रामसहाय बैठे—बैठे उसकी ओर देखता भर रहता है] क्या छिपा है। ये रहे [कहता हुआ जेब से कुछ चित्र निकालता है। दिखाकर] ये रहे। हैं न फैक्ट्स [रामसहाय की आंखों के पास तक ले जाता है। रामसहाय अचकचाकर उठता है। हामिद समझता है कि वह फोटो शायद लेना चाहता है। फोटो वाला हाथ अपनी तरफ खींचकर, उसी टोन में] यही नहीं और भी हैं। वक्त आयेगा तब बताऊंगा। मैं भी अखबार नवीस हूं [धमकाते हुए] सबको ठीक कर दूंगा। सड़कों पर जब लोग थूकेंगे तब पता लगेगा कि मुफ्तखोर खाने का क्या मजा होता......

रामसहाय : [आश्वस्त, पर रिरियाते हुये से] हामिद साहब, आप तो खामख्वाह नाराज हो रहे हैं......

हामिद : वाह यह भी खूब रही। हम खामख्वाह नाराज हो रहे हैं। और ये अकेले डकार रहे हैं, देश की जड़ों को कत्था पिला रहे हैं और......

रामसहाय : हामिद भाई, सुनिये तो। आप जो......

हामिद : [और तैश में आकर] नहीं मुझे कुछ नहीं सुनना। अब आप ही सुन लेना जो अखबारों में छपे। एक-एक का पर्दाफाश कर दूंगा, आप लोग सड़कों पर नजर आयेंगे, और आपके ये मकान......

रामसहाय : [थोड़ा कड़ा रुख] ठीक है, हम सड़कों पर नजर आयेंगे, पर फिर आप कहां होंगे। अखबार किसके पास नहीं हैं, पेट तो सबके होता है, आखिर आप भी......

हामिद : पर आप दूसरों के पेट की परवाह कब करते हैं। एक चपरासी रखवाने के लिए कहा। दो टूक जवाब दे दिया......

रामसहाय : अब कहिये, कितने रखवा दूं। मैंने मना कब किया था। यही तो कहा था कि सस्पेंड हूं, दफ्तर नहीं जाता......

हामिद : [थोड़ा नरम पड़ते हुये] मुझे मेरे काम से मतलब है आप दफ्तर जायें, न जायें। आप समझ रहे थे आप झूठ बोलकर

दच......

रामसहाय : [किंचित दृढ़ स्वर में] देखिये, ये तो आप ज्यादती कर रहे हैं। मैंने तो आपसे आते ही पूछा था अखबार के क्या हाल-चाल हैं ? क्या सेवा करूं। आपने ही बात को पलट दिया था। बैठिये, बैठिये तो सही। [भीतर की तरफ मुंह करके] अरे भई, जरा चाय का पानी भिजवा देना, यह तो हमीद भाई की नाराजगी मे ठंडा हो गया। [दोनो बैठते हैं, रामसहाय कुर्सी के पीठ टिका कर निश्चिन्तता से और हमीद कुछ सोचता-सा घुटनों पर बल देकर] तो क्या सेवा करूं ? दो ?

हामिद : [आश्चर्य] दो ? दो से क्या होगा ? विशेषांक निकालना है। रजत जयन्ती वर्ष भी है। काफी खर्चा होगा। कम-वेशी नहीं; पूरे पांच की कमी पड़ रही है।

रामसहाय : पांच ? [सोचता सा] थोड़ा मुश्किल है......

हामिद : फिर रहने दीजिये (उठता हुआ) अच्छा मैं चला। और भी जगह जाना है......

रामसहाय : बैठिये, बैठिये [हाथ पकड़ कर बैठता है] आप तो नाराज हो गये : मेरा मतलब......

हामिद : मतलब क्या ? मैंने तो पहले ही ध्यान रखा है। आप पर भरोसा है, आप समर्थ हैं।

रामसहाय : (पस्त होकर) अच्छा तो [भीतर जाता है। हामिद फोटो निकालकर एक बार देखता है, फिर रख लेता है। तभी सुनाई देता है : 'आज का ताजा अखबार। भ्रष्टाचार का पर्दाफाश। नये अफसर के नये हथकंडे।' उठकर वह बाहर जाता है। अखबार पढ़ते हुये प्रवेश करता है। पढ़कर छिपाने को होता है कि रामसहाय प्रवेश करता है। हाथ का लिफाफा हामिद की ओर बढ़ाता है]

रामसहाय : क्या ताजी खबर है ?

हामिद : [लिफाफा लेकर जेब में रखते हुए व अखबार देते हुये] लीजिये, यह पढ़िये। हम तो घाटे में रह गये और आपकी स्टैनो गई बारह के भाव।

रामसहाय : घाटे में ? स्टैनो? [अखबार पढ़कर] सभी लपेटे में आ गये हैं।

हामिद : लपेटे में क्या यह तो भ्रष्टाचार का कच्चा चिट्ठा है। तुम्हारे साहब को समझाओ इसको भी कुछ भेंट कर दें। चुप हो जायेगा बेचारा।

रामसहाय : यह तो आगे की बात है, अभी इस खबर का क्या होगा?

हामिद : होगा क्या, अपना भी तो अखबार है। इसका तोड़ लीजिये आज शाम को ही। पर अपने साहब से कहिये कि रेट सबका बराबर रहे। [दोनों मुस्कराते हैं] अच्छा तो अब मैं चलता हूं। (उठता है। दोनों एक दूसरे को देखते हैं, बड़ी शिष्टता से नमस्ते करते हैं। हामिद जाता है।)

(पर्दा गिरता है)

विविध

हिमालय दर्शन (गंगोत्तरी)

राधाकृष्ण शास्त्री

यमुनोत्तरी दर्शन तो सन्निवेश ४ में कर चुके हैं अब गंगा के उद्गम स्थान का दर्शन कीजिये।

दिनांक ५ जून सन् १६४२ तदनुसार ज्येष्ठ कृष्णा ७ शुक्र संवत् १६६६ को प्रातः सब स्काउटों ने यमुनोत्तरी सूर्य कुंड में मलमल कर स्नान कर स्वस्थ मन हो पुनः तप्त कुंड मे चावल, आलू, खिचड़ी की पोटली बांध छोड़ दी, जो १० मिनट में पक कर तैयारी हो गये।

किसी ने नाश्ता किया, किसी ने यमुनोत्तरी का प्रसाद घर वालों को देंगे, कहकर पोटली बांधली।

यमुनोत्तरी के हिमाच्छादित गिरीशृंगों, तप्तजल के

हिमालय दर्शन (गंगोत्तरी)

राधाकृष्ण शास्त्री

यमुनोत्तरी दर्शन तो सन्निवेश ४ में कर चुके हैं अब गंगा के उद्गम स्थान का दर्शन कीजिये। दिनांक ५ जून सन् १९४२ तदनुसार ज्येष्ठ कृष्णा ७ शुक संवत् १९९९ को प्रातः सब स्काउटों ने यमुनोत्तरी सूर्य कुंड में मलमल कर स्नान कर स्वस्थ मन हो पुनः तप्त कुंड में चावल, आलू, खिचड़ी की पोटली बांध छोड़ दी, जो १० मिनट में पक कर तैयारी हो गये। किसी ने नाश्ता किया, किसी ने यमुनोत्तरी का प्रसाद घर वालों को देंगे, कहकर पोटली बांधली।

यमुनोत्तरी के हिमाच्छादित गिरीशृंगों, तप्तजल के

गोमी, और गुप्त-गुप्ता की शीतल धारा को हृदय से धारण कर प्राय प्रथम भाग पूर्ण कर आगे द्वितीय भाग गंगोत्री दर्शन हेतु उसी रास्ते से करीब २५ मील वापस सिमली चट्टी दि० ७-६-४२ को पहुंच रैन बसेरा किया। सिमली से एक रास्ता न्यूटिहरी को जाता है तथा दूसरा गंगोत्री को। यहां आने जाने वाले यात्रियों का एक जंक्शन सा होने के कारण जमघट था।

दि० ८-६-४२ सोम को प्रातः ४ मील दूर डांगल चट्टी पहुंचे। मार्ग कहीं चढ़ाव और कहीं उतार का है। एक साधारण दुकान और चारों ओर सघन जंगल है। एक पहाड़ी नाला है। मध्याह्न यहीं पर ठहरे। आगे ५ मील की कड़ी चढ़ाई मिली, मार्ग में नाना प्रकार के फूलों की शोभा देख फुलवारी की रमणीयता तथा सौरभ याद आई। सारे वन में सन्नाटा था। रास्ता पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया, यहां से ५ मील उत-राई उतर ३ मील आगे नगोट चट्टी पर आ रैन बसेरा किया।

यहां पंजाब सिन्ध क्षेत्र की ओर से सदावर्त मिलता है। यात्रियों के लिये धर्मशाला है। रात्रि में जहरीली मक्खियों ने काटा जिनसे सबके सूजन व खुजली हुई मगर घाव नहीं पड़े।

दि० ६ मंगल को चल ३ मील दूर नकोरी चट्टी पर आये। यहां सरकारी बंगला और एक ब्रह्मचारी जी का मंदिर है। यहां सर्व प्रथम भागीरथी के दर्शन हुये। आगे ६ मील चल उत्तरकाशी पहुंचे। गंगोत्री यहां से ६२ मील और टिहरी ३८ मील है।

उत्तरकाशी एक चौड़े मैदान में बसी हुई है। चारों तरफ मनोहर पहाड़ों की झांकी है। कुंडलाकार श्री गंगाजी की धारा बह रही है। यहां अनेक साधु-सन्त, त्यागी-महात्मा, भजनानन्दी निवास करते हैं। बाबा काली कमली वाले का और पंजाब सिन्ध क्षेत्र १२ मास खुले रहते हैं। यहां हर प्रकार की सुख-सामग्री प्राप्त है। वाराणसी की तरह ही यहां पर मणिकर्णिका घाट, श्री विश्वनाथ, काल भैरव, अन्नपूर्णा के मंदिर हैं। परशुराम जी तथा देवासुर संग्राम में छूटी हुई शक्ति के दर्शन हैं। ३००० फुट ऊंची एवं ५००० की आबादी वाले उत्तरकाशी के पहाड़ों में ५०० वर्ष की आयु के भी महात्मा निवास करते हैं। सुना गया है कि गुरु दत्ता-त्रेय तथा अश्वत्थामा जी के अब भी दर्शन होते हैं। जयपुर के महाराज

पंक्तिबद्ध देवदार वृक्षों से आच्छादित हिमालय की शिखरावली की मूक सुन्दरता गंगा के प्रवाह के कारण कहीं अधिक बढ़ गई, मानो चार चांद लगा दिये हैं। अनन्त प्रकार के वृक्ष, पौधे, लता, बेल, झाड़ी और झुरमुटों का यहां ऐसा अम्बार लगा है, जान पड़ता है वनस्पति जगत की सारी सम्पदा यहीं समुहित है। इस वन वैभव से पूरित हिमवान् का शृंगार भी देखने योग्य बन गया है।

मार्ग के दृश्य अवलोकन करते करते हम ४ मील गंगानती पहुंचे। पुल से २ फर्लांग ऊपर पाराशर आश्रम है। यहां पर गंधक के २ कुंड है। दोनों गर्म जल के हैं। कहते हैं पाराशर ऋषि ने तपस्या कर गंध मादन पर्वत से यहां पर खींचे थे। एक का नाम व्यास तथा दूसरे का वशिष्ठ कुंड है। इनमें स्नान करने से चर्म रोग सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं। यहां पीलीभीत के महाराजा की विशाल धर्मशाला है। ३ दुकानें तथा सदावर्त्त हैं। यद्यपि उक्त कुण्डों से गंगा का कोई सम्बन्ध नहीं था और यमुनोत्तरी की तरह गंधक के पहाड़ के जल प्रपात के कारण उनका निर्माण हो गया था तथापि तप्त कुंड होने के कारण तीर्थ बन गये हैं। कहते हैं किसी जमाने में भागीरथी का उद्गम यहीं से होता था। ज्यों-ज्यों बर्फ पिघलती गई, त्यों त्यों यह उद्गम पीछे हटता गया। गंगा स्नान का महत्व भी यहीं पर माना जाता था। ऊंचाई ६४०० फुट है। यहीं विश्राम किया। सर्दी नहीं थी।

दि० १४ रवि को प्रातः तप्त कुण्ड में स्नान कर स्वस्थ चित्त हो गंगा लहरी का स्तवन करते ४ मील दूर लोहारनाग चट्टी पहुंचे। चारों ओर बड़े बड़े ऊंचे पर्वत हैं, जिनका रंग लोहे के सामान है। मार्ग बहुत कठिन है। मार्ग में गंगाजी पर दो पुल आये। यहां एक धर्मशाला है। एक मील आगे सोन गंगा आई। पत्थर बहुत हैं। मार्ग उतार-चढ़ाव का है। गंगाजी की धारा बड़े जोर शोर से बह रही थी। आगे साढ़े तीन मील पर वन आया जिसमें अखरोट के बहुत पेड़ थे। दृश्य रमणीय व मन-मोहक था। मार्ग में २ पहाड़ी नाले दिखाई दिये। पहाड़ी नालों पर पुल नहीं थे। जल के तीव्र प्रवाह आघातों से बने चिकने पत्थरों के कारण राजमल, मोहनलाल और बाबूलाल फिसल गये। राजमल अगुवा था, चतुर था अतः शीघ्र ही सम्भल कर, उछल कर दूसरी ओर रास्ते पर जा कूदा, मगर

और ३ दुकानें हैं यहां पुलिस चौकी भी है। यहां पिछले कुली बदल कर नये रखे जा सकते हैं। भागीरथी के किनारे स्थित होने के कारण यहां विशेष ठंड थी। गर्म कपड़े पहनने ओढ़ने पर भी कंपकंपी छूट रही थी। यहां एक विचित्र बात देखी। हमारे साथ वाले पहाड़ी कुली ने अपना कमीज गोल किया लिया और एक साधारण-सी गूदड़ी अपर ओढ़ खुले बरामदे में बाहर सो गया। पूछने पर उसने कहा, 'अब तो जाड़ा कम हो गया है।'' यह सुन हम विस्मित हो गये।

दि० १३ शनि को प्रातः ढाई मील आगे एक पहाड़ी नाला आया यहीं से चढ़ाई शुरु हुई। ढाई मील आगे झाला चट्टी आई। पर्वतों के दृश्य मनोहर हैं। गंगाजी खूब चक्कर लगाकर आती है, दिशा का पता नहीं रहता, पेड़ों और फूलों की शोभा अनिर्वचनीय थी, वर्षा बरस रही थी तथा हम चल रहे थे। १ मील आगे सुक्की चट्टी आई। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था।

गंगोत्तरी के इस मार्ग में हमने गंगा के तेज प्रवाह के ऊपर झूलते लकड़ी के अनेक पुलों को पार किया। ये पुल गंगा के इस पार और उस पार दो-दो मोटे की रस्सों पर लिये मोटे के मोटे तारों पर झूलते रहते हैं, पुल पर लकड़ियों के पाटियों का पटाव था। फिर उनके हिलने ही जब यात्री की नजर नीचे गंगा के तेज प्रवाह पर पड़ती है तब 'राम नाम सत्य है' याद आ जाता है। गंगा यहां प्रवाह में नहीं, अपने कूल-किनारों पर रोष प्रकट करती हुई रुद्र रूप धारण किये चल रही थी। उनके कोप से कम्पित ये कूल-किनारे अपना स्थान-सा छोड़ते दृष्टिगोचर होते थे।

यहां मार्ग की बीहड़ता के साथ ही प्राकृतिक सौन्दर्य भी बढ़ चला था। चीड़ के वृक्षों के स्थान पर देवदार के वृक्ष आ गये थे जो चीड़ के पेड़ों से भी सुन्दर दिखाई देते थे। चीड़ के वृक्षों की हरीयाली हल्की होती है और देवदार के वृक्षों की गहरी। इनका फैलाव नीचे से ऊपर की ओर शनैः शनैः छोटा होता जाता है और अपनी पूर्ण ऊंचाई पर इनकी टहनियों का फैलाव कम होते-होते कलशनुमा हो जाता है, यहां तक कि अन्तिम ऊंचाई पर इनकी एक शाख नोक के सदृश हो जाती है। मेरे विचार से प्रकृति ने देवदार के वृक्ष को वनस्पति जगत में सबसे अधिक सौन्दर्य दिया है और सौन्दर्य की इस सर्व-श्रेष्ठता के कारण उसे 'वृक्षराज' कहें तो भी अनुपयुक्त नहीं होगा।

"बैठे हुये पुरुष को पातक सदा दबा लेता सत्वर,
उठ कर जो चल पड़ा उसी का भाग्य चल पड़ा है सत्वर,
चलते रहो सदैव जगत् में चलते रहो निरन्तर।

मैंने कहा "बालचरो ! अपना दृढ़ निश्चय, आशा और उत्साह से भरा हुआ ऊंचा मस्तक लिये-निश्चल गति लिये-प्राणों में मर मिटने की प्रबल आशा लिये जीवन-रथ पर बढ़ते रहो-किंचित भी विचलित न हो, आपकी अवश्य लक्ष्य पूर्ति होगी" मानव ने तो बढ़ना ही सीखा है अत. यह आशा आपको नव-जीवन-नव सम्बल देगी।"

यह सुनते ही तो सारे बालचरों ने बुझते दीपक मे तेल की तरह स्वस्थ हो, दूरस्थ निकट ऊंचाई पर स्थित ८००० फुट ऊंचे विद्यालय मे जा डेरा जमाया और सुक्खी की सुषमा निहारने लगे। यहा से हिमानी-शिखर दिख रहा था, जिसकी ऊंचाई १५-१६ हजार फुट थी। देवदार के वृक्षों की हरियाली से रक्षित सा यह हिमानी-शिखर स्फटिक के विशाल शिवलिंग के सदृश जान पड़ा। शिवरवाली का रूप भी जलहरी के माफिक जान पड़ा। बादलों के श्वेत दल इन शृंगों के इर्द-गिर्द विचरण कर रहे थे, मानो उनकी ऊंचाई नाप रहे हों। निर्मल नभ में ज्येष्ठ मास का चन्द्र तथा हिमानी-शिखर के नीचे बहता हुआ भागीरथी का प्रवाह। इस रमणीय संध्या के दृश्य को हम निरन्तर निर्निमेष दृष्टि से निहारते निहारते पड़े रहे।

दिनांक १५ सोम को दोपहर को चल झाला चट्टी पहुंचे। मार्ग कठिन था। आगे तीन और शिखरो के बीच मे काफी चौड़ा पाट दिखाई दिया। यहा एक ओर भागीरथी और बायी ओर से एक बड़ी धार गगा मे मिलती है। यह दृश्य बड़ा ही मनोरंजक था। यहां सेव के दरख्त अधिक सख्या में थे, यहाँ की सेव दूर दूर जाती है। हम लोगों ने भर पेट खाई। आगे ८१०० फुट ऊंचाई पर बसे हरसिल पहुंचे। बालचर कल ज्यादा थक गये थे, अतः यहां अच्छा स्थान देख रैन बसेरा करने का विचार किया।

यहा सेब के बगीचे, चारों ओर हिमाच्छादित पर्वत-मालाएँ, हरि गंगा तथा अन्य कई झरनों का गंगाजी में विलीन होना, ये सब नयनाभि-राम निराले दृश्य अकस्मात ही पर्यटकों के मन को मोह लेते हैं।

यहा देवदार की लकड़ी के बन्दे मकानों में भी खुदाई का काम था, तथा रंग भरा सुन्दर लगता था। हरसिल ऊन के व्यापार और ऊनी

मोहनलाल और बाबूलाल गिर पड़े और गुनगुनाने लगे। पीछे से झट बिकने पड़े की बात कह, भंवरलाल और रूपमल ने उन्हें उठा, पार कर ठह-ठहा कर हंसने लगे। मूलचन्द ने ऊर्ध्वगति और अधोगति के अन्तर की चर्चा छेड़ मुझ से समझाने को कहा। मैंने एक दार्शनिक विषय देख बताया "हम ऊर्ध्वगामी है और यह नाला अधोगामी। हमारी गति में दृढ़ता हैं और नाले की गति में तीव्रता। इसका अधोगमन हमें किसी नदी में मिला कर इसके अस्तित्व को मिटाने जा रहा है और हमारा ऊर्ध्वगमन हमें स्वतन्त्र और विजयी बनने की प्रेरणा दे रहा है।" यह सुन स्काउट हर्ष-मग्न हो, उत्साह एवं उल्लास भरे तेजी से चलने लगे।

मार्ग में दोनों ओर देवदार के वृक्षों की हरियाली से आच्छादित गिरिराज की शिखरावली और इसके मध्य में वेगवती भागीरथी की धवल-धारा एक अजीब शान से बहती भली प्रतीत होती है। जिधर देखो उधर चतुर्दिक् वन श्री विराज रही थी और उसमें भी भक्तिमयी भागीरथी का नाद मुखरित हो रहा था, उसके कारण इस अरण्य खण्ड का चप्पा-चप्पा मानो गायन कर रहा था ऐसा जान पड़ता। यात्रियों का समूह आगे बढ़ रहा था जहाँ से भागीरथी आ रही थी और भागीरथी उस ओर-जा रही थी जहाँ से यात्री आ रहे थे। दोनों भिन्न पथगामी थे, भिन्न लक्ष्योन्मुख थे किन्तु दोनों के उद्देश्य एक थे। यात्री कृतार्थ होने जा रहे थे और भागीरथी कृतार्थ करने निकली थी और कृत्य कृत्य होने जा रही थी।

रास्ते में हमें गंगोत्तरी के हिमानी शिखर दिखने लगे। अब हम ८७०० फुट की ऊँचाई पर चल रहे थे। आज की इस मंजिल ने हमको थका दिया था। हम लोग सीधे संकीर्ण रास्ते से पहाड़ की चोटी पर चढ़ रहे थे। पैरों में छाले पड़ने लगे, टांग जकड़ी हुई सी मालूम पड़ने लगी। बढ़ने २ जब, थक जाते और शिलाखंड पर बैठ जाते तो बैठते ही थकान और बढ़ जाती। आगे चलने को मन नहीं करता। शरीर पर श्रम का साम्राज्य था। प्यास से हमारे सबके कंठ सूख गये, मुकाम की प्रतीक्षा में आँखें पथरा गई। चलते २ पांवों ने जवाब दे दिया। सारे बालचर पसीने में लथ-पथ हो गये। पांच छः पग चलने पर ही बैठने लगे। दम फूल गया।

लक्ष्मीचंद ने लड़खड़ाते पैरों से चलते हुये कहा,

उपयोग कर हमने जीवन और जल के इस सम्बन्ध को निभाया तथा अधिक थक जाने के कारण अनमने मन हो, ८७०० फुट की ऊँचाई पर पड़े रहे।

दि० १७ बुध को प्रातः पानी के अभाव के कारण सिर्फ कुल्ले कर चल पड़े। आज हमारे मन एकाग्र थे, पग संयत थे, और पथ भी हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था। अब तो गंगोत्री जाकर ही सांस लेना है। शान्ति की एक लहर मन में दौड़ी जाती। फिर भी अपने संकल्प की सफलता और लक्ष्य की पूर्ति की यह अन्तिम मंजिल केवल साढ़े छः मील करीबन १६०० फुट ऊँचाई तै करनी थी। किन्तु इन सब विपरीत परिस्थिति में भी हमें न मार्ग का बोध था, न उसकी ऊँचाई का। केवल एक भावना में, मन की एक तन्मयतापूर्ण अवस्था में हम चल रहे थे कि शीघ्र चल सर्व सिद्धिदायिनी गंगा का दर्शन करें। इसी तन्मय अवस्था में, उल्लास, उमंग एवं उत्साह भरे छात्र स्वाध्य मत हो, गेंद की तरह उछलते, गुनगुनाते, गाते चल रहे थे।

"चलता जो वह मधु पाता है चलता हुआ सुफल चखता,
सूरज को देखो श्रम अविकल चलता हुआ न वह थकता।"

आज अपने गन्तव्य के सामीप्य से, लक्ष्य की निकटता के सुख से पुलकित हमारा मन एक उल्लास की सतह पर वह आनन्द-विभोर हो रहा था। इसलिये हमें न मार्ग की दुर्गमता का बोध होता न चढ़ाई का, ज्यों-ज्यों गंगोत्री की ओर अग्रसर होने लगे, त्यों २ एक अलौकिक आनन्द का अनुभव होने लगा। रास्ते में भव्य प्रवाह को निहारते, प्राकृतिक दृश्य को देखते २ पलक मारते ही बालचर आगे बढ़ गंगोत्री की मनहारी छटा देख "बुद्धि प्रकाशिनी गंगा मैया की जय" बोल उठे।

हम सुरसरि-तीर पहुंचे! मैंने गंगाजी को नमस्कार किया :

"नमामि गंगे तव पाद पकजं सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रुपम्।

मुक्ति च मुक्ति च ददासि नित्यं भवानुसारेणा सदमा नाराणाम्॥

कह आचमन किया और रवि-रश्मियों की आभा में भक्तिमयी भागीरथी के दिव्य रूप छटा-माधुर्य का रसपान करने लगे। अपनी सुकृत-संचित पूंजी-पाई की भांति दर्शन के प्यासे लालची लोचन दर्शन करते नहीं अघाते। कभी सुरसरि की विरवती धारों को देखते, कभी उनके चतुर्दिक छायी शिखरावली की रूप-सुधा पान करने लगते। जिस गंगोत्री के दर्शन की उत्कण्ठा

जाने के लिए प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश की सरकार का यहां एक फार्म है। कारण, सम्भवतः यहां [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] है। यह [illegible] प्रदेश, [illegible] से [illegible] हो सकता है। जिससे यहां के निवासी [illegible] [illegible] प्रमाण रूप से [illegible] रहते हैं। यह ऊन यहां की भेड़ों के अतिरिक्त तिब्बत की भेड़ों से भी प्राप्त होती है। तिब्बती भेड़ों के झुंड यहां हमें मिले। कुछ तिब्बती लोग भी मिले, जो यहां भेड़ों का तथा ऊन का व्यापार करते थे।

दि० १६ मार्च को [illegible] [illegible] [illegible] आगे [illegible] चले। रास्ता बड़ा रमणीक था। सारे रास्ते में उतार-चढ़ाव तथा घुमाव, जिसमें सारे पत्थर थे तथा मार्ग संकीर्ण था। जिसके एक ओर गगनचुम्बी शिखर और दूसरी ओर गंगा का अगाध गह्वर। कुछ स्थानों पर तो भागीरथी ने उत्तरकाशी को काटते-काटते मार्ग भी समेट लिया था। और इस खंडित मार्ग को लकड़ी के [illegible] २ लकड़ियों की सहायता [illegible] पाट कर पुनः चालू किया था। जब हमने नीचे उतरती, हिलोरें लेती भागीरथी के रव को सुना, तो सबकी जान सूख-सी गई। इस तरह हमें केवल भीषण एवं भयंकर चढ़ाई तथा कठिन मार्ग ही नहीं दुर्गम सीधी चढ़ाई का सामना भी करना पड़ा। यह अन्तिम चढ़ाई थी। सभी दुर्गमों से पूर्ण यह चढ़ाई शिर, मन और सभी पांवों को चूर और हिला देने वाली थी। जानकी चट्टी से यमुनोत्री मार्ग से यह मार्ग विशेष कष्टदायक तथा यात्री के मन को चूर-चूर कर देने वाला था। सब लोग पसीने में लथपथ थे, हम फूल गये थे। हम भैरव चट्टी पहुंचे।

डेढ़ मील पर नेलंग घाटी होकर मार्ग तिब्बत को जाता है। मार्ग बहुत मनोरंजक है। पूर्व दिशा से जाह्नवी गंगा आकर भागीरथी में मिलती है। जब दोनों धारा परस्पर मिलती है वह दृश्य भयभीत करने वाला है। मन और शरीर की अजीबो-गरीब अवस्था में हम चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते भैरव चट्टी आए तो ऐसा जान पड़ा मानो हमने एवरेस्ट विजय करली है। यहाँ भैरव जी का मन्दिर तथा बाबाजी की धर्मशाला है। सदावर्त है। रात्रि को ठण्ड अधिक पड़ती है। मार्ग का पहाड़ गंधक का होने से गर्म रहता है। यहां देवदार का सघन वन है। इस पहाड़ में महात्मा तपस्वी कुटी बनाते। पानी का अभाव था। अतः नपे-तुले नाप में इस अनमोल जल का यहाँ

अभी तक सब भूखे थे अतः निश्चित स्थल पर जा सबने भोजन किया एवं लेट लगाई।

मैं बारहों मास तपस्या में लीन साधु-महात्माओं के दर्शन करने कुछ जिज्ञासा करने तथा गोमुख जाने के लिए एक अच्छे पथ-प्रदर्शक की खोज हेतु निकल पड़ा। सौभाग्यवश नित्यानन्द जी नामक एक महर्षि से भेंट हुई, जो बारहों महीने गंगोत्तरी से १० मील दूर एक झोंपड़ी में रहते थे। उन्होंने गोमुख दिखाने की स्वीकृति दे दी।

रात्रि को आ विश्राम किया जहाँ बालचर अचेत पड़े थे।

दिनांक १८ जून वृहस्पति को प्रातः नित्य कर्म से निवृत हो, हम भ्रमण को निकले। समुद्र सतह से १०३०० फुट की ऊंचाई पर स्थित गंगोत्तरी एक सुन्दर स्थान है। गंगा के इस पार छोटी-छोटी दुकानों, कुछ धर्मशालाओं और मन्दिर मिलाकर एक छोटी-सी बस्ती बन गई है। गंगा के उस पार साधु-महात्मा निवास करते हैं जिनकी हरित गिरीशृंगों की तलहटी में कुटिया हैं। जिनकी भिक्षा का प्रबन्ध बाबा काली कमली वाले की तरफ से होता है। यहीं श्री व्यासदेव जी का योग निकेतन तथा स्वामी रामकृष्णाश्रम है।

पुरी से कुछ दूर नीचे केदार गंगा का संगम है और यहाँ से एक फर्लांग नीचे बड़ी ऊंचाई से गंगा शिवजी के लिंग पर गिरती हैं। पास में गौरीकुंड है। गौरी कुंड के आश्चर्य को देख हम स्तम्भित से रह गये और टकटकी लगाये देखते रहे। गौरीकुंड में गंगा का पूरा प्रवाह अत्यन्त वेग से गिरता है। यद्यपि गंगा की धारा एक ओर से ही आती है, मगर इस कुंड में धारा गिरते ही सारा प्रवाह अवरुद्ध हो कुंड की गोलाई के कारण गोल होकर तेजी से घूमने लगता है। प्रभाव के इस घुमाव के पश्चात् गौरी कुंड से फिर गंगा की धार आगे बढ़ती है। जिस समय हम दर्शन कर रहे थे, उस समय रवि-रश्मियों ने कुंड के नीर में एक पूरे इन्द्रधनुष की रचना कर रखी थी। गंगा के तीव्र प्रवाह, कुंड में उसके घुमाव और प्रवाह के प्रपात के कारण धूम के सदृश उड़ते हुए जल कण और इन्द्रधनुष ने इस कुंड को अनुपम शोभा प्रदान की थी। मैंने ऐसा अद्भुत एवं मनोहर दृश्य पहले कभी नहीं देखा। अतः कुछ देर अपलक नेत्रों से अवाक् हो हम इस दृश्य को देखते रहे। आज सिद्ध हुआ कि दैवी शक्तियाँ और प्राकृतिक

भी उसे देख कर हम कृतकृत्य हुए।

विश्राम के बाद गंगा के तीव्र प्रवाह के कारण किनारे पर ही हम लोग स्नान करने लगे। गंगा का शीतल जल स्पर्श होते ही ज्ञात हुआ कि मानो सारे शरीर में रक्त प्रवाह रुक गया है और मेरा शरीर मृत शरीर पाषाण का सा हो गया है। प्राण कहीं छुटके से बोल रहे थे और शरीर शून्य निर्जीव-सा देख, उसमें पुनः चेतना लौट न पा सकी। सब के निष्प्राण से निकल भागना चाहते थे। मुक्त-स्वर कंठ से महाराज जिनकी 'डोरी जल्दी करो' ऐसे शीघ्र ही शरीर को पोंछ गर्म चादर ओढ़ तथा श्रेष्ठ भाग की सहस्रांशु की पूर्ण प्रभा में अपने शरीर को तपाया, मगर तब भी शरीर गर्म नहीं हुआ। बालकों ने हर्ष-मग्न हो स्नान किया। यात्रीगण सब स्नान, पूजन में मग्न थे। कोई 'हर-हर-गंगे', कोई 'जै गंगा मैया की' कोई 'पाप हारिणी भागीरथी' कह रहा था। कई कागजों व भोज-पत्रों पर 'राम-राम' 'शिव-शिव' लिख भागीरथी में प्रवाहित कर रहे थे। कोई 'कृष्ण-कृष्ण' लिख बहाते थे और कहते थे 'अब प्रयाग में कालिन्दी मिले, देखेंगे।'

स्नानोपरान्त श्री गंगाजी के विशाल भव्य मंदिर में, जो जयपुर महाराजा का बनाया हुआ है, जिसमें ऊपर श्री गंगाजी, बीच में, नीचे लक्ष्मीजी, सरस्वतीजी, अन्नपूर्णाजी, जाह्नवी, यमुना, पार्वती की मूर्तियां हैं तथा महाराजा भागीरथ सम्मुख हाथ जोड़े हैं। यहां पूजा का सब सामान कंचन का है। षट्रूप पूजा कर स्तुति की

"देवी सुरेश्वरी भगवती गंगे त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे।
शंकर मौलि विहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पद कमले ॥१॥
रोगं शोकं तापं हर मे भगवति कुमति कलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥ २ ॥

हे देवि गंगे! आप देवों की ईश्वरी हो, हे भगवती! आप त्रिभुवन को तारने वाली, विमल और तरल तरंगमयी तथा शंकर के मस्तक पर विहार करने वाली हो। हे मातः! आपके चरण कमलों में मेरी मति लगी रहे ॥ १ ॥

हे भगवती! आप मेरे रोग, शोक, ताप, पाप और कुमति-कलाप को हर लो, आप त्रिभुवन की सार और वसुधा का हार हो, हे देवि! इस संसार में एक मात्र आप ही मेरी गति हो ॥ २ ॥

भागीरथी-का उद्‌गम, जो तुलना में एक छोटा-सा निर्झर ही प्रतीत होता था। वहां मन्दाकिनी का जल दो स्थानों से निकल कर करीब २ फर्लांग जाकर एकरूप हो जाता है और फिर मन्दाकिनी हमारी धरती की ओर प्रवाहित होती थी। उस शीतल जल मे मेरा स्नान करने का साहस न हुआ; पर फिर भी काक-स्नान करके ही विनोद-विहार करता रहा जबकि स्वामी जी ने सस्वर स्तवन कर स्नान किया। नित्यकर्म कर वे मुझे तीन मील आगे शिवलिंग शिखर एवं नन्दन वन तक ले गये। उस अनुपम अविस्मरणीय स्थल का वर्णन कर पाना मेरी लेखनी से असम्भव है। हिमानी शिखरों पर उगते हुये सूर्य की शोभा निराली थी, मानों सूर्य की किरणों ने हिमालय चोटी पर सप्तरंग की चूनरी ओढ़ाई हो और बर्फ पर हीरे, पन्ने, लाल, जवाहरात जड़ दिये हो।

मैंने दार्जिलिंग की सुषमा, नैसर्गिक सौन्दर्य देखा था। मगर वह गो-मुख के हिमानी शिखर के रत्न-जड़ित मुकुट धारण किये हुये रूप के सामने बहुत फीका है।

इस प्राकृतिक चतुर्मुखी दृश्य एवं रमणीय, मनोहर, नयनाभिराम निराली छटा को बहुत देर तक बैठे-बैठे देखते रहे। विचार आया कि एक कुटिया बनाकर यहीं पर भजन किया जाय, किन्तु हिमपात और अन्नमय जगत का ध्यान आते ही वहां से लौट स्वामीजी की गुफा पर आकर विश्राम किया। आगे चलकर वापिस गंगोत्तरी पहुंचे, जहां बालचर बैठे हंस, खेल वार्तालाप कर मेरी बाट जो रहे थे

दि. २० जून शनि को पुनः परम पावन गंगोत्तरी के स्वच्छ जल में स्नान कर, स्वामी जी को एक ऊनी पट्टू भेंट कर, आशीर्वाद ले, श्री गंगा जी के मन्दिर में आ "अन्नपूर्णे शंकर प्राण वल्लभे।

ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती॥

वन्दना कर, भेंट चढ़ा, गंगोत्तरी, गोमुख, शिवलिंग शिखर, नन्दनवन, आदि सुरम्य स्थलों की नैसर्गिक सुषमा हृदय में धारण कर, अपने द्वितीय की लक्ष्य विशेष पूर्ति जान ऋषिकेश को उन्मुख हुये।

परिणामों का सच्चा परिचय पुस्तकों या पुराणों में न जाकर उन्हें प्रत्यक्ष दर्शनों से मिलता है। निस्सन्देह धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टि से भारत में गंगोत्री का जो स्थान है, संसार में किसी भी देश में, किसी भी नदी का नहीं।

अनेक ऋषि-मुनि और महात्माओं के पहाड़ यहां हैं। यहां मगीरी ग्रन्थि पाई जाती है, जिससे गुग्गल बनाया जाता है। यहीं से यात्री वापस जाते हैं।

रमणीक दृश्य देखते-देखते महर्षि निगमानन्द जी, जिन्हें कवित्व की चढ़ाई समाप्त करते-करते वैराग्य के भाव उठे और संसार से विरक्त हो इस पथ के पथिक बन गये थे, आ गये। उन्हें देख, बालचरों ने साष्टांग प्रणाम किया। वे यहां बालचरों को देख बहुत प्रभावित हुये और कहने लगे—"जगमन, बालक न तो लौकिक होता है और न अलौकिक ही। नैतिक आचरण हमेशा नैतिक कृत्य करते रहने की प्रवृत्ति ही है और यह प्रवृत्ति सदाचारी, नैतिक शिक्षक के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।"

"आत्मा को महान् और सम्पन्न बनाना ही हमारे जीवन का पुनीत और सर्वोच्च उद्देश्य है। सच्चा सुख तथा पूर्ण शान्ति प्राप्त करने का यही एकमात्र सर्वोत्तम मार्ग है।"

श्री गंगा जी की मूल धारा यहां से १८ मील है, रास्ता ऊबड़-खाबड़, बीहड़, फिसलने वाला, कष्टमयी है। बर्फ का अमाव अपार है। अतः बालचरों का वहां पहुंचना खतरे से खाली नहीं है। यदि आप अकेले चलो तो गोमुख से आगे नन्दन वन दिखा दूं।"

मैं बालचरों को बड़े स्काउट राजमल और भंवरलाल की देखरेख में छोड़, हाथ में डंडा, छाता और बैटरी ले, गर्म वस्त्र पहन, महात्माजी के साथ हो गया। वे अपनी चुस्त एवं तेज चाल से शॉर्टकट पगडंडी द्वारा अपनी कुटिया होते हुये गोमुख से १ मील इधर बड़ी भारी चट्टान के नीचे बनाई ऋषि गुफा के समीप जा धमके। रात भर मोमबत्ती की रोशनी में मैं अचेत पड़ा रहा जबकि स्वामीजी भजन करते रहे।

दिनांक १६ जून शुक्र के भगवान भास्कर की रश्मि-दूतों के साथ-साथ हम लक्ष्य पर पहुंच गये।

मीलों लम्बी बर्फ की चट्टानों और उसके नीचे निकलती भगवती

बच्चा अपनी मा को न पाकर इधर-उधर गर्दन घुमा कर देखने लगता है। कभी वह पंख फड़फड़ाने लगता है। वह उसी तरह उड़कर चली गई। वह अपनी मां को चोंच खोलकर देखता रहा।

मैं लगातार कबूतरी और कबूतर का बच्चे के प्रति निश्छल प्यार देखती रही। कबूतर का बच्चा धीरे-धीरे सरक कर घोंसले के अन्दर की तरफ चला गया, कुछ तिनके उसके सामने झाड़ की तरह आ गये। कबूतरी बाहर से अपने चोंच में दाने को दबाये घोंसले मे आई। अपने बच्चे को न पाकर वह व्याकुल-सी इधर-उधर देखने लगी और अपने पंजों से कुछ तिनको को हटा कर वह अपने बच्चे को ढूंढ ही लेती है। मुझे लगा कबूतरीने दुनिया की सबसे बड़ी अमानत प्राप्त कर ली है। वह उसे बड़े प्यार से अपने पंखो में सहलाने लगी। अपना लाया हुआ दाना उसकी चोंच में बड़े प्यार से डालने लगी।

मैं अभी तक लगातार उसे देखे जा रही हू। मेरे हृदय मे अजीब तरह के भाव उठने लगे। इतने मे ही कबूतर अपने पंजों मे दबा कर कुछ तिनकों को लाया है, और बड़े प्यार से अपने बच्चे को देख रहा है। जैसे वह कह रहा है कि तू ही हमारी शाला है, और तू ही हमारे सुखों का संसार है। कबूतरी अपने बच्चे से बातें कर रही है।

मेरी आखें अपनी छोटी बच्ची अलका के प्रति प्यार से उमड़ने लगीं। मेरा हृदय स्नेह से भर गया। मैं धीरे-धीरे अपने पलंग से उठी, अलका को आंगन मे खेलती हुई को उठाकर छाती से लगा लिया कितनी ही देर तक इसी तरह प्यार भरी दृष्टि से अपनी बच्ची को देखती रही, प्यार करती रही।

मैं नहीं जानती कि मैंने जीवन मे अलका को अपनी छाती से इस ललक के साथ कभी लगाया। मेरी छाती से लगी हुई अलका टकटकी लगाये मुझे इस तरह देख रही थी जैसे मैं उसके लिए रोज वाली मां नहीं कुछ और हू। उसकी आंखो में अजीब सा उछाल था।

घर—घोंसला

सावित्री रोहतगी

पलंग पर लेटी हूं। कबूतरों के पंख की फड़फड़ाहट से घोंसले की तरफ देखती हूं। कबूतरी अपने बच्चे को उड़ाना सिखा रही है। बच्चा पंख फैलाता है, कबूतरी सहारा देती है, हट जाती है बच्चा गिर जाता है। कबूतरी अपने पंख इस पर फैला देती है।

मैं टक टकी लगाकर उसे देखती रहती हूं। कभी अपने घोंसले से उड़कर अपने बच्चे के लिये दाना लाती है। कभी कबूतरी अपने बच्चे के पास उड़कर आ जाती है और उसे दाना खिलाने लगती है। कभी वह उड़कर फिर दाना लेने चली जाती। इस बीच कबूतर का

व्याकुल पड़ी है ?

उक्त विचारों के साथ रेत के नीचे से अपना मुंह बाहर निकाल कर शंख ने देखा—सीपी खोई है या सोई है !

सीपी की श्वेत देहलता चांदी बरसा रही है, शख भी क्षण भर के लिए स्तम्भित हो उठा। मुग्धावस्था में शीघ्र ही वह पराई फूंक से बज उठा। शंख की ध्वनि सुनकर सीपी ने जम्हाई ली। चंचल चितवन एक पल के लिये फिर खुल गये।

शंख विस्मयी नेत्रों से देखता हुआ, कह उठा—पंचाग्नि के आतप से भी तुम अविचल हो ! मात्र एक बून्द की प्यास के लिये कब तक अपनी श्वेत कमनीय काया को यों तड़पाती रहोगी ? सागर पिता के पास कितना अथाह जल भरा पड़ा है, फिर भी तुम्हारी पिपासा शांत नहीं हो सकी ? तृषार्ता ने तुरन्त ही अपनी कष्ट कथा यों कह डाली-सिक्ता की कंटक शैया पर जो मेरी सेज है, पंचाग्नि के ग्रीष्म ताप से तिल भर भी इधर उधर नहीं हटी हूं। मेरे प्रियतम स्वाति नक्षत्र के शुभागमन की अभिलाषा लिये बैठी हूं, कब आवे स्वाति धन और कब मेरी इच्छा परिपूर्ण हो ?

शंख झूठे दम्भ से फिर बज उठा-वह (स्वाति धन) क्या इच्छा पूर्ण करेगा तेरी ? यदि तनिक भी संकेत मिल जाय तुम्हारा तो मैं पल भर में अपनी काया डुबो कर समुद्री जल से तुम्हें प्लावित कर सकता हूं एक ही नहीं अनेक बूंदों से तुम्हारी दीर्घ पिपासा पल भर में शांत की जा सकती है।

सीपी ने तत्काल कटाक्ष किया-नहीं ! नहीं !! मुझे तो स्वाति धन की एक बून्द की ही प्यास है, जिससे मैं अपनी पिपासा शांत करके तुम्हारे भ्राता (मुक्ता) को जन्म दे सकूँ, लेकिन पाथेय में कवि के शब्दों में तृषार्ता-सीपी, अपनी अभिलाषा यों व्यक्त करने लगी—

सिकता कीर्ति कण्टक-शय्या पर एक बूंद की आशा में,
आतप के पंचाग्नि ताप से डिगी नहीं हूं मैं तिल भर।
मेरे पुलक-स्वाति के धन हे पूरा कर मेरी अभिलाष,
अधिक नहीं बस, इस सीपी को एक बूंद की ही है प्यास॥

हवा तेज चलने लगी, समय ने पलटा खाया। ग्रीष्म की समुद्री

सीपी-शंख संवाद

विजयसिंह लोढ़ा

ग्रीष्म की लपलपाती लहरों ने किनारे के कगारों को स्पर्श किया। किनारे के कगारों पर रिक्त सिक्ता का ढ़ेर। ढेर पर ग्रीष्म के मध्यान्ह से तिलमिलाती सीपी ने अपने वक्ष को बाहर निकाला। बेखबर, अल्हड़, चंचल–चितवन मूंदे श्वेत देहलता धारण किये सीपी एक बून्द की आस लिये खयालों में खो गई।

बून्द···! वह भी एक...!! बस एक···!!! सागर पिता की गोदी में बैठी सीपी को भी प्यास लगी है विस्मय ··! क्या कुए की मेंढ़क को कभी प्यासा रहा है? फिर सीपी एक बून्द की प्यास लिए क्यों

संक्रमण

◆

विमला भटनागर

मेरी दीदी,

आप बड़ी खराब हैं, कितने आग्रह से मैंने आपको शादी में बुलाया था पर आप नहीं आईं। सच यदि आप आतीं तो बहुत खुश होती। मुझे भी आपको शीघ्र ही खत लिखने का समय नहीं मिल सका।

दीदी, मैं शोनू जैसा पति पाकर अत्यन्त खुश हूं। सच मानिये मेरे सपने साकार हो उठे हैं। शादी से पहिले मैं यह सोचा करती थी काश मुझे भी ऐसा पति मिले जो शोनू जैसा हो। शोनू को तो आप जानती

हवा जा टकराई हिम शिखरों से । लौटते समय स्वाति घन एक बूंद छोड़ गये सुहागों के मुख में । सीपी ने श्वेत स्फटिक देह से चमचमाते मुक्ता को जन्म दे दिया । शंख गाल फुलाकर फिर पराई फूंक से बज उठा । शंख की ध्वनि जब धीमी पड़ी तो सीपी ने भी चुटकी भरते हुए पूछ ही लिया—

विशाल सागर के विशाल पुत्र, मुक्ता के अग्रज, शशी की शीतल ज्योत्सना को सिर पर धारण करने वाले, लक्ष्मी-भ्राता तथा विष्णु भगवान के कर-कमलों की शोभा द्विगुणित करने वाले शंख तेरे हृदय के मध्य व्याधि रूप फोड़ा किस दुःख के कारण प्रकट हुआ है ?

शंख सहसा भावुक हो उठा । तनिक ठहर कर, मर्यादित वाणी में शंख ने अब की बार समझदारी से यह उत्तर दिया—

सागर पिता चाहे महान है, किन्तु उसका अथाह जल कोई नहीं पीता, मोती जैसा अनुज बिंधा जाता है । लक्ष्मी मेरी भगिनी एक घर नहीं टिकती तथा चन्द्रमा के मध्य कलंक है । इसी कलंक के कारण वह दूज के दिन लघु चन्द्र बन जाता है, इसी कारण दुःख को प्रकट करने हेतु देह के मध्य हृदय पर यही गिठान बन गई ।

बरसाती छमछमाती हवा ने सरगम दिया । घनघोर घटा, नगाड़े बजाने लगी । चंचल चपला नृत्य में मग्न हो गई । इसी बीच शंख का दुःख से द्रवित कवि हृदय यों गा उठा—

तात को नीर कोऊ नहीं पिवत । भाई मोती जात है बिंधत ॥
भागिनी लक्ष्मी है मेरी चंचल । चन्द्र के मध्य पड़्यो है कलंक ॥
शंख कहे है सीप सुनोरी । ऐही दुःख ते उर गंठ परी ॥

पास ही रेत के टीले पर बैठे कछुवे की युगल जोड़ी ने इस मूक वाणी को हृदयगंम कर लिया । मूक ज्ञानावसर का लाभ उठाते हुए कछुवे ने कछुवी से कहा—सीपी ने हमें एक अनमोल वाणी दी है, वह वाणी है—

हंसा तो मोती चुगे, या लंघन करि जाय ।

अर्थात् अल्पतम अच्छाई विलम्ब से भी ग्राह्य है । विस्तृत बुराई अविलम्ब से भी अग्राह्य है ।

कछुवी ने भी कछुवे से कहा—शंख चाहे पराई फूंक से बजता है । लेकिन एक ही पते की बात बता गया—परकातरता के गुण के कारण मनुष्य ही नहीं देवता के मन में स्थान पा लेना सुगम हो जाता है ।

मॉडर्न बनते हैं, लेकिन उनकी यह आधुनिकता उन्हीं तक सीमित है । वह कावेरी को भी छूट देते हैं लेकिन उसी सीमा तक जहाँ तक उनका स्वार्थ और अधिकार चोट न खाये । यह क्या आधुनिकता है ? यह तो 'पोज' करना है, नकली-पन है । शोनू इन दोहरी मान्यताओं से बहुत दूर है ।

दीदी, अब तो मैं कॉक्टेल पार्टीज में भी शामिल होने लगी हूं । सच मानिए बड़ा आनन्द आता है । ड्रिंक का भी अपना एक अलग ही सरूर है– न दीन का पता न दुनिया का । कभी-कभी तो रातें क्लब में ही कट जाती हैं–समय कब जाता है पता ही नहीं लगता ।

और सुनो मैंने अपने लम्बे बाल भी कटवा लिए हैं–सोसाइटी में यह बड़ा दकियानूसीपन लगता था । और आप जानो बदलती ड्रेसेज पर वह शोभा नहीं देते थे । यदि आप अब मुझे देखें तो पहचान भी नहीं सकेंगी । दीदी मेरी जिन्दगी को देखकर शायद आपको लगे कि यह अति है पर मुझे नहीं लगता । मैं सोचती हूं कि वक्त जो सामने आ रहा है, या जो है वह परिवर्तन का ही फल है; कपड़ों, शराब व बालों से किसी मौरेलिटी को बांधना क्या उचित है ? मैं तो यहां तक मानती हू कि औरत के शरीर को लेकर जिस नैतिकता को टकसाली सिक्के की तरह चलाया जाता रहा है वह सरासर गलत है । मैं अपने में पूर्ण हू पर उन लड़कियों के बारे में सोचिये जिन्हें 'वर्किंग गर्ल' कहते हैं; जिनको अपने व अपने घर के लिए कमाना पड़ता है । क्या पुराने ख्यालात व संस्कारों को लेकर कोई लडकी इस नये माहौल में जी सकती है ? नहीं ! दीदी, मैं शोनू को पा कर ऐसा महसूस करती हूं कि मैंने वास्तविक आधुनिक जीवन पा लिया है और जिस तरह की जिन्दगी जी रही हूं वह फालतू नैतिकताओं से मुक्त है ।

दीदी, आप भी मेरे पास कुछ दिन के लिए आ कर रहियेगा । शोनू बहुत खुश होगा । आप मेरे पत्र की सत्यता को अपनी आंखों से देख सकेंगी । हां, एक बात और है । मैं भी शोनू की लाइफ में बाधा नहीं बनती हूं । कभी-कभी तो मैं अपनी सोसाइटी में घूम करती हू, वह अपनी में । मन होता है तो हम दोनों एक साथ भी चले जाते हैं । मैं बहुत खुश हूं, बहुत खुश । आशा है पत्र पढ़कर आप भी खुश होंगी । अच्छा अब फिर

है न। यही महसूस तो [illegible] ठीक वह रहा करना था पति केरो अपने घर [illegible] में रहता था। परंतु ठीक वैसा ही है। वह यही पसन्द नहीं करता और वह तो साफ जानती है कि मैं भी यहाँ के साथ [illegible] थी। उसके घर में मैं किसी से भी यहाँ नहीं करती। पुरुष मित्रों की मुझे पूरी स्व-तंत्रता है और वैसे भी जानती हूँ रहती हूँ। घर के दूसरे व्यक्ति भी वहां शोनू भी मेरी तरह से बांधा नहीं करता। मुझे इस घर के व्यक्ति बड़े अच्छे लगते हैं। मेरे सास ही सबसे [illegible] एक [illegible] लिखवाता है—जानती हैं मैं इसे पढ़कर सुना जाऊंगी. सास यहां [illegible] की बड़ी-बड़ी पार्टी है। उन्होंने जिन्दगी से इन्कार किया है—दीदी, [illegible] बड़े ही अच्छे, [illegible] [illegible] पसन्द करती हैं। मेरे विचारों से बड़े प्रभावित हैं। अक्सर बैठे मुझसे बातें करते रहते हैं। यहां तक कि क्लब में अपने साथ लेकर डान्स करना भी उन्होंने ही सिखाया है मुझे, वरना आप तो भली प्रकार से जानती हैं कि मुझे डान्स पार्टी जाने का क्या मौका उठता था। पिताजी मना कहाँ जाने-आने देते थे। पर दीदी, पिताजी के नियमों को मैंने दिल से कभी नहीं माना। कभी-कभी मां, मेरी घूमने फिरने की बढ़ती इच्छा को देख कर यह देती थी, कि लड़कियों को बहुत मर कर रहना चाहिए, पता नहीं उन्हें कैसा ससुराल व कैसा पति मिले। साथ ही वह अपनी जिन्दगी के उदाहरण भी देती थी कि उन्होंने अपना समय कैसे गुजारा। उनकी इस तरह की बातें सुनकर मैं घबरा जाती थी। मैं जानती थी कि मां और पिताजी इतने पुराने ख्यालातों के हैं कि मुझे यह आजादी कभी नहीं देंगे कि मैं अपनी मरजी की शादी करूं।

मैं शादी से पहले सोचा करती थी कि यदि कोई पुराने ख्यालों वाला घर और पति मिल गया तो मैं अपने से ही तड़पकर घुट जाऊंगी। यह तो एक दुर्घटना समझिये कि शोनू वास्तव में मॉडर्न मान्यताओं को मानने वाला युवक निकला, वरना तो मेरी जिन्दगी के दो टुकड़े हो जाते। आप समझेंगी कि मैं शोनू की तारीफ सिर्फ इसलिए कर रही हूं कि वह मेरा पति है पर सच मानिये शोनू वाकई मॉडर्न है। मैं कावेरी के पति को भी जानती हूं। वह अपने आपको आधुनिक-विचारों वाला बताते हैं, पूरे

माँडर्न बनते हैं, लेकिन उनकी यह आधुनिकता उन्हीं तक सीमित है । वह कावेरी को भी छूट देते है लेकिन उसी सीमा तक जहाँ तक उनका स्वार्थ और अधिकार चोट न खाये । यह क्या आधुनिकता है ? यह तो 'पोज' करना है, नकली-पन है । शोनू इन दोहरी मान्यताओं से बहुत दूर है ।

दीदी, अब तो मैं कॉकटेल पार्टीज मे भी शामिल होने लगी हू । सच मानिए बडा आनन्द आता है । ड्रिंक का भी अपना एक अलग ही सरूर है– न दीन का पता न दुनिया का । कभी-कभी तो रातें क्लब मे ही कट जाती हैं–समय कब जाता है पता ही नही लगता ।

और सुनो मैंने अपने लम्बे बाल भी कटवा लिए हैं—सोसाइटी मे यह बड़ा दकियानूसीपन लगता था । और आप जानो बदलती ड्रैसेज पर वह शोभा नही देते थे । यदि आप अब मुझे देखें तो पहचान भी नहीसकेंगी । दीदी मेरी जिन्दगी को देखकर शायद आपको लगे कि यह अति है पर मुझे नही लगता । मैं सोचती हू कि वक्त जो सामने आ रहा है, या जो है वह परिवर्तन का ही फल है; कपडो, शराब व बालो से किसी मौरेलिटी को बांधना क्या उचित है ? मैं तो यहा तक मानती हू कि औरत के शरीर को लेकर जिस नैतिकता को टकसाली सिक्के की तरह चलाया जाता रहा है वह सरासर गलत है । मैं अपने मे पूर्ण हू पर उन लडकियो के बारे में सोचिये जिन्हें 'वर्किंग गर्ल' कहते हैं; जिनको अपने व अपने घर के लिए कमाना पड़ता है । क्या पुराने ख्यालात व संस्कारो को लेकर कोई लडकी इस नये माहौल मे जी सकती है ? नही ! दीदी, मैं शोनू को पा कर ऐसा महसूस करती हू कि मैंने वास्तविक आधुनिक जीवन पा लिया है और जिस तरह की जिन्दगी जी रही हूं वह फालतू नैतिकताओ से मुक्त है ।

दीदी, आप भी मेरे पास कुछ दिन के लिए आ कर रहियेगा । शोनू बहुत खुश होगा । आप मेरे पत्र की सत्यता को अपनी आखो से देख सकेंगी । हां, एक बात और है । मैं भी शोनू की लाइफ मे बाधा नही बनती हूं । कभी-कभी तो मैं अपनी सोसाइटी मे मूव करती हू, वह अपनी मे । मन होता है तो हम दोनों एक साथ भी चले जाते हैं । मैं बहुत खुश हूं, बहुत खुश । आशा है पत्र पढ़कर आप भी खुश होंगी । अच्छा अब फिर

कभी। अब बहुत समय हो गया है। मिस्टर सन्ना भी मुझे लिवाने आये हैं, बाहर उनकी कार का हॉर्न बज रहा है।

पत्र देंगी न ?

आपकी
सुरेखा

पत्र पढ़ कर सामने के कॉर्नर पर फ्रेम में मढ़ा उसका फोटू देखा : पहले तरीके का जीता जागता उदाहरण। लिफाफे से निकला फोटू देखा, आधुनिक पतंग सी उड़ती हुई। इतना बदलाव ! इसी बदलाव को जीवन में पाने के लिए शोनू जैसा पति चाहती थी ? तो क्या यह सच में खुश है सुरेखा ? हाथ का फोटू बोल उठा तो क्या यह झूठ लगता है आपको ? मैं मुस्करा कर उठ खड़ी हुई।

मुझे अपने कॉलेज की मिसेज याजनिक की याद आ गई जो पहले मिस डेविड थी। जब मिस्टर याजनिक डी. लिट की उपाधि लेकर वापिस आये थे तो वह उनके साथ आ गई थी। तब से वह बराबर मिस्टर याजनिक के साथ रहती हैं और अब तो वह मिसेज याजनिक कहलाने लगी हैं। जब वह यहां आई थी तो सुरेखा की ही कार्बन कॉपी थी। क्लबों में घूमना, ड्रिंक करना, फ्री घूमना-फिरना आदि। पर आजकल तो वह एक माह का अवकाश लेकर मिस्टर याजनिक के साथ हरिद्वार गई हुई है। कितनी सुन्दर साड़ी बाधने लगी है। साड़ी बाधने के लिए उन्होंने एक टीचर भी रखी थी पर हिन्दी वह अब भी टूटी-फूटी सी बोल पाती हैं। ना जाने कैसे वह रात रात भर का क्लब में रहना, कॉकटेल पार्टीज का अटेण्ड करना-मिस्टर मुखेजा को मुस्कान से मूर्ख बनाकर हजारों के तोहफे मंगवा लेना कैसे बदल गया सब कुछ। मिस डेविड यानि मिसेज याजनिक के इस बदलाव का अनुमान मैं उनके साथ कालेज में हुई बातचीत से ही लगा सकती हूं पर विश्वास के साथ तो नहीं कह सकती। वह अक्सर कहा करती थी, मैं इस 'ईट ड्रिंक एण्ड बी मैरी' की जिन्दगी को ऊपरी व खोखला फील करती हूं।'

मैं पूछती—'क्यो-मिसेज याजनिक ?'

वह कहती—'मैं आपको बताऊं जब मैं मिस थी और मिस्टर याजनिक भी उसी क्लब मे आते थे जहां मैं जाती थी उस समय मुझे ऐसा लगता था कि मेरी हालत उस डीलर की सी है जो अपनी दुकान के माल को इस तरह से सजाता है कि कस्टमर उसकी तरफ खिच कर आए। मेरे पास एक जिस्म था और ये अडॉप्ट किये गये हाव भाव जिनसे मैं दूसरो को अपने चारों तरफ चक्कर लगवाती थी। लेकिन जब भी मैं अकेले मे होती तो मुझे लगता मैं बिना मकसद के बह रही हूं। मुझ पर खर्च करने वाले या अपना कहने वालों मे वास्तव मे कोई भी अपना था? और मुझे लगता मैं उन सबके लिए सिगरेट या कार या शराब की तरह हूं—सिर्फ इस्तेमाल की चीज।

क्लब मे आने जाने वाले व्यक्तियों में मुझे मिस्टर याजनिक मे एक प्योरिटी नजर आई थी, और मुझे लगा था मैं उसी प्योरिटी की तलाश मे भटक रही थी।

'प्योरिटी से आपका क्या मतलब है मिसेज याजनिक?' मैंने पूछा था, क्योंकि उनके मुंह से 'पवित्रता' शब्द सुनकर आश्चर्य हुआ था।

वह बहुत ही गम्भीरता तथा अविकृत शान्ति के साथ बोली थी—यह क्लब, यह फैशन व शराब की जिन्दगी मे एक मादकता, तेज दौड़ की सैल्फ फोरगेट फुल नैस, रोमांटिक साहसिकता तो है पर तृप्ति नहीं है, वह शान्ति नही है। हर रात एक हगामा और शोर शराबा लिए बीत जाती और सुबह लगता मैं जैसे खाली हूं। मेरे अन्दर बहुत गहरे मे कोई चीज ऐसी थी, जिसे मैं आज 'सोल' कहती हू, जो अतृप्त और बेचैन रहती थी। मुझे लगता था मैं एक ऐसी नाव पर बैठी हूं जो कभी भी डूब सकती है।

मैंने कहा—मिसेज याजनिक यह आपका गलत ख्याल था। आप अपनी जिन्दगी के हर आराम को अपनी ही ताकत से तो प्राप्त कर रही थी।

वह हंसी थी। फिर उन्होंने मुझसे कहा था 'मिस सडोजा, आपने उस जिन्दगी को बिताया नहीं है इसलिए आप नहीं जान सकती कि वह ताकत कितनी कच्ची व कितनी खतरनाक थी। उसकी तह मे कुछ नहीं

था। मैं वास्तव में उन्हें नहीं छल रही थी बल्कि वह मुझे छल रहे थे। इसीलिए मैंने मिस्टर याज्ञिक से शादी कर ली। मुझे धीरे-धीरे वह महसूस होने लगा जिसमें एक घटना ही घातक था। इस जिन्दगी में सम्मान था, स्थायित्व था और उस दुनिया से बचाव था, जो हर सुबह मुझे बासी फिल्के की तरह निरर्थक एहसास से भर देता था। अब मुझे लगता है मैं अपने लिए हूं, मि० याज्ञिक के लिए हूं, इस घर के लिए हूं।

अब उनके घर में एक छोटा सा मन्दिर है लाड़-गोपाल, जिसमें बैठकर वह पूजा करती है — उनके माथे पर बिन्दी है गोरी कलाई में चूड़ी व पैरों में बिछुए। यहां तक कि उन्होंने मिस्टर याज्ञिक के दोस्तों से मिलना-जुलना भी बंद कर दिया है। अब तो वह मिस्टर याज्ञिक को समझाती है कि मत जाया करिये आप इन पार्टीज में। कहीं ऐसा न हो कि ये शराब, ये पार्टीज, यह मुस्काने, ये शबाब कहीं आपको मुझसे छीन न लें। उन्होंने सबके बीच में कहा है। अब वह मिस्टर याज्ञिक को छोड़कर कभी वापिस अपने देश नहीं जायेंगी क्योंकि वह होने वाले बच्चे की जिन्दगी को उस माहौल से बहुत दूर रखना चाहती है जिसमें उन्होंने अपनी जिन्दगी का कुछ हिस्सा गुजारा था। कभी वह उसकी छाया भी उस पर नहीं पड़ने देगीं। वह मां बनने वाली है न। वह इस जीवन से बहुत खुश हैं, बहुत सन्तुष्ट।

बड़ा ही पशोपेश है। एक सुरेखा है और दूसरी मिसेज याज्ञिक— दोनों में ही बदलाव है — वास्तव में कौन खुश, सुखी व सन्तुष्ट है सोच नहीं पाती तो क्या दोनों जीवन जी कर देखे जाएं? नहीं, नहीं मैं सोचती हूं, मैं मिसेज याज्ञिक नहीं बन सकती — कितना दकियानूसीपन है उनमें। तो क्या सुरेखा बन कर जी पाऊंगी? लगता है नहीं—मेरे कदम इधर भी नहीं बढ़ सकते। बड़ी उधेड़-बुन में हूं, कुछ तय नहीं कर पाती।

◆ ◆

डायरी के पन्ने

◆

योगेश चन्द्र जानी

दिनांक..................

बदले हुये परिवेश में जब अपने को देखता हूं, लगता है मैं टूट गया हूं। मेरे टूटने पर वे मुझ पर हंसा करते है। उनकी हंसी मे घृणा, उपेक्षा और व्यंग्य का पुट है। उनकी हसी मेरे लिए असह्य है क्योकि वे सब मेरे बराबर हैं।

दिनांक · ....

क्योंकि वे सब बराबर हैं, यह जानकर मैं आत्महीन हो गया हू। मेरा विकास अवरुद्ध हो गया है। मेरा अहम् मेरा विनाश कर रहा है। कितना

अच्छा होता उनकी हंसी से मेरा अहम् मर जाता।
दिनांक...............

लगता है मैं व्यस्त हूं—अपना कर्त्तव्य पूरा करने का बीड़ा उठाये घूम रहा हूं। घूमने का तात्पर्य है लोग मुझे अच्छा समझें, मेरी प्रशंसा करें। यह आडम्बर मुझे और गिरा देता है। उठकर देखता हूं अपने स्थान पर ही खड़ा हूं।
दिनांक ....

आज चर्चा हो रही थी—दर्द पीकर जीना ही जिन्दगी है। मैंने कहा मेरा दर्द पीजिये। सबका मुंह बन्द। कथनी और करनी मे इतना अन्तर ही शायद उन्हे दुखी करता रहा है।
दिनांक ....

वह कुर्सी पर बैठकर कितना प्रभावशाली हो गया है। सब उसकी बातें स्वीकार कर लेते हैं। मैं भी कुर्सी पर बैठकर प्रभावशाली बनूं—लोगों से अपनी बातें मनवाऊं।

आत्मा ने कहा—वह प्रभावशाली नहीं उसकी कुर्सी प्रभावशाली है। सच्चा प्रभावशाली व्यक्ति कुर्सी पर नही जमीन पर बैठता है।
दिनांक ....

मैं कांटे चुन-चुन कर फूलो को बिखेरा करता हूं किन्तु मुझे कांटे ही मिलते हैं। आत्मा कहती है, कांटे चुनना और फूल बिखेरना दोनों काम साथ-साथ नही हो सकते इसलिए तुम्हे कांटे ही मिलते हैं।
दिनांक ....

बीते दिनो की याद मे अपना 'आज' भी खराब कर रहा हूं। कितनी बड़ी प्रवंचना है कि मैं फिर भी जी रहा हूं।

◆ ◆

जब मोर्चे उखाड़े

◆

दयावती शर्मा

अनुभूतियों का संसार कितना विशाल, कितना विचित्र और कितना संवेदनशील है कोई जान नहीं पाता।

अभी चन्द दिन पहले जब फौजी आये तो एक आतंक छा गया था। लोगों में भगदड़ मच गई। भागे जा रहे थे, गरीब अमीर सभी। रह गये केवल सरकारी कर्मचारी।

उन दिनों का भयावह आतंक मन पर छा गया था। घरों पर मोर्चे बनाये जा रहे थे छतों पर तोपें फिट की गई थीं। फौजी घरों के ऊपर सिपाही की

तरफ दूरबीनें लिए खड़े रहते थे। बातचीत नहीं होती थी। ऊपर से नीचे उतरते समय बूटों की आवाज से पता चलता आने और जाने का। कोई भी समय नहीं था उनसे बातचीत करने का।

और तब एक रात तोपों की गड़गड़ाहट, अन्धेरी रात में बिजली की कौंध पैदा कर रही थी। नीले पीले प्रकाश के साथ जब धमाके की आवाज होती तो लगता गगनगर हिल रहा है।

ब्लेक आऊट, ऊपर से अन्धेरी रात। दीवारें तक नहीं दीख रही थी। घर कोई नही था। मैं और छोटा बेटा बबली, बस। बबली डर रहा था। "मा मेरे यहा हाथ धर ले।" हाथ धर लिया। खड़े रहे कमरे में। तभी विचार कौंधा: क्यो न बाहर चबूतरे पर खड़ा हुआ जाय। बच्चे का हाथ पकड़ा और बाहर आ गये। चबूतरे पर खड़े हो गये। फौजी सड़कों पर इधर-उधर आ-जा रहे थे। अचानक हमला हुआ था।

अंधेरे में खड़े-खड़े ठिठुर रहे थे। एक मिनट की राहत मिलते ही दूसरा धमाका। पांच मिनट तक वही थरथराहट। काश! लगातार दो घण्टे हो गये खड़े। तभी सड़क पर जाते फौजी भाई ने कह ही दिया, 'डरो मत बहिन हम किस लिए है?' कानो में शब्द टकराये। तब क्या हम डर रहे थे!

जवाब देने से पहले भाई आगे जा चुका था।

युद्ध विराम हो गया। चारो तरफ शान्त, नीरव वातावरण छा गया। कुछ ही दिनों मे आने वालों का ताता लग गया। बन्द घर खुलने लगे। एक दूसरे से पूछते, 'तुम कहीं गये थे?' 'नही,' और अपनी बहादुरी पर जैसे गर्व से कुछ कह रहे हो, ऐसा कुछ अजीब सा था उन दिनों।

पाच नम्बर शाला में बैठी थी, तभी दो-तीन फौजी आये। एक ने आगे बढ़कर कहा, "ब्लेक बोर्ड और चॉक पीस?"

'ब्लैक बोर्ड तो नही रोलअप है?' 'चलेगा।' दे दिया गया। 'थैंक यू' और स्नेहिल निगाहें। हृदय पर एक लकीर सी खिच गई।

अन्तः प्रेरणा या गुरु भक्ति ?

हीरा लम्पड टोंक 'ऐश'

पांच छ वर्ष पूर्व की बात है। बम्बई से परिवार सहित आ रहा था। थकान तथा लम्बी यात्रा के कारण शरीर के जोड़-जोड़ में दर्द का अनुभव कर रहा था। अजमेर आते ही मैं टहलने के विचार से प्लेटफार्म पर आकर चहल कदमी करने लगा। तभी एक नवयुवक आया और उसने मुझे नत-मस्तक होकर नमस्कार किया। मैंने उसे ऊपर उठाया लेकिन मैं उसे पहचान नहीं पा रहा था। मेरे ललाट पर पड़े बलों को शायद युवक ने भांप लिया था इस लिए बोला—गुरूजी! मैं हूं आपका रामदीन जिसे आपने

सन् १९५५ की मैट्रिक परीक्षा मे पूरे एक घण्टे बाद भी दाखिल करवा दिया था।

मुझे तुरंत वह घटना याद हो आई। रामदीन उस दिन रात देर तक पढ़ता रहा। न जाने पढ़ते-पढ़ते उसकी आंख कब लग गई। जब नींद खुली तो आठ बाज रहे थे। छात्र दौडा-दौडा भयभीत सा स्कूल आया। प्रधानाध्यापक जी के पैरो मे गिर पडा, लेकिन वे छात्र को बिल्कुल मना कर गये। मैंने प्रधानाध्यापक जी से उसी समय कुछ इस प्रकार से अनुनय विनय की कि वे राजी हो गये। न जाने कैसी अन्त: प्रेरणा थी जिसके वशीभूत होकर अन्जान छात्र रामदीन की मैंने पुत्रवत् सिफारिश की और वह परीक्षा मे बैठ गया।

बात ऐसी थी नही कि मस्तिष्क मे घर करती, और तो और, हाई-स्कूल परीक्षा परिणामो की घोषणा होने तक मेरा स्थानान्तरण भीलाभर से डीडवाना हो गया था।

नवयुवक रामदीन ने बताया कि वह अभी सी आर. पी हॉस्पिटल अजमेर में डाक्टर है और उस वर्ष हाईस्कूल परीक्षा १९५५ मे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ था। इसके बाद वह मुझे एक दो दिन अजमेर रुकने के लिए कहने लगा। मैंने पहले काफी मना किया, लेकिन उसके श्रद्धापूर्ण आग्रह एवं पद का ख्याल करते हुए अन्त मे उसका आतिथ्य स्वीकार कर लिया। रामदीन बात ही बात मे हमारा सामान अपने हाथो से बिना कुली की सहायता के जीप मे लगाकर हमे उसमे बिठा कर चल पडा— अपने बगले की ओर।

डा० रामदीन का बंगला वास्तव मे बडा सुन्दर था। बंगले मे पहुंचकर उसने अपनी पत्नी एव वृद्धा माता जी से मेरा परिचय कराया। मेरा भी सीना उस समय गर्व से फूल रहा था।

हम सब स्नान आदि करके चाय पीने लगे। तभी टेबिल पर पड़े फोन की घण्टी बज उठी। रामदीन रिसीवर रखकर अपनी पत्नी से "शारदा, गुरुजी का ध्यान रखना मैं लाडपुरा जा रहा हूं। अभी यहां

अजमेर से छूटने वाली ट्रेन दुर्घटना ग्रस्त हो गई है। मेरी आपत्कालीन नियुक्ति वहां की गई है।" हम सभी एक बारगी कांप गये।

मैंने कहा—'रामदीन तुम अपनी इसी जीप से जा रहे हो ना?' उसने जवाब दिया, "जी हां।" मैंने भी उसके साथ चलने की इच्छा जाहिर की। रामदीन को कोई आपत्ति नहीं थी। कोई पन्द्रह-बीस मिनिट में हम दुर्घटना स्थल पर पहुंच गये। रामदीन अपने कार्य में व्यस्त हो गया और मैं? मैं घूमता-घूमता रेल के डिब्बा नं० ७०३६ के पास पहुंचा जिसमें कि मैं परिवार सहित यात्रा कर रहा था। एक बारगी मेरी चीख निकल गई। उस डिब्बे के सभी यात्री मृत थे। एक-दो यात्री जो बच रहे थे उस समय मृत्यु से संघर्ष कर रहे थे। मेरे देखते-देखते दम तोड़ बैठे।

आज उस बात को पांच-छः वर्ष बीत गये हैं लेकिन मैं इस गुत्थी को नहीं सुलझा पा रहा हूं कि आखिर वह क्या रहस्य था? दूसरी बात यह कि आज भी जब उस घटना का स्मरण करता हूं तो कांप उठता हूं, क्योंकि अगर शिष्य रामदीन मुझे न रोकता तो परिवार सहित मृत्यु-प्राप्ति होती। शायद भगवान ने शिष्य रामदीन को अपने पर किये गये उपकार का बदला देने के लिए ही मुझे बचा लिया हो।

◆ ◆

भूला - भटका ज्ञान

◆

काशीलाल शर्मा

बात सन् १६५५ की है। मैं हुरड़ा तहसील के कोटड़ी गाव मे अध्यापक था। गर्मी के दिन थे और प्रात.काल का समय था। विद्यार्थी १२-०० बजे मध्यान्ह ही पाठशाला से मुक्त हो जाते। पूर्ण अवकाश होते ही अपने भोजनादि से निवृत्त होकर मेरी विश्राम करने की आदत थी, अत सो गया। करीब दो बजे की बात है। अचानक ही वहा के लम्बरदार, जो हमारे वहा पाठशाला के निकटस्थ साधना आश्रम मे ही रहते थे, हड़बड़ाये से आये और मुझे जगाया, कहा—"अपनी स्कूल का बच्चा तालाब मे

डूब गया है।" मैं घबरागया-सा उठा। देखता हूं कि तालाब में डूबे बच्चे के काका का लड़का फूट-फूट कर रो रहा है। हुआ ऐसा कि पाठशाला तालाब के किनारे ही थी और बच्चे मना करने पर भी गर्मी के कारण पूर्णावकाश के उपरान्त उसमें नहा रहे थे। मैंने उस रोते हुए बच्चे से पूछा कि कहीं तेरा भाई शौचादि के लिए तो नहीं गया है। इसका भी पता लगाया पर मिला नहीं। अतः यही सोचा गया कि बच्चा निश्चित रूप से तालाब में ही डूबा है।

इस समय सरपंच श्री रामचन्द्र जी चौधरी भी वहीं थे। हम दोनों ही साहस कर तालाब में घुस गये और आस-पास में डुबकियां लगाते हुए उस बालक की खोज करने लगे। आखिर तीन मिनिट बाद बच्चा पैंदे में मिल गया। बच्चे को बाहर निकाला गया। उसके मुंह से खून निकल रहा था और वह बेहोश था। हमने उसे मटके पर रख कर उसके मुंह से पानी निकालने का प्रयत्न किया, पर सौभाग्य से लगभग ८ मिनिट पानी में रहने पर भी उसके उदर में पानी नहीं पहुंचा था। वह पूर्णतया बेहोश था। मुझे कक्षा ६ में पढ़ी पुस्तक स्वास्थ्य विज्ञान का एक पाठ याद आया कि पानी में डूबे व आग से जले व्यक्ति को कम्बल से लपेट देना चाहिये।

लम्बरदार जी ने बड़ी निराशा से कहा – "मास्टर साहब यह तो मर गया है, अब आप क्यों तकलीफ करते हैं?"

मेरा उत्तर था, "मर तो गया ही है, हो सकता है मेरी पढ़ी बात को परमात्मा का सहारा मिले।"

हमने उसके गीले कपड़े उतारे तथा उसे कम्बल में और ज्यादा अच्छी तरह से लपेट दिया। लगभग १० मिनिट बाद मैंने कम्बल के अन्दर हाथ डाला तो आश्चर्य हुआ कि बच्चे को गर्मी आ गई है और उसके हृदय की धड़कन चल रही है। लम्बरदार जी को बताया तो वे बहुत खुश हुए। परमात्मा की इस असीम अनुकम्पा पर गद्‌गद हो गये। इस बात के ठीक दो मिनिट बाद बच्चे को दर्द का अनुभव होने लगा और उसने रोना प्रारम्भ कर दिया। उसकी लगी खरोंचों पर आवश्यक दवा लगाई गई। उसके परिवार वाले उसे घर ले गये और दूसरे दिन सुबह उसे पूरा होश आया। पांच रोज के बाद ही वह बच्चा पुनः शाला में अध्ययनार्थ आने लगा। मेरे जीवन का वह कारुणिक एवं सुखद अनुभव आज भी जब स्मृति में आता है तो मैं अपने उस पुस्तकीय ज्ञान तथा ईश्वर को एक साथ धन्यवाद दे उठता हूं।

◆

रोटी का टुकड़ा और अनुशासन

◆

हरिवल्लभ

मैंने अभी-अभी आकर प्रधानाध्यापक का कार्य-भार संभाला ही था कि अनेक महान जिम्मे-दारियों का भार मैं अनुभव करने लगा। छात्रों की सफाई समय पर उपस्थिति सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रूप-रेखा, अध्यापक साहबानों से कहना-सुनना आदि भार मैं वहन करने लगा। इस कर्तव्य पालन की चौकसी में सदैव सतर्क रहता था।

एक दिन छात्र मुन्नीराम कक्षा ७ विश्राम काल के पश्चात् विलम्ब से कक्षा में उपस्थित हुआ। अपनी आज्ञा की अवहेलना समझ मैं उस पर बेंत लेकर पिल

गया। अधिकतर छात्र सुखीराम तिलमिला गया और पीला पड़ा। ज्योंहि उसने पीड़ा के कारण मुंह मोड़ा खून की बूंदें कक्षा के फर्श पर गिर गयी।

मैं विस्मित खड़ा सोचता रहा कि शायद बालक के चेहरे पर चोट के कारण नाक से खून निकला है परन्तु ज्योंहि उसका मुंह खुलवाकर देखा तो उसके हिले हुए जबड़ों में से निरन्तर खून बह रहा था।

छात्र को सांत्वना देकर कारण पूछा तो सुखीराम ने मेरी ओर बड़ ज्वार की मोटी, सूखी, कठोर बदबूदार एवं जली हुई रोटी का शेष अंश आगे कर दिया और फूट-फूट कर रोने लगा और रोते हुए कहा—'मैं विद्यालय के बाहर मैदान में ही बैठा हुआ रोटी को चबा रहा था। यह रोटी मैंने रात को ही सेक कर रखदी थी क्योंकि माता एक माह से रुग्ण है। एक माह से ऐसे ही चल रहा है। सारे जबड़े छिल गये है। दर्द होने के कारण मैं रोटी को बहुत धीरे-धीरे खा पाता हूं और देर हो जाती है। मुझे क्षमा करें अब मैं कभी देर से नहीं उपस्थित होऊंगा और भोजन भी कम कर दूंगा ताकि विद्यालय का नियम भी नहीं टूटेगा। आज के विलम्ब का प्रायश्चित यही है कि मैं आठवें कालांश तक प्यास रोकूंगा।"

छात्र सुखीराम की विद्या के प्रति अटूट श्रद्धा एवं उसका दृढ निश्चय देख मेरा मानस। हिल उठा और छात्र के अन्तर में छिपी ज्ञान ज्योति के आगे मेरा मस्तक नत हो गया।

छात्र सुखीराम इतने अभावपूर्ण जीवन के होते हुए भी कक्षा का सबसे मेधावी छात्र है और प्रत्येक विषय का गृहकार्य विधिवार स्पष्टता से करता है। समस्त विद्यालय परिवार का वह स्नेह भाजन है। मैं जब भी जीवन में आयी कठिनाइयों के सामने समर्पण करने को होता हूं तो छात्र का वही रोटी का टुकड़ा और रक्त रंजित मुख तथा उसकी वेदना के शब्दों से ही पुनः उत्साह प्राप्त कर लेता हूं और फिर नवीन चेतना से कार्य में अग्रसर होता हूं। मैं उस चेतना पुंज को कैसे भूलूं।

◆ ◆

दो मन्दिर

◆

द्वारकेश भारद्वाज

प्रथम मन्दिर—

एक शिल्पी ने एक मंदिर बनाया,
उसने पूर्ण चतुराई और कुशलता
से मेहराबों, स्तम्भों एवं तोरणों का निर्माण किया,
सारा निर्माण उसकी अभिलाषा के अनुरूप हुआ;
और जब लोगों ने उसकी सुन्दरता को देखा
तो कहा
"यह कभी नष्ट नहीं होगा,
ओ शिल्पी, तेरी कुशलता महान् है
तेरी प्रसिद्धि अमर है।"

द्वितीय मंदिर—

एक शिक्षक ने एक मंदिर बनाया,
उसने पूर्ण सतर्कता व कुशलता से निर्माण किया,
प्रत्येक स्तम्भ को को पूर्ण धैर्य से निर्मित किया,
प्रत्येक प्रस्तर को पूर्ण सावधानी से रक्खा;
किसी ने भी उसके निरंतर प्रयास को नहीं देखा।
शिक्षक द्वारा निर्मित यह मंदिर मानव के नेत्रों
द्वारा अदृश्य था।
शिल्पी द्वारा निर्मित मंदिर धूल धूसरित हो गया,
मेहरावें, स्तम्भ व तोरण काल कवलित हो गये;
लेकिन शिक्षक द्वारा निर्मित मंदिर शताब्दियों
तक अक्षुण्ण बना रहेगा।
क्योंकि
वह सुन्दरतम व अदृश्य मंदिर
बालक की अमर आत्मा थी।

इस पुस्तक के लेखक

चोथमल ओझा, रा मा वि, हमीरगढ़ (भीलवाड़ा)
गोवर्धन लाल पुरोहित, रा. उ. मा. वि., मांडल
श्रीनन्दन चतुर्वेदी १४/३११ बजाजखाना पंडापाड़ा, डाकोसाड़ा कोटा-६
देव प्रकाश कौशिक, गांधी विद्यालय, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)
जगदीश चन्द्र शर्मा, रा उ. मा. वि. सिंगुड़, (उदयपुर)
हुलासचंद जोशी, रा मा वि., बिग्गा (चूरू)
गौरीशंकर आर्य रा. उ. मा. वि., गंगधार (झालावाड़)
श्याम सुन्दर शर्मा रा. मा वि पूनासर (चूरू)
डॉ. रामानन्द सत्यनारायण चौक नया शहर, बीकानेर
वासुदेव चतुर्वेदी, रा. उ. मा. वि. छोटी सादड़ी
भवरसिंह, रा. उ. प्रा. वि., नांद (अजमेर)
मुरारीलाल कटारिया 'मौजी', प्रा. वि. सिंधी सराय कायस्थान, कोटा
आनन्दराज श्रीराजपुरोहित, रा. फोर्ट उ. मा. वि., बीकानेर
नूर हामिद जोधपुरी, रा. मा. वि., पचपदरानगर (बाड़मेर)
रमेश भारद्वाज, रा. उ. मा. वि. श्रीनगर (अजमेर)
प्रेम सक्सेना, १०, रतनबाई क्वार्टर, बीकानेर
राधाकृष्ण शास्त्री खाचरियावास (सीकर)
सावित्री रोहतगी, रा. बोथरा बालिका उ. प्रा. वि., भीनासर
विजयसिंह लोढा, रा. उ. मा. वि. प्रतापगढ़
विमला भटनागर, रा. महारानी बालिका उ. मा. वि., बीकानेर
योगेशचन्द्र जानी, रा. उ. प्रा. वि. कुल्थाना (चित्तौड़गढ़)
दयावती शर्मा, प्र. अ., रा बालिका उ. प्रा. वि., पुरानी बस्ती, श्रीगंगानगर
छीपा तय्यब टाक 'ऐश', रा. प्रा. वि. न० २, कुचामनसिटी, (नागौर)
काशीलाल शर्मा, रा मा. वि., रूपाहेली
हरिवल्लभ, रा उ. प्रा. वि. कुबेड़ (कोटा)
द्वारकेश भारद्वाज, ई-६, गांधीनगर जयपुर